बरिस 8 अंक 29

www.sirijan.com

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

जनवरी-मार्च 2026

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका
सिरिजन (अंक 29: जनवरी-मार्च 2026)

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	नरसिंह तिवारी , (दिल्ली)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
	:	
उप सम्पादक	:	तारकेश्वर राय
कार्यकारी सम्पादक	:	संजय कुमार मिश्र
सलाहकार सम्पादक	:	राजीव उपाध्याय
सह सम्पादक	:	1. भावेश अंजन
		2. अमरेन्द्र कुमार सिंह
		3. माया चौबे
		4. गणेश नाथ तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	ज्वाला सिंह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	1.अरविंद सिंह, 2. मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	:	दीपक कुमार सिंह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारिखण्ड)	:	राठौर नितान्त
	:	
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	बिनोद गिरी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

मुखपृष्ठ के चित्रकार - श्री अंतरिक्ष

अनुक्रम

संपादकीय

- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 5

आपन बात

- आपन बात - तारकेश्वर राय / 8

कनखी

- डॉ. अनिल चौबे /14

अंउजा पथार

- आन लाइन शापिंग -बिनोद सिंह गहरवार / 26

धारावाहिक

- श्रीमद्भगवद्गीता (भोजपुरी)- कृष्ण मुरारी राय/ 15

कविता/गीत/ गजल

- भोजपुरी ग़ज़ल - सुरेश गुप्ता /25
- प्यार चाहेला समर्पन - माया शर्मा / 33
- जवना सुर में तू ना बाड़ऽ - डॉ मधुबाला सिन्हा / 34
- दाढ़ी बनाम मूँछ - राम प्रसाद दुबे "राम " / 35
- जवाब मत माँगीं - डॉ अनिल कुमार दुबे "अंशु"/ 36
- नाम लिख जालें - डॉ अनिल कुमार दुबे "अंशु"/ 36
- दिल के पटल के खोल के - डॉ अनिल कुमार दुबे "अंशु"/37
- खेती किसानी के जिनगी - इन्द्र कुमार दीक्षित / 41
- हमहूँ गीत लिखब - डॉ. ब्रजभूषण मिश्रा / 46
- फँस गइल नाक बा - डॉ. ब्रजभूषण मिश्रा / 46
- लोर भरल बा - विद्या शंकर विद्यार्थी / 47
- रात दिन घमसान भइल बा - विद्या शंकर विद्यार्थी / 47
- पीर लिहले बानीं - विद्या शंकर विद्यार्थी / 48
- पूष महीना बड़ा बेदर्दी - राकेश कुमार पांडेय / 49
- पूषवा क रतिया - राकेश कुमार पांडेय / 51
- दोहराव के दु:ख - दीपक सिंह / 53
- हमसे फरका रहिके - दीपक सिंह / 54
- धरियऽ पाँव बीचार केऽ - गोवर्धनसिंह फ़ौदार 'सच्चिदानन्द' / 55
- भारी बरसात में - सरिता सिंह राजपूत / 56
- कनक किशोर के चार गो कविता - कनक किशोर / 57
- जिंदगी के पल - सूर्येश प्रसाद निर्मल / 59
- भाई भाई - सूर्येश प्रसाद निर्मल / 59
- होइबे करी हिसाब हो - दीपक तिवारी / 60
- देखनीं हम जिनिगी के - अभियंता सौरभ कुमार / 61
- ई कइसन रीत ह - अभियंता सौरभ कुमार / 62
- नींक लागेला - उमेश चौबे "अश्क" / 63
- अँखिया बुझेली - उमेश चौबे "अश्क"/ 63
- बिकइबऽ भइया - गणेश नाथ तिवारी"विनायक" / 65
- कुदेला भदहवा - गणेश नाथ तिवारी"विनायक" / 65
- गजबे प्रचार करेला - गणेश नाथ तिवारी"विनायक" / 66
- बाढ़ से उजड़ गइल गाँव के जइसन - कु.रेखा कवयित्री /69
- याद तोहार आवत बा - कु.रेखा कवयित्री / 69
- अखिलेश्वर मिश्र के कुछ दोहा - अखिलेश्वर मिश्र / 81
- बात कइसे होई? - चंद्रिका प्रसाद पाण्डेय"अनुरागी" / 86
- तू असहीं खड़ा रहिहऽ - नम्रता राय ठाकुर / 87
- औरत जात - प्रिया मिश्र "मन्नु" / 88
- सुविधा शुल्क बढ़ावत जा- अशोक कुमार तिवारी / 89
- रउरा खूब इतराईं - अजय सिंह 'सिसोदिया' / 90
- बिना गलती के - शिवशंकर सिंह सुमित /91
- सभई जुदा हो गइल - राम पुकार सिंह "पुकार गाजीपुरी"/92
- कइसे खुस रहिहें - नेहा मिश्रा / 94
- काहे बचवा - राम नाथ बेख़बर / 95
- दू गो गजल - संगीत सुभाष / 96
- बसेला परनवा - डा.पुष्कर कुमार / 98
- भिखारी ठाकुर जी पर गीत - डा.पुष्कर कुमार / 98
- नीमन बाउर मिलके - जीवन सिंह / 100
- सबकुछ भेजाल बा - नवीन कुमार सिंह / 101
- नाही सोना के पानी चले - शम्श जमील / 104
- साँचे बात लिखाइल बा - शिवम तिवारी / 105
- अलख जगावे भोजपुरी के - शिवम तिवारी / 105
- राउर बाती पिया - किरन शर्मा / 106
- शांति - आरती भारती / 107
- नया साल - गुड़िया शुक्ला / 108
- तोहरा से - माया चौबे /109

पुरुखन के कोठार से

- अंजन जी के गीत / 7
- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के गीत / 10
- स्व. रामजी सिंह मुखिया के कविता / 12

कथा-कहानी

- साँढ़ - मनोकामना सिंह अजय / 28
- एक फूँक बीड़ी - मार्कण्डेय शारदेय / 42
- आगे केहू के चले ना - डॉ शिप्रा मिश्रा / 67
- प्यार के मोल - सत्य प्रकाश शुक्ल "बाबा'' / 70
- एही धरती पर - सुरेन्द्र प्रसाद गिरि / 80
- रिटायरमेंट - तारकेश्वर राय "तारक" / 84
- कोंहड़ा आ बकरी - नक्कू मझव्वी / 93
- भेष-भूषा – ऋषिदेव / 97

अनुक्रम

आलेख

- मुखपृष्ठ के चित्रकार अंतरिक्ष के परिचय - अंतरिक्ष / 13
- आग आ ब्राह्मण जन - प्रो. जयकान्त सिंह'जय'/19
- मिडिल के पढ़ाई - इन्द्र कुमार दीक्षित / 38
- फेसबुक : स्थापित लेखक, फेसबुकिया लेखक बनाम पाठक - अमित कुमार अम्बष्ट "आमिली" / 102
- लोक देवी से लोक वाहिका - राज नंदिनी / 110

संस्मरण

- आपन लइकाई - तारकेश्वर राय "तारक" / 82

पुस्तक समीक्षा

- 'सुनगुन' (दिनेश पाण्डेय जी के भोजपुरी कविता संग्रह) - मीनाधर पाठक जी के नजरिया/ 29

सतमेझरा – 1-4, 112-113

अपना आवे वाली पीढ़ी खातिर भोजपुरिया समाज के जागे के पड़ी !

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

बहुते बड़ आबादी के भाषा ह भोजपुरी। बाकी अबहूँ संसद भवन की नजर में भोजपुरी भाषा साहित्यिक, सांस्कृतिक आ वैचारिक रूप से कमजोर लागत बिया। जवना भाषा में वैचारिक गरमाहट कमजोर होखे ऊ भाषा के सामाजिक विमर्श के भाषा बने में संघर्ष त करहीं के पड़ी।

रोज रोज तरह तरह के अश्लील आ फूहड़ गाना के रचना आ ओकर बाजार, भोजपुरी खातिर बहुत जटिल आ गंभीर समस्या के बढ़ावते जात बा। इहे सब परोसे वाला लोग के सरकारी आ सार्वजनिक मंच पर सम्मान कइल जा रहल बा। ई सम्मानो कोढ़ में खजुहट के काम कर रहल बा। अब ई विचारणीय बा कि वैश्विक स्तर पर वैचारिक अउर सांस्कृतिक रूप से भोजपुरी भाषा के कवन स्वरूप परोसल जा रहल बा? एकर जिम्मेवार के बा? भोजपुरी के पहचान का बन रहल बा?

भाषा कवनो होखे ऊ भाषा अपने समाज आ संस्कृति के अटूट हिस्सा होले। भाषा एगो सीसा की तरे होले जेमें आदमी के सोच आ संस्कार के झलक झलकेला।

भोजपुरी में सामाजिक चिंतन के अभाव नइखे। एह दौर में आपन भाषा एगो कैंसर जइसन असाध्य बेमारी से बेरमतिया गइल बिया। दू अर्थी संवाद आ अश्लीलता के महा भाष्य सुनावल आ सुनल जा रहल बा।

ई सब सुनि के वात्स्यायन भले लजा जासु बाकी भोजपुरी समाज सहजता से सुनत बा, स्वीकार करि रहल बा। जाने अनजाने में व्यूवरसिप आ फॉलोवर्स बढ़ा के भोजपुरी भाषा के छवि बिगाड़े में भोजपुरिया लोग-बाग़ आपन गोपनीय सहयोग भी करि रहल बा।

भोजपुरी के नाम पर खुलल कई गो टीबी चैनल सारा बेशर्मी के समान घरे घरे पहुँचा के भोजपुरिया समाज के लइकन के समय से पहिलवे जवान क दिहले बाड़न सन। समाज के मनोरंजन के आधार डी जे हो गइल बा।

भोजपुरी में गायक, गायक से अभिनेता, अभिनेता से नेता बनला के होड़ लागल बा। जे जेतना फूहड़ता अपनाई

ऊ ओतने जल्दी सफलता पाई। एह नंगी लोकप्रियता के पाछे समाज दीवाना बनल बा। एह नंगा स्टारन के देखि सुनि के केहू ए भाषा खातिर नीमन विचार कइसे बना सकऽता?

भोजपुरी भाषा में सिनेमा होखे चाहे गीत संगीत, नारी खातिर एगो साफ सुथरा प्रगतिशील नजरिया अपनावे के पड़ी।

बस ट्रेन टेम्पू जइसन सार्वजनिक यातायात साधन में मोबाइल ब्लूटूथ से बाजत फूहड़ गीत नारी जाति के असहज क देला।

भोजपुरी समाज के ई रुचि जनमानस के बुद्धि एतना खराब क देहले बिया कि अश्लील से अश्लील गवनई भी सभे खातिर साधारण बात हो गइल बा।

भोजपुरिया समाज के जागे के पड़ी, अपनी भोजपुरी भाषा खातिर, अपनी कला खातिर, अपनी लोक संस्कृति खातिर, अपना आवे वाली पीढ़ी खातिर ।

बसइनवा घास की तरे बिना मतलब के जामल ए गीतन आ गायकन के खुल के बहिष्कार करे के पड़ी। ना त ई सब अपना लाभ खातिर भोजपुरी समाज के नरक में ले जाते रहिहें सन। बहुत संगठन आ संस्था भोजपुरी खातिर बहुत नीमन कामो करत बाड़ी सन। सभे के इहे उद्देश्य बा कि भोजपुरी के सम्मान आ गरिमा बढ़ो, बाकी अश्लील भूँके वाला एह खउराह कुकुरन के पोंछ में लुकार बन्हले बिना गरिमा ना मिली।

फूहरपन की जगह लोक रंजक भोजपुरी की आत्मा के समावेश करे के पड़ी। ना त संवैधानिक मान्यता मिलियो गइल त ओसे का हो जाई? ओकर असली फ़ायदा रसदार कुर्सी पर बइठल लोग आ गायक से अभिनेता आ अभिनेता से नेता बनल लोगे उठाई। सरकार कवनो होखे ऊ धियान ना दी काहे कि चुनाव में भीड़ जुटावे के काम इहे करेलन। कवनो भाषा के विश्व में जवना अश्लील विषय वस्तु के चलते बदनाम कइल जा रहल बा,

ओसे मुक्त करावे के उपायो ओही भाषा भासी लोग के करे के पड़ी।

आईं, आज संकल्प लिहल जाव कि ना अश्लील सुनल जाई, ना सुने दिहल जाई।

◆◆◆

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक,
सिरिजन

अंजन जी के गीत

कबले सेवत रहब माया के बजरिया ।
गठरिया बहुते भारी हो गइल ।।
का लेके अइल ए जग में,
का लेके तू जइब,
जब तन छूटी, सब धन छूटी,
तूँ रोइब, पछतइब,
अबहू चेत, देख साईं के नगरिया ।
डगरिया में अन्हारी हो गइल ।।
रूप-रंग के देखि के सुगना,
झूठे इहां भोरइल,
कॉंट-कूश के ए बगिया में
फॅसि गइल, अँझुरइल,
रसवा लूटे में सब बीतल बा उमिरिया ।
भूतहस बारी हो गइल ।।
पाँचो पहरू, पाँचो टहलू,
लालच में परि गइले,
आपन धरम मरम ना जनले,
बहुत भूल करि गइले,
लूटले अपने घर के कइले ना रखवरिया ।
गतरिया रोग बेमारी हो गइल ।।
माया के ए महानगर में,
के केकर बा आपन,
भूल-भुलइया के मेला बा,
बाझल बाँटे तन-मन,
अंजन रचि ल पावन हो जाई पुतरिया ।
लहरिया हरि के जारी हो गइल।

◆◆◆

भोजपरी गीत सम्राट
पं० राधा मोहन चौबे
'अंजन जी'

सरहद पर खटास अउरी उठत गिरत ढिमलात मानवीय मूल्यन के साथ समय के गाल में समा गइल 2025. पाछे मुड़ के देखला पर देश के ऐतिहासिक धार्मिक उत्सव, आर्थिक स्थिति, अउरी खेल उपलब्धियन के देखि के हर देशवासी के गौरव से सीना चाकर त होखबे करी लेकिन प्राकृतिक बिपत आ मानव समाज के कलंक आ मानवता के दुश्मन के द्वारा भइल आतंकी हमला से देशवासी के खून के आँसू रोवे के मजबूर भी होखे के परल। जान माल के नुकसान त भइबे कइल आ प्रभावित लोग के ना खतम होखे वाला दुख दे के चल गइल ई आतंकी हमला। समाजिक ताना बाना के भारी नुकसान भइल।

गंगा, जमुना आ सरस्वती के संगम प्रयागराज में दुनिया के सबसे बड़का धार्मिक अउरी शांतिपूर्ण जन-समागम के साक्षी बनल आस्था, परंपरा, संस्कृति, मानवता के संगम के अद्वितीय पर्व महाकुम्भ 2025 । लगभग 66 करोड़ श्रद्धालु आस्था के डुबकी लगा के बता देहलन आधुनिक समाज के कि अब्बे आस्था के जड़ पोढ़ बा। कुछ घटना के छोड़ दिहल जाय त शासन प्रशासन के हेतना बड़ आयोजन के सफलता पूर्वक सम्पन्न करावल अगराए लायक त बटले बा।

मानवता के शर्मसार करेवाली घटना घटल बिगत 22 अप्रैल 2025 के, ऊ काला दिन जब जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी समूह निरपराध 26 पर्यटक के धर्म पूछि के परिजन के सोझा मौत के घाट उतार दिहलन स। एह मानवता के हत्या के जवाब में भारत मई 2025 में ऑपरेशन सिंदूर चलाके पड़ोसी देश पाकिस्तान के 9 आतंकी ठिकानन के मटियामेट कई दिहलस। दुनिया में सन्देश गइल कि आज के भारत अपना सुरक्षा के मामिला में आत्मनिर्भर बा केहू से डेराए वाला नइखे, खाली डॉजियर ना जरूरत परला पर सीमा में घुस के मारे में भी ना परहेज करी, ई तीसरा सर्जिकल स्ट्राइक के रूप में इयाद राखी इतिहास।

बीतल साल 2025 हमनीं के कई खुशनुमा आ गर्व करे लायक पल दिहलस ऊ देश के बाहरी भा भीतरी सुरक्षा के मामिला होखे भा होखे खेल के मैदान, बिज्ञान के प्रयोगशाला होखे भा बैश्विक मंच। खेल के मामिला में भी भारत सफलता के झंडा गाड़े में पाछे ना रहल, पुरुष क्रिकेट टीम आइसीसी चैंपियन ट्रॉफी जितलस त पहिली बेर खेल जगत भारतीय महिला क्रिकेट टीम के नारीशक्ति के अपूर्व खेल क्षमता के साक्षी बनलस जब ऊ लोग वर्ल्ड कप पर आपन अधिकार जमावल, इहे ना देखे में अक्षम (आन्हर) भारतीय महिला क्रिकेट टीम भी T20 विश्वकप में इतिहास रच दिहलस। ए उपलब्धि के देखि के देश खुशी आ गर्व से नाच ऊठल।

अन्तरिक्ष क्षेत्र में भी आपन देश सफलता के सीढ़ी चढ़ रहल बा। 2025 में ही अपना देश के लाल शुभांशु शुक्ला अंतराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में पहुँचे वाला पहिलका भारतीय के रूप में आपन नाँव दर्ज करावे में सफल भइलन। अपना देश के युवाशक्ति की ओर बैश्विक समाज बड़ा उम्मीद अउरी भरोसा से देख रहल बा। युवा शक्ति के सोझा ओ कसौटी पर खरा उतरे के बड़का चुनौती बा। अपार क्षमता बा अपना देश के युवा शक्ति में । ऊ निराश ना करी।

बिगत साल में ही अयोध्या में राम मंदिर पर ध्वजारोहण जइसन आयोजन ई बतावे में पुरहर सफल भइल कि लाख विघटन के बाद भी अपना समाज मे आस्था, संस्कृति अउरी विरासत के जड़ कमजोर नइखे भइल बलुक दिन पर दिन मजबूती की ओर बढ़ रहल बा।

"सब दिन होत ना एक समाना" वाला कहावत, एक बार फिर साँच लउकऽता। दैनिक आ सरकारी कामकाज में उपयोग होखे वाला अंग्रेजी के पुरान साल 2025 भी कब्बो नावा रहे ओकरो स्वागत अइसहीं धूमधाम से भइल रहे। समय के पहिया घुमल त चमक फींका भले परल लेकिन काबलियत के तगमा भी भेंटाइल। 2025 खाली 12 महीना के गठजोड़ ही ना रहे ना ही कलेण्डर, जेकर कुल्हिए पन्ना के पलट दिहल गइल होखे। ई जीवन के यात्रा में ना भुलाए वाला अंश रहे। जवन ए साल में मिलल ऊ बाकी जीवन पर प्रभाव जरूर डाली, जवन ना मिलल ओकरा खातिर संघर्ष नावा सिरा से शुरू करे के पड़ी। 2025 बहुत कुछ देके जा रहल बा, समय त बेहतर बनावे के कोशिश करबे करेला, हो सकेला कुछ दिन केहू खातिर मन माफिक ना रहल होखे, साल रुकल ना, ओकर गति आ कोशिश। जवन बीत गइल ऊ नीके रहे, जवन आ रहल बा उहो नीके रहो, एही उम्मीद के साथ 2025 के बिदाई मुस्कान से कइल जाव।

तिमाही के सुवागत हाड़ कँपावे वाली सर्दी से हो रहल बा। ठंढी बेयार के पाछे बा गरीब गुरबा के उदासी आ गरीबी के बीभत्स चेहरा। गरम वस्त्र के कमी आ ओकरा से लड़े के जुगाड़ के अभाव के चलते जाड़ के मार ढेर गरीबे के सहे के पड़ेला। रब्बी फसल जइसे गेहूँ, सरसों, रहिला अउरी दलहन बोवे के इहे समय ह। इहे ठंड जिया जन्तु के परेशान करेला त गेहूँ जइसन फसल के पोढ़ भी करेला। पालक, मेंथी, सरसों के साग, गोभी, गाजर, मूली, शलजम जइसन सब्जी जइसन सौगातो मिलेला प्रकृति से। जवन रोग प्रतिरोधक क्षमता के बढ़ावे में प्रमुख भूमिका निभावेला। शरीर के ऊर्जा के साथे जाड़ से लड़े में भी मदद करेला।

उत्सवधर्मी समाज के रूप में पहिचान बा अपना भोजपुरिया समाज के। ए तिमाही जनवरी में विशेषकर मकर संक्रांति, बसंत पंचमी, मौनी अमावस्या जइसन तेवहार दस्तक दिही। एही तिमाही में देश आपन 77वां गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2026 के मनाई, जवन भारत के संविधान के अपनावे अउरी अपना देश के संप्रभु गणराज्य बने के प्रतीक के रूप में मनावल जाला।

राउर आशीष के हाथ सिरिजन के माथे बा, एही चलते समय के पैमाना पर नापल जाव त सात बरिस हो गइल सिरिजन के एह साहित्यिक सफर के। आठवाँ बरिस के पहिलका अंक हाजिर बा रउरा सोझा। पढ़ीं, पढाईं आ रुचे त गलती सही बताईं।

◆◆◆

राऊर आपन,

तारकेश्वर राय
उप सम्पादक, सिरिजन

स्व. पं. धरीक्षण मिश्र जी के गीत

वोट ना मिले त ई चैन से न बइठें कहीं
ओट बिना आठो घरी घूमते देखाले सन।
वोट मिलि जाला त ढेर-ढेर दिन तक ले
चुपचाप जाके कहीं परि के औंघाले सन।
दोसरा के बिल जोहि जोहि के गुजर करें
पास कइ के ओही में अपने मोटाले सन।
गर्मी का दिन में घास फूस जरि जाला तब
दूर जाके आड़ या पहाड़ में लुकाले सन।।1।।

तापमान देंही के बहुते कम होला किन्तु
जनता में जा के सदा जहरे ओकाले सन।
देंहि एकनी के होला सूत का समान सीधा
टेढ़ चालि से परन्तु आगे बढ़ि जाले सन।
दोसरा के काटे के मुँह बवले रहें सदा
केहुवे के काटे में तनिक ना लजाले सन।
देखे में तमाशा खूब मजा आइ जाला जब
आ के दुइ चारि आपुसे में अझुराले सन।।2।।

ज्यादे दिन एक केंचुली में रहि गइला से
सुस्त परि जाले ढेर आलसी देखाले सन।
छोड़ि के पुरान नया केंचुली में अइला से
का बताई केतना ई तेज बनि जाले सन।
फन फइलावें पोंछि पटकें घुमावें कबें
धैके भयंकर रूप खूबे फोफियाले सन।
आँखि मलकावें नाहीं जीभिये चलावे सदा
चक्खू सरवा एही से जग में कहाले सन।।3।।

बाकि अगिला पन्ना पर ....

स्व. पं. धरीक्षण मिश्र जी के गीत

भोजपुरी के आचार्य कवि
पं. धरीक्षण मिश्र

मणिधर साँप सिर्फ कान से सुनल जात
सामने जे आइल से सब विषधर बा ।
दूध केहु पियावे त विष और तेज होला
माथा में भरल सदा ऐसने जहर बा ।
कौवा का समान जौन खालें पचा जालें सजी
एही से नाव एक परल काकोदर बा ।
एक दोसरा के धइके आपुसे में लीले का
घाते में घूमत साँप आठहू पहर बा ।।4।।

ले के समाधि पवन पी के देहि साधि लेत
योगी अस बीतत महीना दुइ चार बा ।
भोगी नाम इनके प्रसिद्ध पहिले से हवे
भोग एक मात्र भैल जीवन अधार बा ।
छोट-छोट साँप घूमे तेज गति से परन्तु
बड़का का देंहिये के बोझा भैल भार बा ।
बच्चा बिया के खा के सीमित परिवार राखें
लूप या नसबन्दी के ना अबे प्रचार बा ।।5।।

दुइ गो जीभि वाला ई जातिए प्रसिद्ध हवे
चैन से रहे ना जीभि जानत जहान बा ।
दूनूँ ओर मुँह वाला दुमुँहों मिलेले कहीं
पोथी में पाँचो मुँह वाला के बखान बा ।
एकनी का राजा का हजार मुँह होला तब
कौन कहीं एकनी का मुँह के ठेकान बा ।
छोटका से बड़का ले सबके बा ईहे हालि
एकनी से फइले रहला में कल्यान बा ।।6।।

◆◆◆

स्व. रामजी सिंह मुखिया

स्संक्षिप्त परिचय: लगभग 1925 में ग्राम पवट, जिला भोजपुर, बिहार में जनम। बचपने से धर्मग्रन्थन्हि आ साहित्य-संगीत में रुचि। किशोरावस्था से भोजपुरी साहित्य में ब्यंग अवरू भक्ति क्षेत्र में पद्यरचना। भारत से लेके बिदेशन्हि तक ब्यंग रचननन्हि के प्रसिद्धि। भोजपुरी साहित्य में अनन्य योगदान। समाजसुधार खाति ग्रामीण राजनीति में अइनी - बेहरा ग्राम पंचायत के मुखिया अवरू आरा अंचल के बी.डी.सी. के अध्यक्ष पद के सुशोभित कइनी। 3 अप्रैल 1999 के निधन। इहाँ के कबिता-संग्रह 'हमहूँ मुखिया होखबि' भोजपुरी साहित्यांगन के वेबसाईट प उपलब्ध बा।

तू दरस द फिर आइके

भगवान भारतवर्ष में, तू दरस द फिर आइके ।

मोह अर्जुन के मेंटाव, ज्ञान गीता गाइके ।।

अभिमान में दुरुबोधना, आंखि रहते अन्ध बा।

काहे ना अइसन होखिहें, जब बाप नैना बन्द बा।।

संग में शकुनी जुआड़ी, दाव पर बा बइठले ।

धरम राज करेज के, लोभ बड़ुवे अंइठले ।।

दुष्ट दुशासन खड़ा बा, द्रोपति के टोह में।

भीष्म द्रोणाचार्य परले, मोह में विद्रोह में।।

लाज नारी के बंचाव, तन ढपन के चीर द।

कंस केसी के संघार, पेट पूतना चीरि द।।

भीम भकुआइल बुड़त बा, दउर बंहिया थाम्हिल ।

सारथी बन रथ संभाल, बाग भारत थाम्हिल ।।

◆◆◆

मुखपृष्ठ के चित्रकार अंतरिक्ष के परिचय

सितंबर 2006 के जनमल अंतरिक्ष के स्थाई निवास गाँव महादेव, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश ह। अंतरिक्ष वर्तमान में बी०सी०ए० (2nd Sem) के छात्र बाड़ें। अंतरिक्ष के फोटोग्राफी, पेंटिंग आ लेखन में रूचि बा। अंतरिक्ष के पेंटिंग आ रचना कई पत्र-पत्रिकनन में प्रकाशित भइल बा। सितंबर 2022 से अंतरिक्ष फोटोग्राफी क रहल बाड़ें आ ए छोटे अंतराल में उनके सैकड़न फोटो आ डिजिटल आर्ट्स देश-विदेश के जानल-मानल पत्रिकन जइसे हंस, पक्षधर, नया ज्ञानोदय, सेतु, वर्तमान साहित्य, कथाक्रम, परिकथा, विपाशा, वीणा, पाखी, समयांतर, सरस्वती, उत्तर प्रदेश, प्रस्ताव, अदम्य, जलवायु, सार-समीक्षा, प्रेमचंद पथ, नाद रंग, अंतरंग, छाँह, रचना उत्सव, हिम भारती, समीरा, आउटलुक, अक्षरा, संवदिया, बरोह, शीतल वाणी, पाती, पतहर, प्रस्ताव, प्रश्नचिन्ह, समकाल, हरिगंधा, सत्राची (शोध पत्रिका), मुक्तांचल, कलम हस्ताक्षर, समकालीन अभिव्यक्ति, शैक्षिक दखल, साहित्य समय, साहित्य यात्रा, शब्दिता, शुभ तारिका, शब्द संयोजन (नेपाल से प्रकाशित), हिमप्रस्थ, हिमतरू, अभिदेशक, दि अण्डरलाइन, राजस्थली, साहित्य समीर दस्तक, पाठशाला, आधारशिला साहित्यम्, परिवर्तन, प्रकृति मेल, प्रकृति दर्शन वगैरह के मुख पृष्ठ आ भीतरी पन्नन पर प्रकाशित भइल बा। साथहीं, देश के जानल-मानल प्रकाशन जइसे बोधि प्रकाशन, समय साक्ष्य, डायमंड बुक्स, समर प्रकाशन, शिल्पायन बुक्स, पुस्तकनामा, न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन्स, पाखी पब्लिशिंग हाउस, सत्राची फाउंडेशन, कामायनी, सी जी ज्ञान प्रकाशन, मैत्रेयी प्रकाशन, चतुरंग प्रकाशन, किसुन संकल्प लोक वगैरह के पुस्तकन के आवरणो पर अंतरिक्ष के फोटो आ आर्ट स्थान पवले बा। देश के दुसरो चर्चित साहित्यिक पत्रिका आ प्रकाशन अंतरिक्ष के फोटो आवे वाला अंकन आ पुस्तकन खातिर चयनित कइले बा।

अंतरिक्ष

सुपुत्र श्री पवन चौहान, गाँव व डा० महादेव, तहसील-सुन्दरनगर, जिला- मण्डी (हि०प्र०)- 175018

मो०- 9805402242, 8894122242

Email : antriksh92006@gmail.com

◆ ◆ ◆

अंतरिक्ष

मल मल धोईं खूब नहाईं, तबो ई काया साथ ना जाई

अपना-अपना छत पर सोलर पैनल लगवा के बिजली बानवे खातिर सूरुज भगवान के सारा ऊर्जा लोग खींच लिहले बा। उहाँ के किरिन कमजोर पड़ि के धरती ले पहुँच नइखे पावत एहि से असों जाड़ा पाला ढेर पड़ऽता। हाड़ कपावत जाड़ में घर के लोग नहाए के दबाव बनावे त केकरा बाउर ना लागी जी? अइसन समस्या से निपटे खातिर पढ़ीं महाकवि लिखित “जाड़ के जुगाड़” शोध प्रबन्ध के कुछ अनुभूत प्रयोग आ आजमावल नुस्खा। मूड़ी पर तनुमनी पानी छिरिक के भरमावल जा सकता। केहू डीठि गड़ा के नहान निहारत होखे त अंगौछी भींजा के देह में जहाँ तहाँ पोंछा लगा लीं। बाथरूम में नहानीं त भीतरी ढुकला के बाद लोटा भा मग से देह बचा के एने ओने पानी फेंकल शुरू क दीं बहरी के लोग के बुझाई कि भीतरी नहान चलऽता। धियान रहे खाली लोटा भींजे के चाहीं। अंदरे कपड़ा बदल लीं आ चड्ढी गंजी भींजा के सिसकारी पारत बहरा निकल आईं। हमार पड़ोसिन बतावत रहली कि नहाए के बेरा झरना खोलि के खूद किनारे दुबक गइला पर शावरकुंभ नहान के फल मिलेला। नहाए में देखावा कइल अनुचित बा। देखा देखा के महाकुम्भ में नहाइल जाला। उहो बनल बा बारह बारिस बाद। भगवान भी बरिसेलें त सगरी गाँव में एके बेर ना बरिससु।

भीतर से आत्मा के साफ़ रहे के चाहीं मन में मइल ना बइठे।

पंच तत्व से बनल ई शरीर गंदा ना होला जे गंदा बुझऽता ऊ क्षितिज जल अग्नि गगन आ समीर के अस्तित्व खुलेआम नकार रहल बा। जल के

सम्मान कइल जन जीवन के सम्मान कइला के बराबर पुनदायक बा। जाड़ भर जल के बरबादी रोका जाव त केतना महान काम होई। जल संकट रोके में कुछ त सहयोग होइए जाई। केतनो नहा लीं, नहाए खातिर मरीं चाहे नहा के मरीं तबो अंत में लोग ले जाके नहवइबे करी, केहू मानीं ना। त जवन काम लोग के ह लोग करबे करी ऊ जाड़ पाला में अपने काहें करे के ह? ए काया के कवनो भरोसा नइखे। असली दगाबाज देह होले,

केतनो इतर फुलेल लगा लीं, चमका लीं। मल मल के नहवाईं, धोईं । तबो ई काया साथ न जाई ।

◆◆◆

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

पुस्तक क नाम –श्रीमद्भगवद्गीता,

भोजपुरी भावानुवाद (काव्यात्मक)

---- कृष्ण मुरारी राय ----

प्रकाशक - सर्व भाषा ट्रस्ट, दिल्ली

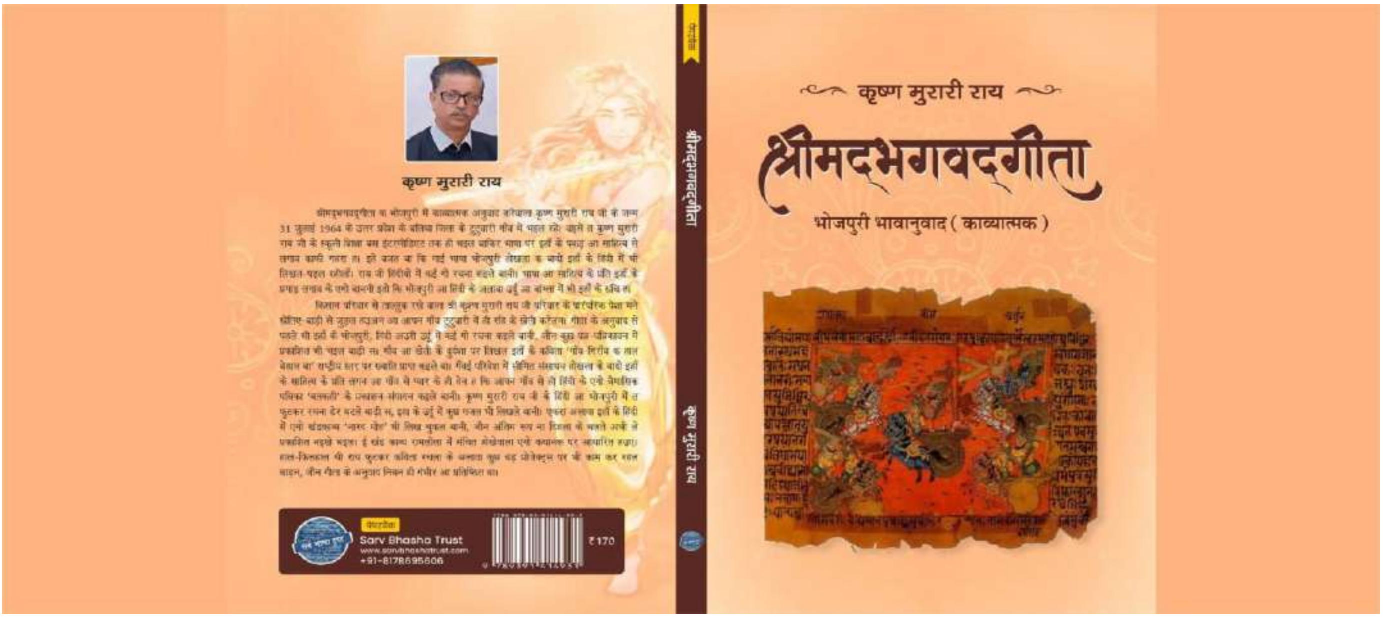

गीता का बारे में एगो बड़ा मशहूर श्लोक ह -

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल नंदन: ।

पार्थोवत्स: सुधी भोक्ता दुग्ध गीतामृतंमहत् ।।

भावार्थ -

गाय मान लीं उपनिषद , मधुसूदन के ग्वाल।

भगवत् गीता दूध ह , बछड़ा कुंती लाल ।।

महाभारत का ह ?

हइ हमार हइ आन क, जहिया ढुकल विचार ।

महभारत लेबे लगल , तहिया से आकार।।

आ एह मोह माया में जे अझुराइल बा ऊ सब महाभारत क एगो हिस्सा बा। एही सब भावना से अलग रहे क जवन प्रेरणा अर्जुन का कृष्ण से मिलल ऊ आज हमनीं का सोझा श्रीमद्भगवद्गीता का रूप में बा। गीता का ह? -

ई विचार होखे खतम , बचे न आपन आन।

ना पनपे फल कामना , अतने गीता ज्ञान ।।

आपन आन क भाव बचे नाहीं ,

अइसन पाठ पढ़ावेली गीता ,

ना परिणाम क इच्छा जगे कबो

अइसन राह देखावेली गीता।
सुख में दुख में समभाव रहीं
सबके अहसास करावेली गीता,
बेलगाम क घोड़ा बने नाहीं मन ,
बरियार लगाम लगावेली गीता।।

गीता महाभारत क हिस्सा ह या ना ह , कब लिखल गइल, एह पर विभिन्न तरह क विचार आ तर्क वितर्क बहुत बा। लेकिन गीता क विषय वस्तु उच्च कोटि क आ सबका खातिर बा एहमा कवनो शक नइखे ।

महाभारत क युद्ध होत समय जब संजय से धृतराष्ट्र सुनले बाड़न कि भीष्म पितामह वाण शय्या पर बाड़न त उनका मन में उथल-पुथल मच गइल। एसे कि धृतराष्ट्र जानत रहलन कि कौरव दल में 11 अक्षौहिणी सेना बा आ पांडव पक्ष में 7 अक्षौहिणी । तब ऊ संजय से पूछऽतारन कि तनी शुरू से बतावऽ कि का भइल ह ।

अध्याय 1

संजय से कहलन धृतराष्ट्र कि , युद्ध क क्षेत्र क हाल बतावऽ ।

युद्ध क इच्छा रखे मन में , कूल्हि लइका हमार करें का सुनावऽ ।।

पांडु क लइकन भी उहँवा

ओह लो क भी चाल चलन समुझावऽ ।

धर्म क क्षेत्र कुरुक्षेत्र क सब हाल सुनाव ना कुछो छिपावऽ ।। 1 ।।

संजय कहे दुर्योधन व्यूह बनावल पांडु पुतन क निहारे ।

द्रोण के मौन खड़ा लखि राजन जा नगिचा अस वैन उच्चारे।। 2 ।।

(संजय कहऽतारन कि दुर्योधन गुरु द्रोणाचार्य से पहिले पांडव पक्ष क परिचय देत कहि रहल बाड़न ।)

हे गुरू राउर चेला द्रुपद सुत धृष्टदुमन द्वारा व्यूह रचाइल।

व्यूह आकार में सेना खड़ी जरा देखीं बानीं हम त अकुताइल ।। 3 ।।

धनु हाथ में लेके बड़ा लमहर खड़ा सात्यकि वीर महा मतवाला।

देखीं विराट क चाल चलन जइसे बूझत बा सबका के निवाला ।। 4 ।।

दूनो क दूनो ई अर्जुन भीम से ना तनिको कम आँकल जालन।

होने महारथी राजा द्रुपद उहँवे धृष्टकेतु भी खाड़ देखालन।।

चेकितान आ काशी नरेश बली , सँगहीं पुरजित कुंतिभोज के देखीं।

शल्य ,युधामन्यु अउरी उहाँ उत्तमौजा क बढ़ल ओज के देखीं।।

सुभद्रा ललन अभिमन्यु का संग में पाँच गो लइकन खाड़ के देखीं।

ई सभे के सभे महारथी ह तनी ध्यान लगा आँखि गाड़ के देखीं।। 5 - 6 ।।

(एइजा तक पांडव पक्ष क कुछ लोगन क परिचय देके अब आपन पक्ष का बारे में दुर्योधन बता रहल बाड़न)

हे द्विज श्रेष्ठ सुनीं मन से अब आपन पक्ष सुनावत बानीं।

सेनापति के के बा हमनी ओरी लेईं समझ समुझावत बानीं ॥ 7 ॥

आप आ भीष्म पितामह, कर्ण, विकर्ण अउर अश्वत्थामा के देखीं।

भूरिश्रवा सोमदत्त सुवन कुछ अउरी होने बलधामा के देखीं ॥ 8 ॥

जीवन त्यागि सके हमरा बदे, अइसन वीर अनेकन देखीं ।

शस्त्र आ अस्त्र गहे निज हाथ में, युद्ध बिना पड़े चैन न देखीं ॥ 9 ॥

अगहर जहाँ बाड़न भीष्म पितामह , सेना कबो ना ऊ हार सकेले।

भीम से रक्षित सेना में का बाटे , ऊ आपन हार ना टार सकेले ॥ 10 ॥

(ए

एतना कहि के एकाएक दुर्योधन सबका से कहतारन कि सब केहू मिल के भीष्म जी क रक्षा करे।

इहे निहोरा आप सबन से , बाटे ई दुर्योधन के।

खाली आप सबन से नाहीं आज्ञा बा हर योद्धन के॥ 11 ॥

लड़ीं लड़ाई खूब जतन से, बाकी हरदम ध्यान रहे।

भीष्म पितामह रहें सुरक्षित, रक्षित उनकर प्रान रहे॥12 ॥

(कुछ विद्वान लोग मानेलन जा कि भीष्म मन से पांडव लोगन का नजदीक रहलन एसे भीष्म का प्रति दुर्योधन सशंकित रहलन । एही से अइसन आदेश देतारन कि भीष्म क निगरानी भी होत रही । दुर्योधन क बात सुनि के भीष्म जी सजग हो गइलन।)

कौरव वंशी भीष्म पितामह , सुनत बात भरलें हुंकार ।

शंख बजवलन बड़ी जोर से, दुर्योधन खुश भइल अपार ॥ 12 ॥

सुनत तुरत सब सजग हो गइल बाजल शंख नगारा ढोल ।

नरसिंहा, मृदंग आदि सब एके संगे दिहलन बोल ॥ 13 ॥

(भीष्म जी क शंख क आवाज सुनि के सबका लागल कि अब युद्ध शुरू होखहीं वाला बा । लागल सब आपन आपन शंख आदि बजावे । गीता में एइजहें अब अर्जुन आ कृष्ण क प्रवेश होता ।)

उज्जर घोड़ा वाला रथ क सारथी बाड़न श्री घनश्याम ।

ओ रथ पर बन रथी विराजस, पांडु पुत्र अर्जुन बलधाम ॥ 14 ॥

'पांचजन्य' श्री कृष्ण बजवलन , अर्जुन क रहे ' देवदत्त '।

सुनत बजवलन भीम सेन जी, ,' पौंड्र ' नाम क शंख तुरत ॥

' अनंत विजय ' रहे धर्म राज क , नकुल बजवलन शंख ' सुघोष ' ।

तुरते होड़ लगल वीरन में , सबका जागे लागल जोश ॥

' मणिपुष्पक ' सहदेव बजवलन , अउरी बाजल शंख अनेक।

बढ़िया धनुष क धारण कर्त्ता , काशी राज ओही में एक॥

धृष्टद्युम्न, राजा विराट अरु सात्यकि , द्रुपद , शिखंडी आदि ।

पाँचो पुत्र द्रोपदी जी के , अभिमन्यु कइले शंखनाद ॥ 15 - 18 ॥

(संजय धृतराष्ट्र जी से कहतारन कि अइसन शोर गूँजल कि धृतराष्ट्र क लइका लोगन क करेजा दहल गइल ।)

धृतराष्ट्र के सब सुवन पवलन बहुत विषाद ।

धरती से आकाश तक , गूँजल अस शंखनाद ॥ 19 ॥

(एइजगा ध्यान देबे लायक बात ई बा कि संजय धृतराष्ट्र से ही कहतारन कि धृतराष्ट्र क लइका लोग... स घोषो धार्तराष्ट्राणां .. जबकि संजय सारथी रहलन। आ कई जगह संजय धृतराष्ट्र क लइका / संबंधी कहले बाड़न जवन अभी आगे 20 वाँ में भी आई।एहू का आधार पर कुछ लोग कहेलन कि गीता बाद में क हऽ ।

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् ....॥20॥

यानी धृतराष्ट्र क लइका/संबंधी/पक्ष के व्यवस्थित देखि के ... ।)

जेकरा पताका प विराजें हनुमान सदा ,

राजन सुनावतानी बात अर्जुन के।

आपकऽ गोहरियन के मोरचा पर खाड़ देखि ,

कृष्ण से कहत बाड़न हियरा बिधुन के ॥ 20-21॥

दूनों सेना बीच कृष्ण ! रथ रउवा खाड़ करीं ,

युद्ध में पियासल बा देखीं के के खून के ।

रथ खड़ा राखीं तनी बीचवा में तब तक,

केसे युद्ध करे के बा ताकिलीं ना उनके॥ 22 ॥

केसे युद्ध करे के बा, केकरा के टारे के बा,

रथ खड़ा राख तनी ढंग से निरखि लीं।

बिना बुद्धि वाला दुर्योधन क हित बदे ,

के के राजा आइल बाटे ,सबके परखि लीं ॥ 23 ॥

संजय कहलन धृतराष्ट्र से, सुन अर्जुन क बात ।

कृष्ण बढ़वलन तुरत रथ , लागल ना पल जात ॥ 24॥

कृष्ण मुरारी राय

टुटुवारी, बलिया (यू. पी.)

बाकी अगिला अंक में.........

आग आ ब्राह्मण जन

आजी से लरिकाईं में सुनले रहीं - " बावाजी से हरुस - पातर ना बोले के। ए लोग का मुँह में आग - पानी दूनो होला। तोहरा बोली - बचन आ बेवहार से प्रसन्न भइल लोग कि असीस से पानी नीयन तर क दी लोग आ जदि तोहरा कुबोल - दुर्बेवहार से अनराज भइल लोग कि सराप से जरिछार क दी लोग। " तब हम अपना आजी से पुछले रहीं - " ए आजी, ई लोग एके मुँह में आगी आ पानी दूनो कइसे रख लेला लोग? आगी त पानी के जइसे नियरा होई ऊ जुरते बुता जाई। " ई सुनके हमार अपढ़ - निपढ़ आजी बतवले रहे - " बबुआ इहो भगवान के माया ह। अइसन ना होइत त आसमान में बादल के रूप में पानी से पानी टकराला त आगी के रूप में लौका - बिजुरी कइसे पैदा होला? समुन्दर के लहर - ज्वार आपुस में टकरालें त समुन्दर में आगी कइसे लाग जाला? जवना के बरवानल कहल जाला। हाथ - गोड़ भा देह के कवनो अलंग आग से जर जाला त जवन मरहम लगावल जाला, ओकर नांव बरनाल एही से रखल गइल बा कि ऊ जरला जगे पर ठंढ़ा लागे आ ठीको करे। ई बरनाल बरवानले से बुझाला। " एकरा बाद आजी कटवत में पानी ले अइलीं आ बावाजी पांव धोआइल - पोछाइल। एकरा के ऊ अरघपांव कइल बतवले रहली। उनका कहे के मतलब इहे रहे कि उनकर पांव धोके उनका आग के सांत कइल जाला। हेने आके हम जनलीं हं कि आजी जवना के अरघपांव कहले रहली ओकरा के संस्कृत में ' अर्घ्य पाद ' कइल कहल जाला। दादी के आजी आ दादा के आजा कहे के परम्परा भोजपुरी में बा। बिद्वान

लोग के मत से आर्य, आर्य पुत्र, आर्या आ आर्य पुत्री, आर्यी के अर्थ क्रम से सज्जन भा श्रेष्ठ भा आदरनीय, श्रेष्ठ भा जेष्ठ भा सज्जन भा आदरनीय के पुत्र आ सज्जनता से सम्पन्न नारी (स्त्री) भा सजनी भा पत्नी, श्रेष्ठ भा जेष्ठ भा आदरनीय के पुत्री अउर आजी (दादी) होला। भोजपुरी के आजा आ आजी कुल के श्रेष्ठ पुरष - महिला सदस्य दादा - दादी के अर्थ में आर्या आ आर्यी के बदलल रूप ह। खैर, हमनी त अबहीं आग आ ब्राह्मण का सम्बन्ध पर बात करे चलल बानीं। त आग के बारे में आ ओकरा के पैदा करके जोगावे के बारे बिद्वानन के बिचार जान लिहला के बाद श्रुति - स्मृति आदि के बतावल प्रमाण के आधार पर आग आ ब्राह्मण के विषय में बात कइल जाई।

आग के खोज मनुष्य के आउर जीव - जानवर आ चिरई - चुरुंग से सेसर बना दिहल। आग के खोज आ ओकरा के जियावे - जोगावे के बोध भइला के बाद मनुष्य बहुत मजबूत प्रानी बन गइल। फेर खेती - किसानी आ आउर जीव - जानवर के पसुआ बनाके अपना सहयोग खातिर उपयोग में ले आवे में पारंगत हो गइल। मनुष्य आउर जीवन के तुलना में कवनो चीज के अनुकरन आ उपयोग करे में सेसर रहे। ऊ प्राकृतिक रूप से देखत आवत रहे कि कइसे जंगल में पेड़ के डाढ़ दोसरा पेड़ के डाढ़ आ खास करके पीपर के लकड़ी आपस में टकराता - घसराता त ओकरा रगड़ से आग पैदा हो जाता, जवना के दावानल कहल गइल। समुन्दर का पानी के अगाध - अनन्त जालधारा के आपुसी रगड़ा से समुन्दर के पानी में आग पैदा हो जाता, जवना के बरवानल कहल गइल बा। आसमान में बादल के पानी आपुस में टकरा- घसराके बिजली जइसन आग पैदा होला अउर ऊ जब धरती पर गिर के जंगल में आग लगा देता। पत्थर से पत्थर भा लोहा टरकाता त आग के चिँगारी उत्पन्न हो जाला। ओह खास पत्थर से निकलल चकमक चिंगारी के लोग चकमन पत्थर कह दिहल। एह से प्राकृतिक कारनन से उत्पन्न भइल आग के देखके मनुष्य आग करके उतजोग में लागल आ ई एगो बहुते महत्व के खोज भइल जवन ओकरा जीवन के जीये के आसान राह देखावल। ऊ ओहू से लमहर खोज कइल आग के हमेसा खातिर जीयावे - जोगावे के तरीका ढ़ूढ़ के। ऊ देखलस कि आसमान से बिजरी जंगल में गिरल आ जंगल लगातार जर रहल बा। पेड़ के डाढ़ आपुस में घसराता त आग पैदा होता आ जंगल के गाछ - बिरिछ आ झाड़ - झंखाड़ केतना दिन ले जरते रह जाता। आग जरऽता त जाड़ भाग जाता, रातो के अन्हार नइखे होत आ आग के देखते हिंसक जानवर क्षेत्र छोड़ के भागे लागत बाड़न। आग लागे के अनुमान होखते कुत्ता - बिलाई रोए लागत बाड़े। मनुष्य एह सब के खूब बारीकी से देखत आग के जियाके राखे, जंगली हिंसक जानवर से आपन रक्षा करे खातिर आग के उपयोग कइल आ आग लागे आ भूकम्प आदि होखे का पहले अनुमान के जानकारी खातिर कुत्ता - बिलाई के पोसुआ बनावल आरंभ कर दिहल। पुरखा

लोग में ई धारना बनल कि जमदूत जमलोक से आके कुत्तो - बिलाई में बिराजे लें चाहे इन्हन के रूप में मनुष्य के बीचे घुमत रहेलें - ' यमस्य दूतौ चरत: जनां अनु। "

एह तरह से मनुष्य दू - तीन तरीका से आग उत्पन्न कइल आ जिया के राखल आरंभ कइल। भगवान सिंह आग के आविष्कार के बारे में बतावे का क्रम में बतवले बाड़न कि वाल्टर जी ग्रिफिथ अपना पुस्तक" दि कोल ट्राइब्स ऑफ सेंट्रल इंडिया में आग पैदा करके के बिबरन देत लिखले बाड़न कि एकर एगो तरीका त चकमक पत्थर पर लोहा से चोट क के निकलल चिनगारी के पकड़े खातिर ओकरा लगे सेमर के रुई रखल रहेला। सेमर के रुई से आग धरते सूखल पतई चाहे घास - फूस से एकरा के प्रज्वलित कइल जाला।

दोसर बिधि लोग अरणिमंथन के बतावेला। अरणि मतलब पीपर के लकड़ी के दोसर पीपर के लकड़ी पर आरी जइसन तेजी रगड़ल - घुमावल जात रहे। लकड़ी के छेद में सेमर के रुई रख दियात रहे। गर्मी उत्पन्न होखते रुई में आग ध लेत रहे। तुलसीदास जी मानस में लिखले बाड़न कि चंदन के लकड़ी के आपुस में रगड़ला से आग पैदा हो जाला। आजुओ बावाजी लोग कबो कबो मांगलिक जग आदि में एही बिधि से आग पैदा कर लेवेलें -

"अतिसय रगड़ करे जो कोई अनल प्रगट चंदन से होई।।" एगो अफिरकियो तरीका एकरे से मिलत - जुलत बतावल जाला। जवना के उलेख ऋग्वेद के तीसरा मंडल क उनतीसवां सुक्त के दूसरकी ऋचा में बतावल बा। जवना के अनुसार अरणियन के भीतर अग्नि (आग) ओइसहीं बहुत सम्हार के रखल रहेला जइसे गर्भवती के भीतर गर्भ छिपल रहेला। जागके रात बितावे वाला, एकरा में ईंधन डाल - जराके, एकर रोजे पूजा करेलें। -

अरण्यो निहित: जातवेदा गर्भ इव सुधितो गर्भिणीषु।

दिवे दिवे ईड्यो छागृवद्भि: हविष्मद्भि: मनुष्येभि: अग्नि:।।

- ऋग्वेद, ३, २९, २

दुनिया मानेला के वेद विस्व के आदि ग्रंथ ह। वेद लोक ज्ञान परम्परा के श्रुति धारा ह। लोक में लोक जवना के जी - जान के कहेला ऊ लोकवाक्य ह आ ओकरे के प्रमान मान के श्रेष्ठ सिद्ध जन अपना मुंह से बोल देलें ऊ वेदवाक्य कहाइल। जवना के अंतिम प्रमान मानल जाला। कहल गइल बा कि वेदे प्रमान ह। वेद के बात झूठ ना होखे। बुद्ध आदि महापुरुष वेदवाक्यन के खंडनो कइले बाड़ें त ओहू से वेद का प्राचीनता के बोध हो जाला।

श्रुति अर्थात् वेद, ब्राह्मण , उपनिषद आदि में आग आ ब्राह्मण जन के सम्बन्ध के विषय में जगे - जगे उलेख कइल गइल बा। तब वर्ण, वर्ग आ जाति के भेद मनुष्य के बीच पैदा ना भइल रहे। मनुष्य के उत्पन्न करे आ बचाके रखे के सीख

गइल रहे। आग यानी अग्नि आ अग्नि यानी अंगार। ई अग्नि, अंगार भा आग के दरसन हर चीज में महसूस होखे लागल रहे। सूरज में, बादर - बिजुरी में, पत्थर में, चंदन - पीपर के लकड़ी आदि में सब में अग्नि व्याप्त बा ई जान के एकरा के ब्रह्म के साक्षात् रूप कहल गइल। काहे कि ब्रह्म सब्द के अर्थ होला जे सब में व्याप्त होखे। बानी के भी ब्रह्म कहाइल। बानी माने नाद - ध्वनि। बानी में भी आग होला। बानी से उत्पन्न अग्नि के क्रोधाग्नि कहल गइल। जवन हर तरह के अग्नि पैदा कर देले। एह से ब्रह्म आ अग्नि एक दोसरा के पर्याय हो गइल। ज्ञान में भी आग होला। ऊष्मा, उर्जा आ उजास - अंजोर से भरल ज्ञान के ब्रह्म आ ब्रह्मज्ञान कहल गइल।

ऐतरेय ब्राह्मण में अग्नि मतलब आग के अर्थ बतावल बा - दाहक आ उजास - प्रकास देवे वाला। शतपथ ब्राह्मण कहऽता कि अग्नि ब्रह्म ह - " अयं अग्नि: ब्रह्मं " (शतपथ ब्राह्मण - ९.२. १.१५) ऐतरेय ब्राह्मण में कहल बा कि आगे सबके देवता हवें - " अग्नि: वै सर्वा देवता: " (ऐतरेय ब्राह्मण - १.१) ऋग्वेद सहित तमाम ब्राह्मणन में अंगिरा नाम के ब्राह्मण रिसि के चर्चा बा। ऐतरेय ब्राह्मण में बतावल बा कि अंगिरा के जनम अंगार मतलब अग्नि यानी आग से भइल बा - " ये अंगारा आसंतस्ते अंगिरस: अभवन् " (ऐतरेय ब्राह्मण - ३ .३४) इहे चीज शतपथ ब्राह्मण में भी कहल बा - " अंगारेभ्यो अंगिरस: " (४.५.१.८)

निरुक्तकार यास्क मुनि कहले बाड़न कि अंगिरा अंगारे से पैदा भइलें - अंगारेष्वंगिरा: , ३.१७.१)

ऋग्वेद के अनुसार अंगिरा नव प्रवर्तक पुरुष मानल बाड़ें - " आत् अंगिरा प्रथमं दधिरे वय: इद्धाग्नय: शम्या ये सुकृत्यया, १.८३.४)

ऋग्वेद में ही अंगिरस, अंगिरोभि:, अंगिरोभ्य: आदि के बहुवचन में बेवहार बा। अंगिरा यानी अग्नि भा आग। अंगिरा से अंगार आ अंगार से अंगिरा के जनम बतावल बा। कई जगह पर आग के अंगिरस कहके संबोधित कइल गइल बा। अंगिरस लोग के अग्नि के पुत्र कहल गइल बा - ते अंगिरस: सूनवस्ते अग्ने: परि जज्ञिरे - १०. ६२. ५)

असल में जब मनुष्य आग भा अग्नि यानी अंगार के उत्पन्न करेके सीख गइल, तब ओकर उपयोग जंगल - झाड़ जराके जमीन के कृषि जोग बनाके अन्न - औषधि के उत्पादन आरंभ कइल। उत्पादन के सू आ करनेवाला के र मिल के सब्द बनल सुर। सुर के ही देव भा भूदेव आ अग्नि यानी ब्रह्म के आविष्कार करे क चलते ब्राह्मण भी कहल गइल। आजुओ लोक ब्राह्मण के ब्राह्मण देव भा देवता चाहे भूदेव कहके आदर - सम्मान देवेला। धरती पर अग्नि भा अंगार के खोज कृषि करेके प्रयोग सुर, देव, भूदेव भा ब्राह्मण लोग कइल चाहे आग के आविष्कार आ खेती के आरंभ करे वाला जन- समुदाय के सुर, देव, भूदेव आ ब्राह्मण कहल गइल।

चूंकि लोक में परम्परा से ई बात श्रुति बनके बिराजमान बा कि ब्राह्मण लोग ही सुर भा देव ह जे धरती पर कृषि के रूप में अन्न आ औषधि आदि के उत्पादन आरंभ कइल। एह से आजुओ जब अनाज जोखाला त पहले ओह अनाज के ढ़ेरी से अंगऊ निकाल दियाला। अंगऊ त अनाज के अगवड़ हिस्सा होला। बाकिर ई सब्द अंगार आ अंगिरा के इयाद दिलावऽता। लोक में अगरिया यानी जन समुदाय के आगे - आगे चलके विकास के राह धरावे वाला बा जवना अग्रणी भूमिका वाला कहल जाला इहो कुल्ह सब्द अंगार, अंगिरा आ अग्नि के ही विकसित रूप ह। ब्राह्मण के इहे कर्तव्य आ दायित्व ह कि ऊ आग जइसन तेज, उर्जा - ऊष्मा सम्पन्न होके समाज के आगे के राह बतावे। अंगार आ आग से ही अग्रिम आ अगवड़ सब्द बनल बा। ब्रह्म अर्थ आग आ ज्ञान दूनो होला आ दूनों के खोज आ समुचित प्रयोग करेवाला के ब्राह्मण कहल गइल। मनुष्य में श्रेष्ठ ई ब्राह्मण अग्नि के मदद से यज्ञ आ अग्नि हवन करत रहस, जवना से आसमान में बादल बने आ बरिसे ताकि समय पर बारिस होखे आ उत्तम खेती - किसानी होखे।

काठक संहिता आ तांड्य ब्राह्मण में कहल बा कि ब्राह्मण ही आग हवें, आग्नेय हवें -

" आग्नेयो हि ब्राह्मण:। " (काठक संहिता, २०.१०) आ

आग्नेयो ब्राह्मण: (तांड्य ब्राह्मण)

ई कुल्ह बात तब के ह जब ब्राह्मण, क्षत्रिय (राजन्य) वैश्य आ शुद्र क के वर्ण के बंटवारा ना भइल रहे। एके परिवार आ जन समुदाय के लोग अपना अपना गुण - कर्म के अनुसार संबोधन आ सम्मान पावत रहे। बहुत बाद में अपना रुचि के अनुरूप दायित्व वरण करे के कारन वर्ण - बेवस्था आ जन्म के अनुरूप नवजात के जाति बंटाए लागल। तबो एह लोग के बीच ऊंच - नीच, छोट - बड़ भाई आ छूत-अछूत के भेद-भाव ना रहे भा ना के बराबर रहे। ईसाइयत आ इस्लाम के आगमन के साथे ई भेदभाव भारत में अवतरित भइल। ताकि ब्राह्मण जन के अगुआई में चले वाला सनातन संस्कृति के अनुयायियन - उपासकन के बीच दलित, पीड़ित, वंचित, शोषित, वनजीवी के नाम पर भेद-भाव पैदा करके आपन उल्लू सीधा कइल जा सके। जब - जब सनातन संस्कृति पर आघात करके के बिदेसी साजिश रचाइल त अपना मुख से निकलल ज्ञान के माध्यम से समाज के अगुआई करेवाला ब्राह्मण, अपना बाहुबल आ धैर्य सक्ति से समाज के कवनो क्षति से बचावे खातिर कवनो हद तक जाके जूझेवाला क्षत्रिय, अन्न, औषधि सहित जीवन खातिर जरूरी हर संसाधन के संगिरहा करके बेवस्था करेवाला वैश्य आ सबके सङ्गे हिल - मिल के सेवाभाव से जुड़ल - जुटल शूद्र जन के तरह - तरह से भरमाके आपुस में लड़वावे के कुत्सित प्रयास होत रहल आ आजुओ हो रहल बा। एही तथ्य के प्रतीक, उपमा, रूपक आदि के जरिए कहल गइल कि यज्ञपुरुष के मुख से यानी

उचरत ज्ञान से ब्राह्मण, बाहुबल से समाज के हर क्षति से बचावे वाला क्षत्रिय भुजा से, अपना बुद्धि आ जांगर (जंघा) के जोर से समाज का भोजन आदि बेवस्था करेवाला वैश्य जंघा से आ सभका खातिर अपना प्रतिभा आ परिश्रम के अनुरूप सतत् सक्रिय रह - चलके समाज के सेवा करेवाला शूद्र जन के पांव से उत्पन्न भइल बतावे के तथ्य के विभेद पैदा करेके उद्देश्य से अलग-अलग तरीका से कुव्याख्या कइल जात रहल बा। जबकि ई सभे एके परिवार आ खून के लोग बा। जे अपना - अपना मेधा आ वृत्ति के वरण करके समाज खातिर लागल, जागल आ पागल रहल बाड़ें।

प्रो. जयकान्त सिंह ' जय’

◆ ◆ ◆

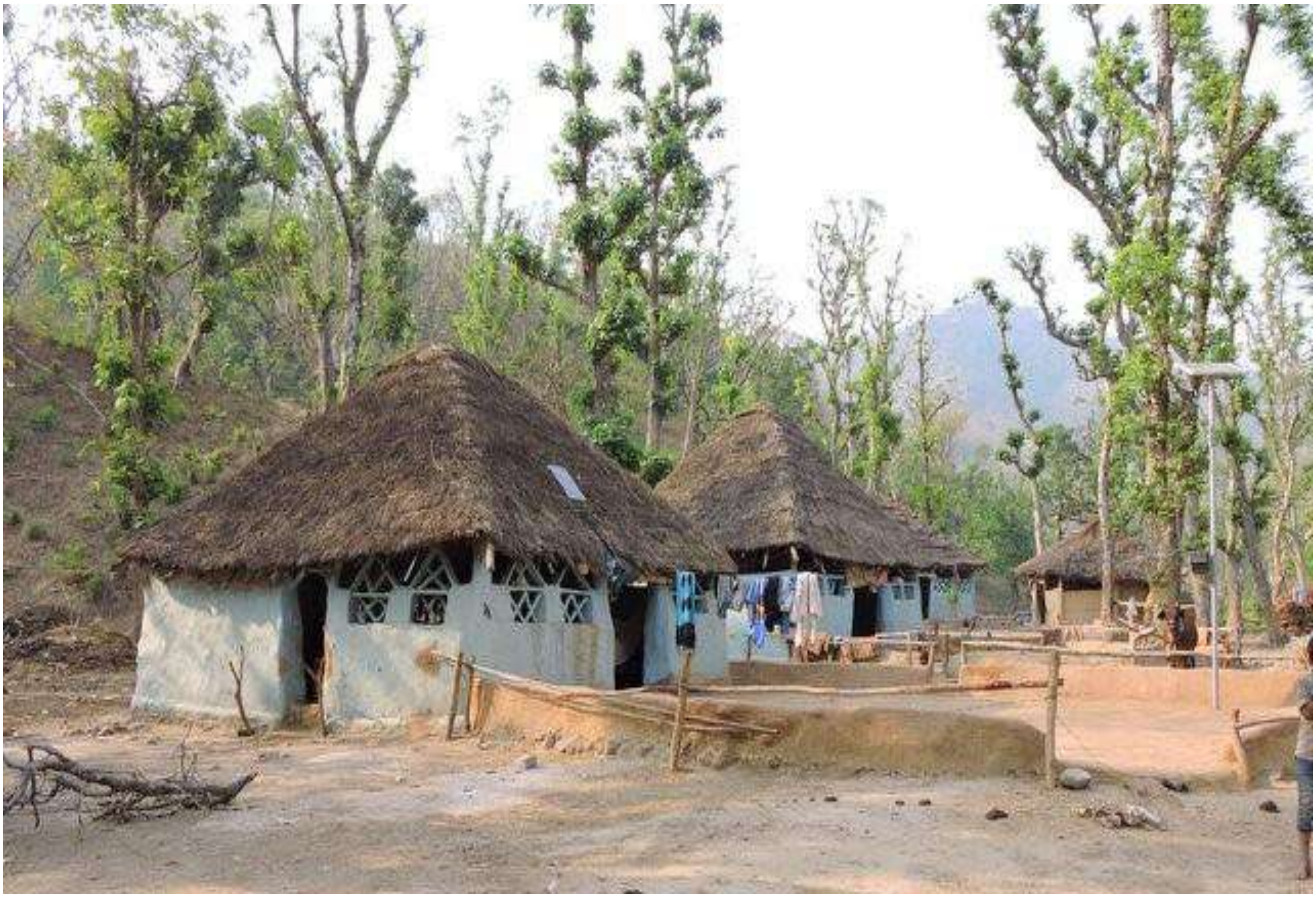

भोजपुरी ग़ज़ल

बिटवा जबसे बहके लागल
मइया के मन डहके लागल

लालच के अदनी लुत्ती से
रिस्ता नाता लहके लागल

साँझ पराती आजी गवली
अँगना दुअरा चहके लागल

सभका हाथे भाला बरछी
बिन बातन ही ठहके लागल

रउआ जब अइनीं हियरा में
मन के सुगना सहके लागल

आगी खनिया बतिया सुनके
ठंडो पानी दहके लागल

◆ ◆ ◆

सुरेश गुप्ता
बेतिया

आन लाइन शापिंग

आज तकरिबन तीन बजे जब हम अंउजा पथार लिखे बइठनी त अचके में फोन घनघनाइल। अनेरिया नंबर देख के मुंह ओसहीं फेर लेनी जइसे अनेरिया गोरू के देख के लोग मुँह फेर लेवे ला। बाकिर मोबाईल के रिंगटोन भारी लरछूत ह। जबले उठइबऽ ना बाजत रही। कबो - कबो दोसरो के रिंगटोन बाजत सुन के लागेला कि केहु फोन कइलस।आंन्हर कुकुर बतासे भूंके वाला हाल हो जाला। चट देना हाथ बगली में चल जाला।

बाकिर हमरा साथे ई बात ना रहे। फोन हमरे बाजत रहे।ई कुल्ह सोचते रहीं कि मोबाइल फेर बाज गइल। हार - पाछ के उठवनी त पता चलल कि कवनो आन लाइन फेरी वाला के नंबर ह। मलकिनी कवनो पारसल मंगवले रहीं। फेरीवाला लोकेशन पूछत रहे। अच्छा एहिजा हम आनलाइन शोपिंग के फेरीवाला से बराबरी क के भारी अपराध क रहल बानी। कहाँ राजा भोज आ कहाँ भोजुआ तेली? दूनो बराबर! राजा भोज के जमाना में भोजुआ तेली के गुंजाइश रहे। एहिजा आनलाइन के जमाना में भोजुआ तेली के गांव से बिदाई हो गइल।एकरा मार से फेरीवालु लोग त गुलर के फूल हो गइल। होईहें काहे ना, बड़का - बड़का घोड़ा डूब गइलन त गदहवा कहे कतना पानी! कतना सेठ महाजन कुंहकत बारन। कतना लोग के मूधी - पैना टंगा गइल। दोकानदार लोग दोकान खोल के लक्षिमी जी के अगरबत्ती देखा के दिन भर माछी मार रहल बा। बोहनी हो जाय त बड़ भाग। आज हमरा बुझाइल पुरनिया सांचो कहत रहन कि गंहकी, भगवान होलन। भगवान जल्दी दर्शन कहाँ देवेलन। उनका खातिर बड़ा तपस्या करे के पड़े ला। तब जाके उ परगट होलन।

एने कुछ बरिस से लोग माथा पीट - पीट के कह रहल बारन कि बजार से भगवान गायेब हो गइल बारन। साफे दर्शन नइखन देत।

भगवान दर्शन काहे देस? जब उनका घर बइठले सूई से सूतारी तक, छूरी से तलवार तक आ खटमिठी से अंचार तक भेंटा जाए के बा त देह डोलवला के का दरकार। हेह दोकान से होह दोकान मकौड़ा मरला के का मतलब?लोग कबीर के राह प अबके ईहे चल रहल बा। कबीर एक बेरा बइठल रहन त ओही घड़ी एगो सोना के गगरा उनका से चार - पांच बांस के दूरी प लोंघरात जात रहे। कबिराइन कहली कि देखीं हऊ गगरा लोंघरात जाता ऊठा के लें आईं।" कबीर कहलन, "उठ के कबीर कबो गगरा लिहें,राम करिहें त घर बइठले दिहें। "एही से बजार में अब ऊ रवनक नइखे। हालांकि भगवान के रिझावे खातिर भक्त लोग अपना से उठा नइखन राखत। ऊ कबो सेल के शंख फूंकऽ तारन, कबो छूट के कीर्तन करत बारन त कबो मेगा लवटरी के महा यज्ञ क रहल बारन। बाकिर भगवान काहे के सुने जास। भगवान के ईमेजोन, शोपिफाई, राकुटेन, जलैंडो, आ अलीबाबा के कीर्तन आ सेवा अतना नीमन लाग रहल बा कि दोसरा के चढ़ाव के ओरे तकते नइखन।

अच्छा हई ईश्वरी माया देखीं। ई भारत ह। एहिजा कुछुओ हो सकेला। जवन काम बरजीं ऊ त अस क के होला। गांधी बाबा स्वदेशी अपनावे के जतने कहलन ओतने हमनी के बिदेशी अपना रहल बानीं स। बुद्ध कहलन कि मूर्ति पूजा ना करे के चांही लोग उनके मूर्ति बनावे लागल आ रामदेव बाबा जतने लोग के योग क के फूर्ति बढ़ावे के कहलन , लोग ओतने काहिल होत चल गइल।

आन लाइन शापिंग लोग के हाथ में अलाउद्दीन के चीराग लेखा बा। रउआ चाही त घर में खाना मत बनाईं। खाली अउडर दिंही आ बनल-बनावल छप्पनो भोग छू मंतर में हाज़िर! एही से बिदेशन में अब घर से चुहानी के कंसैप्ट हटा देल गइल। जब सबकुछ पके-पकावल मिल जाए के बा त घर में चुहानी बना के जगह टरला के का दरकार?

देखीं हमार मलकिनी आज चुल्हा नइखी जोड़ले। चुहानी एकदम हड़ताल प बा। ऊ बाहर कुछो मंगवले बारी। अवाज दे रहल बारी। लागता कि आनलाइन खाना आ गइल। जब तकले हम पंघत क के आवऽ तानी र उआ सभे ई अंउजा पथार पढ़ी सभे।

जय राम जी की।

◆ ◆ ◆

बिनोद सिंह गहरवार

साँढ़

अनिल कुछ जरूरी सामान खरीदे जनता बजार जात रहलें। बाजार जाय के राह में कुछ सरकारी मकान दूनों ओर पड़त रहे। सरकारी मकान के नियरा जसहीं अनिल पहुँचलें त ऊ देखत बाड़ेन कि एगो करिया मोटा तगड़ा साँढ़ ओने से एने आवत बा। ओने से एक जना एने आवत रहलें त उनका देख के साँढ़ मुड़ी ना झटलस, ई देख के अनिल के हिम्मत बढ़ल आ ऊ धीरे धीरे मकान के बीच में पहुंच गइलें। साँढ़ बायें ओर से आवत रहे ई देख के ऊ दायें ओर खड़ा हो गइलें कि साँढ़ आगा बढ़ जाव त हम एने बढ़ जायम।

बाकिर ई का ? साँढ़ बायें से बढ़ के इनका ओर आवे लागल। साँढ़ के सिंग एक फीट से सवा फीट ले लम्बा होई। साँढ़ आ अनिल के बीच के दूरी खाली दू फीट बाँचल रहे।इनकर सांस जोर जोर से चले लागल आ कंठ सुखे लागल।ऊ जहवाँ खड़ा रहस ऊ मकान के गेट अन्दर से बंद रहे। केहू अन्दर से नजरो ना आवत रहे। ऊ हिम्मत क के ऊ मन ऊ कान्ह पर राखल गेरूआ गमछा से साँढ़ के हट हट कह के हटावे लगलें। साँढ़ उनका के देखत रहे आ ऊ साँढ़ के। पता ना काहे दो साँढ़ आधा मिनट के बाद आगा बढ़ गइल। अनिल के लागल साँढ़ कवनो अदृश्य शक्ति के आज्ञा के पालन करत होखे। साँढ़ के लागल होई कि ई मनई के हाथ में गेरूआ गमछा रखले बा त ई जरूर भगवान शिव शंकर के भक्त होई,आ हम ठहरली भगवान शिव शंकर के सवारी एह से ई मनई के नोकसान पहुंचावल ठीक ना कहाई। अनिल के लागल कि आज ओकरा साक्षात भगवान शिव शंकर के महिमा के दरसन हो गइल। ऊ मने मन भगवान शिव शंकर के गोहरावे लगलें।

◆◆◆

मनोकामना सिंह अजय,
छोटा गोविंदपुर, जमशेदपुर,
संपादन सलाहकार " मानवी "

'सुनगुन' (दिनेश पाण्डेय जी के भोजपुरी कविता संग्रह) पर मीनाधर पाठक जी के नजरिया-

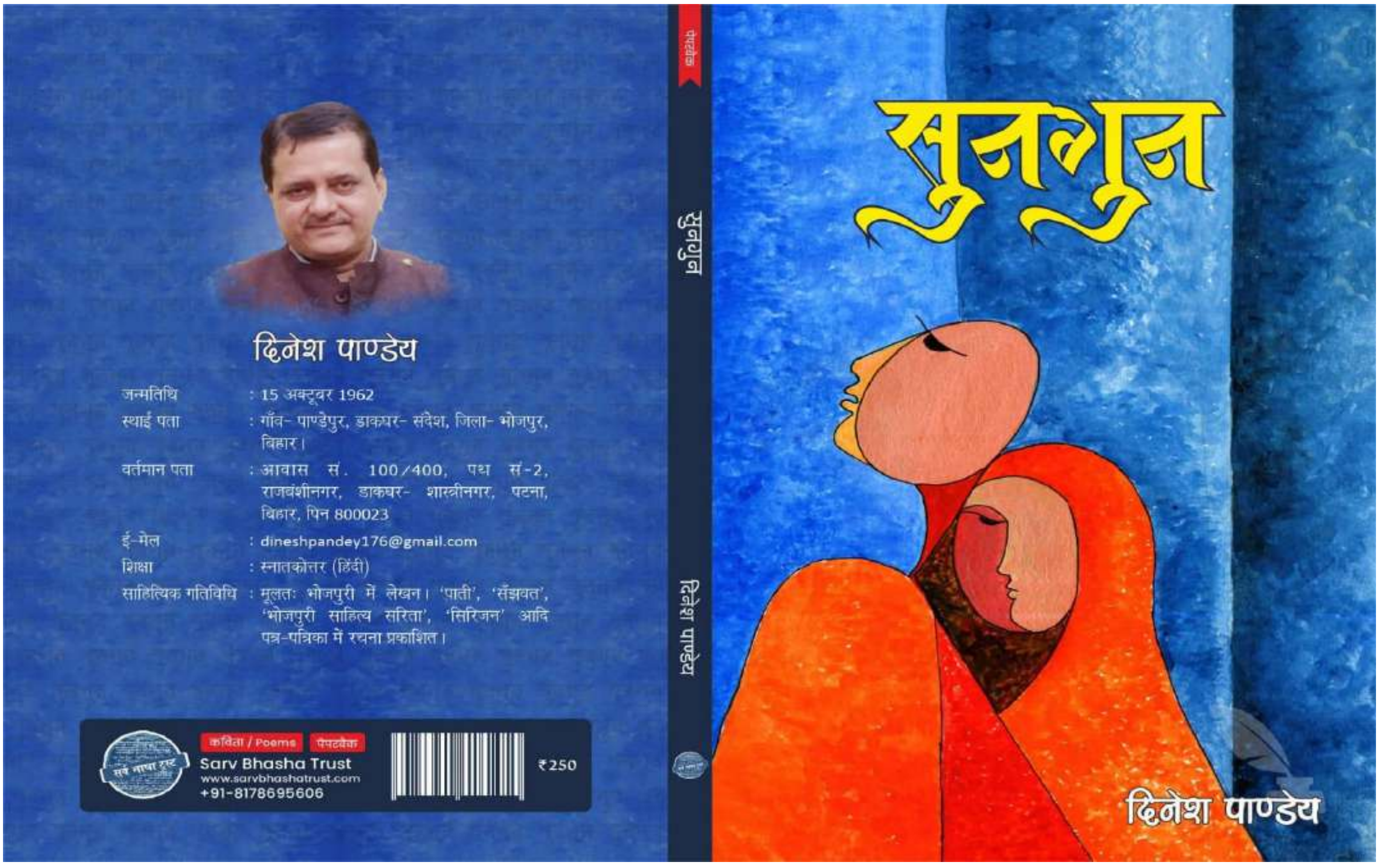

भोजपुरी कविता के कई गो रूप बा जवना में प्रमुख रूप से गीत, बिरहा, फगुआ, कजरी आ पचरा आदि के देखल जा सकेला। एकरी अलावा भी बहुत कुछ लिखल गइल बा आ लिखल जा रहल बा। जवना में भोजपुरिया जनजीवन के लोक संस्कृति, रीति रिवाज आ जीवन शैली के झाँकी देखे के मिलेला। फिर चाहे ऊ लइका के जनम होखे, चाहे मूड़न, छेदन, जनेव चाहे बियाह। छोट से छोट संस्कार पर गावे खातिर जदि कहीं गीत मिलेला, त ऊ भोजपुरी में। खैर...

भोजपुरी के एगो किताब हमरी हाथे लगल

बा। 'सुनगुन' । ई काव्य संग्रह आदरणीय दिनेश पाण्डेय जी के हा। ए संकलन में अतुकान्त से ले के दोहा, कुंडलिया छंद, मुक्तक, गजल, हाइकू आ

गीत के किसिम-किसिम के रस के आस्वादन कइल जा सकेला। कुछ बानगी ——-

'बिनय'

सभकर जिनिगी में

हरख रहे।

सीतल बयारि सुहुरावे हरपल

दूर नजर से झरख रहे।

बनल रहे जन-जन से प्रीति,

पइस न पावे अनगढ़ रीति,

तत्त नकारा सागर डूबे,

कुछ नरम रहे,

कुछ तरख रहे।

हे ईस्सर,

शुभ - मंगल बरिसे,

सत् नियाव के

परख रहे।

किताब के आरम्भ बिनय से भइल बा। जवना

में जाति धर्म से परे सबके खुशहाली के कामना कइल गइल बा। हमरी संस्कृति के मूल भाव

ईहे हइए ह, सर्वे भवन्तु सुखिनः।

हमरी जाने में कविता, देखल-सुनल, जीयल-भोगल अपनी भावना आ विचार के छंद, अलंकार आ भाषाई कलात्मकता के साथे व्यक्त करेले। अंतर के भाव भूमि पर उपजि के ओकर भाव प्रकट करेले आ पढ़ि के ओही भाव से पाठक रससिक्त होलें। जइसन कि हम पहिलहीं लिखले बानीं कि ए संग्रह में कई मेल के रचना बाड़ी सन। एगो दोहा देखीं सभे --

काहे खती भुचेंगनी, बइठ अगोरलि पीठि।

करतब कुछ अवरी लगे, कहईं अवरी डीठ।।

असही एगो कबिता बिया, 'चुरिहारी'। आजु के समय में पारम्परिक पहिनाव ओढ़ाव में अंतर

आइल बा। ए से लगभग हरेक व्यवसाय के रूप-रंग, कार्यशैली में उलटफेर भइल बा। पहिले के

समय में चुरिहारी लोग चंगेली में चूड़ी भरि के मूड़ी पर लिहले गाँव-गाँव बेंचत रहली। भरल-पुरल घर के होखें चाहे सामान्य घर के, सब मेहरारू लोग बिआह-गवने, तीज-तिउहार चुरिहारी से चूड़ी पहिने। बेटी बहिन आवें त चुरिहारी के बोला के उनहूँ के भर-भर हाथ चूड़ी पहिरावल जात रहे आ रुपया पइसा से ले के अनाज-पताई ले सब दियात रहे। एहिसे ओकर खेवा-खर्चा चलत रहे बाकिर अब भर हाथ चूड़ी खाली शादी बिआह के अवसर ले रहि गइल बा। ओकरी बाद एगो कड़ा चाहे दूगो चूड़ी, बस। अब, जब सब दिन के ईहे

पहिनाव बा त चुरिहारी बेचारी के चूड़ी कइसे बिका ? कविता में चूड़ी ना बिकला के दुःख चुरिहारी बयान करऽताड़ी। देखीं सभे --

भर चंगेली/ भर कलाई/ काँच के चूरी।/ आज दिनभर के कमाई/ चंद रुपया/ कुछ अथेली।/ का

केहू झेली?/ मुश्किल लड़ाई जिनगी के।/ रह गइल सब साध/ असहीं अधूरी।/ आज ना अइली सुहागिन।/

रह गइल छूँछे अभागिन।/ कौन आई साँझ खानी ?/ जूरी कइसे अन्न पानी?/ ना भइल बेंची अबो

तऽ/ रात के जानल कहानी।/ दहिनवारी आँखि के/ बायीं किनारे / चुभ रहल धूरी ।।

सउदा ना बिकाई तऽ अन्न-पानी, नून-तेल कइसे जूटी? ए भाव के ले के कविता के बुनावट

भइल बा। एहीतरे किताब में ढेर कुल कविता बाड़ी सन जवनामें किसिम-किसिम के भाव भरल बा जइसे 'माई री' कविता में

पशु-पक्षी में माध्यम से केतना गहिर बाति कहल गइल बा। देखल जाउ--

मछरी होइतीं/ झिंझिरी खेलतीं/ घुमरी परतीं/ उलटी धारे गउमुख चढ़तीं/ जेने चहितीं/

ओने जइतीं/ नदिया तरतीं/ कवनो मछुआ डालित महाजाल त ना ?/ सुगनी होइतीं/ सोना नभ

में भाँवरि परतीं/ सुरुज-चनरमा कावर उड़तीं।/ काइनात के चारू ओरी/ पाँख पसरतीं / कउन

अहेरी बनित जिउ के काल त ना?/ हरिना होइतीं/ सघन अरन में कुरचत रहितीं/ दूभि

चरतीं/ अमरित पिअतीं/ बरगद छाँहीं सेज डसइतीं/ थकन बिसरतीं/ कउनो बघवा नोचित तन के खाल त ना ?

ए धरती पर सबके आजादी आ सुरक्षा के साथे जीए के हक बा। ई धरती माई सबके हई। एसे सबके 'वसुधैव कुटुम्बकम' के भावना से मिलजुल के रहे के चाहीं बाकिर आजु के स्थिति भयावह

बा। लोग अपनिए देस में बेगाना हो गइल बा। क्षेत्रवाद के माहुर देस के हवा में एतना

घोरा गइल बा कि जल, जंगल, जमीन आ आकास पाताल ले बँटा गइल बा। एसे, आदमी त का ! पशु-पक्षी आ मछरी ले अपनी आजादी आ सुरक्षा के ले के ससंकित बा।

'सुनगुन' के कविता हम दू बेर पढ़ि भइल बानीं बाकिर एकरा पर लिखे जब-जब बइठनीं तब-तब

बइठले रहि गइनीं। काहें कि ई सब रचना कुल हमरा 'गूंगा के गुड़' नियर बुझाता। आदरणीय

दिनेश जी के शुद्ध परिष्कृत भाषा चमत्कृत करतिया बाकिर कहीं-कहीं ओकरा के बुझे में

तनी मूड़ी सुघरावे के पड़ता। हमके ई भाषा छायावादी कवियन नियर बुझाइल ह।

जइसन कि पहिलहीं हम कहनीं हँ कि संग्रह में संजोग, बिछोह से ले के प्रकृति चित्रण, हास्य आ चोख व्यंग्य ले मिली। कहीं-कहीं ओज के दर्शनो करब सभे।

अभिधा के बजाय लक्षणा आ व्यंजना के प्रयोग ढेर

कइलेबानीं दिनेश जी।

कविता पढ़ला में जेतना हमके रस मिलेला ओतने कविता पर लिखल हमरा खातिर तनी भारी

बुझाला। एहीसे ई किताब एतना दिन से सिरहाने धइले रहि गइल। कई-कई बेर लिखे बइठियो

के दू अक्षर ना लिखाइल हमसे। आजु तनी कलम ठोक-ठेंठा ई लिखनीं हँ। त ई जवन कुछ लिखाइल बा, ऊ एगो पाठकमन के उद्गार बुझल जाई, कवनो समीक्षा ना।

काव्य संग्रह 'सुनगुन' में कईगो खंड बा आ हर खंड में मेल-मेल के रचना बाड़ी सन जवन

मजिगर पठनीय बाड़ी सन बाकिर हमरी जइसन पाठक के तनी शब्द-अर्थ देखे के पड़ल ह। एगो

उत्कृष्ट आ एकेडमिक स्तर के कविता संग्रह खातिर आदरणीय दिनेश पाण्डेय जी के हार्दिक

बधाई पहुँचे।

चलत-चलत एगो कुण्डलिया छंद पढ़ीं लोग--

डुगिरावत चलि जात जड़, रत्तीभर मलखंड।
मन में भरल मुगालता, भुज भरि में ब्रह्मंड।
भुज भरि में ब्रह्मंड, गरब भर मन गुबरीला।

देखि छुदुर के ढंग, सुधी समुझत बिधि लीला।

ता खन इक गड़िवान, माँच पर बिरहा गावत।

गुजर गइल अनजान, उपर पहिया डुगिरावत।।

****

रचनाकार : दिनेश पाण्डेय

प्रकाशक : ‘सर्वभाषा ट्रस्ट’, दिल्ली

।।इति।।

◆◆◆

मीनाधर पाठक

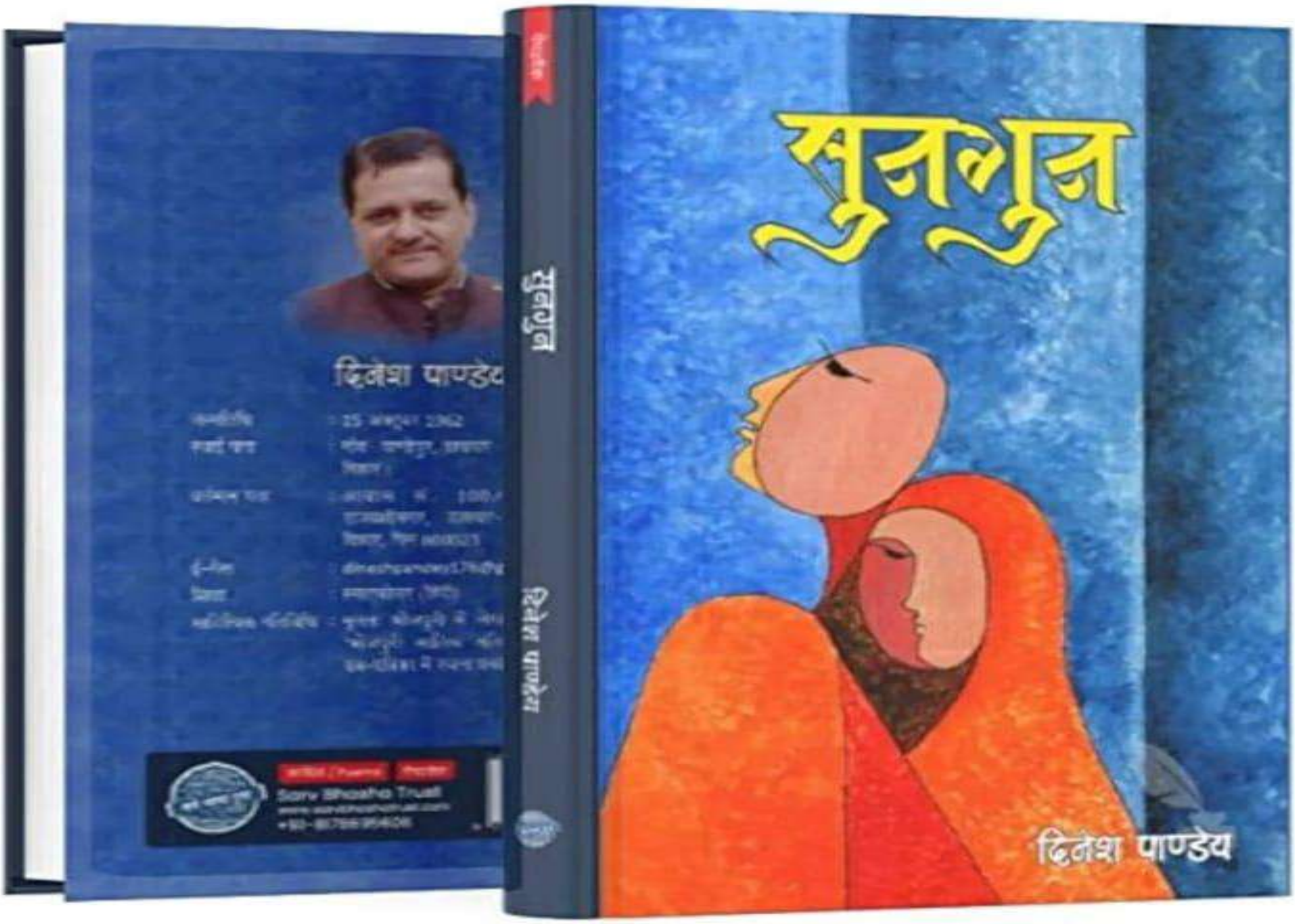

प्यार चाहेला समर्पन

आँखि के काजर दहाइल मति बहावऽ लोर।
देखि के तकलीफ तहरो होत बा मन थोर॥1॥

प्यार पर पहरा लगवले बा जमाना क्रूर,
का पता कब खोजिले बेइज्जती के ओर॥2॥

प्यार चाहेला समर्पन जानिजा सुखराशि,
हीर राँझा के कथानक का परल बा भोर॥3॥

अब अगोरब ना बइठि के खेत के ओ मेड़,
देखि के कहिहऽ न तूँ हूँ लोग में चितचोर॥4॥

नाम ना बदनाम होखी ए बचन के साथ,
टूट पायी ना जियतमे प्रेम के ई डोर॥5॥

◆ ◆ ◆

माया शर्मा,
पंचदेवरी, गोपालगंज
(बिहार)

जवना सुर में तू ना बाड़ऽ

जवना सुर में तू ना बाड़ॐ
गीत कवना काम के
साँझ आइल भोर गइल
रात के हम का कहीं
उगले सुकवा के तरेगन
भीनसहर के का कहीं
सुतल जागल मनवाँ थाकल
प्रेम रहल बस नाँव के
जवना सुर में तू ना बाड़ऽ
गीत कवना काम के

अंगना दियरी देहरी बाती
ई का कवनो जिनगी ह
रोवेला पनघट कहीं त
पनिया भरल तिरगी ह
छूट के कहीं दूर बसलऽ
रिस्ता खाली नाँव के
जवना सुर में तू ना बाड़ऽ
गीत कवना काम के

अब त आवऽ जिनगी बा
नाँव तोहरे ई लिखल
नाहीं कवनो पाती पढ़नीं
ना लिखनीं हम गीत गजल
तोहरे नाँव भरल मंगिया
चुनरी कवन काम के
जवना सुर में तू ना बाड़ऽ
गीत कवना काम के

◆ ◆ ◆

डॉ मधुबाला सिन्हा
मोतिहारी,चंपारण
बिहार

दाढ़ी बनाम मूँछ

पूछलस मूँछ से ,
हमसे भईल बा का भूल ?
तोहरा पऽ सब नाज करेला,
हमके मिटा देला समूल ||
एक बा खानदान हमनी के ,
पर इतना बा काहें भेदभाव ?
बढ़ल दाढ़ी काट दिहल जाला,
मूँछ पर सब देवेला ताव ||
बोललस मुसुकुरा के मुंछिया ,
बहिना ! जनि होखऽ तू उदास|
बदल रहल बा फैशन अब ,
बदल रहल बा मानव लिबास ||
नारी रखे लागल बा बाब कट ,
लम्हर केशन पर नर के बा नाज |
मरद सगरो बनत हवें मूँछमुंडा,
हमनियों प होत बा हमला आज||

◆◆◆

राम प्रसाद दुबे "राम "
गाजियाबाद

जवाब मत माँगीं

हरेक सवाल के रउरा जवाब मत माँगीं।
रहीं हिसाब में अब बेहिसाब मत माँगीं।।

मिली जरूर जब हक़दार रउरा बन जायेब,
तनिक सा दाद पर सँऊँसे ख़िताब मत माँगीं।

चलन के बात बा, दिल में दरद त उठके रही।
क्षणिक मुस्कान पर रउरा गुलाब मत माँगीं।।

बताई मैकदा से कम कहाँ इ मोर अंखिया बा।
नज़र में झाँक लीं,बाकिर शराब मत माँगीं।।

कठिन हालात "अंशु "हो गइल बा 'दुनिया के।
जमीं पर पांव रख लीं, आफताब मत माँगीं।।

✍️ डॉ अनिल कुमार दुबे "अंशु"

◆ ◆ ◆

नाम लिख जालें

ऊ अनेरे सलाम लिख जालें।
शाम केहू क नाम लिख जालें।।

आन आ शान के कसम खाके।
बात सब खास आम लिख जालें।।

दर्द ना आह ना कहीं शिकवा।
साँच साँचे कलाम लिख जालें।।

इश्क के बात पर नरम रहके।
खुद ब खुद ही गुलाम लिख जालें।।

राज क बात "अंशु" ना होला।
प्रीत के नाम शाम लिख जालें।।

✍️ डॉ अनिल कुमार दुबे "अंशु"

◆ ◆ ◆

दिल के पटल के खोल के

दिल के पटल के खोल के,रख दीं कह कहाँ।
बिक जाइ सब बिन मोल के,रख दीं कह कहाँ।।

नेकी कइल बिसार दी, संसार के सभ लोग,
मौका मिली दुत्कार दी,संसार के सभ लोग।
दिल में दरद बा तोल के, रख दीं कह कहाँ।
बिक जाइ सब बिन मोल के, रख दीं कह कहाँ।।

जज़्बात के समीधा चढ़ल,मजबूत कान्ह पर,
जिनगी उदास ना रही,किस्मत का बान्ह पर।
सरगम सजल बा बोल के,रख दीं कह कहाँ।
बिक जाइ सब बिन मोल के, रख दीं कह कहाँ।

रास्ता निहारत बइठ के,केकर बीतल बा दिन
अनमोल बा भीतरी भरल,वोहिमे छुपल बा दिन।
अनहद बाजत बिन ढ़ोल के रख दीं कह कहाँ।
बिक जाइ सब बिन मोल के, रख दीं कह कहाँ।

◆ ◆ ◆

डॉ अनिल कुमार दुबे "अंशु"
सिवान (बिहार)

◆ ◆ ◆

मिडिल के पढ़ाई

हमनीका छोट- छोट रहनी जा।ईहे एगारह बारह साल के। वोही सालि पिपरा खेमकरन प्राइमरी स्कूल से पाँचवा क्लास पास क के मिडल स्कूल में दरजा छ में नांव लिखावल गइल रहे! गाँव से तिरछे करीब एक किलो मीटर दूर रहे स्कूल।

तब पिपरा आ रारि के सीवान पर परासे के जंगल की पूरब जिला परिषद के प्राइमरी स्कूल के नया बिल्डिंग बनि गइल रहे। हमनीका पाँच क पढाई वो ही में भइल। वोही के उत्तर पोखरी के वोह पार गांव जवार की सहयोग से चंदा जुटा के मिडल स्कूल के खपड़इल के दू कमरा ,ओसारा आ ओसारे में एक किनारे आफिस क कोठरी नया नया बनल रहे।टाट-पट्टी घर से ले जाए के रहे। हमनी का छठवां क्लास में तीसरा बैच रहे।दू बैच सात आ आठ के हमनी से आगे रहे। मिडल इस्कूल के पढ़ुअन में रारि,बान्टोला,बीरपुर, मरहवा(हमार गाँव), चतुरी,टेकनपुरा, बहोर , जमुनाछापर आ मझवालिया तक छ सात गाँव के लइका आवें सं तब लड़किन के पढावे के चलन ना रहे,ए लिये एको लड़की ना पढेसं। । दिने त पढ़ाई होखबे करे,फाइनल क्लास में रातियो खा पढ़े जाए के परे। स्कूल में तीनि जाना मास्टर रहे लोग।दू जाने भिर्गुनाथ पंडीजी आ सिउनाथ पंडी जी त पाँच किमी दक्खिन मरकड़ा गांव के रहे लोग । भिर्गुनाथ जी रहें हेड मास्टर ऊ दर्जा आठ के पढावें,बहुते कड़ख मिजाज़ के रहसु । कक्षा आठ में एक जने हमार बड़ भाई आ गाँव के अउरी पाँच -छह जाना लइका पढ़े लोग। फाइनल क्लास में वो लोग के रातियो खा पढे जाये के परे,

तनिको लेट होखे त बडका पंडी जी खड़ाऊँ लेके परि जाईं आ उल्टा सीधा जवाब दिहला पर दुचारि खड़ाऊँ त खाही के परिजासु। कुल्हि पनरह सोरह जने पढ़वइया दर्जा आठ में रहे।।दुनों कमरा आ ओसारा मिलि के कुलि तीनि गो क्लास ६,७आ८चले।आ भिर्गुनाथ पंडी जीआ सिउनाथ पंडी जी के अलावे मझवलिया के इसहाक मोलवी वोही सालि नया नया आइल रहें, उ दर्जा छव के पढावें।

अबहीं स्कूल खुलले साले दू साल भइल रहे बाकि सिउनाथ पंडीजी आ भिर्गुनाथ पंडी जी दूनो जाने में छठि आंतर रहे। एकही गांव के पटिदार रहे लोग ,वो लोग मेंअचिको पटरी ना खाय ,काहे कि दूनों जाने प्रकांड विद्वान बुझाय लोग।संस्कृत के पण्डिते लेखा अक्सर आपस में बाजल करे लोग,का जाने जे तनखाहे खातिर भा अपना विदवत्ता के चलते ।दूनो जाने भरसक एक लगे ना बइठे काहे की एक जने जवन बाती कहें वोकरा के दुसरका जने जरूर काटि दें।इसहाक मोलवी रहलें बड़ा हँसमुख आ मजकिहा स्वभाव के । उहाँ का दूनो जाने में बाताकही होके त खूबे रंग लीं।तबतक इस्कुलवा सरकारी ना भइल रहे।पढ़वइया लइकन से जउन फीसि फक्कड़,मिले वोही से ऊ लोग क तनख़्वाह मिले।ज्यादा से ज्यादा महिन्ना में पनरह से बीस रुपया ले। ठंढी में स्कूल के सामने मैदान में क्लास लागे।

हमके इयाद परता कि ठंडी के सीजन में जब कोल्हुआड़ चले आ चाना मटर होखे त कबो केहू,कब्बो केहू पढ़वइया अपनी अपनी घर सेमिट्ठा(गुड़),महिया,कचरस, भूजा आ होरहा इस्कूले पर ले जाइल जा, आ सब मास्टर मीलि के नास्ता करे लोग आ लइकन के बड़ाई क के आसिरबाद दे लोग। हर कलास के तइयारी खातिर एगो परीक्षा प्रश्नोत्तरी खरीदे के परे जवना से हर विषय के तइयारी करावल जा।राति के पढ़ाई में सोरह जने के बिच्चे चारिगो ललटेन जरे।सब पढ़वइया चंदा लगा के केरासन तेल क जोगाड़ करे।राति के एगारह बजेले पढ़े के परे आ ओहर तीनिये बजे जगा दिहल जा। जे लइका पढ़तखां ओंघाय ओकरे चुर्की(शिखा)में रसरी बान्हि दिहल जावा।ना त मुर्गा बनाके पीठि पर बस्ता धरा जाउ।डर की मारे केहुके नीनि ना लागे।बरसाती मेढकन की तरे आगे पीछे झूमत चिल्ला चिल्ला के इयाद करे के सिस्टम रहे।पंडी जी के सुतले के छूट रहे लेकिन कहाँ उनुके सुत्ते के बदा होखे ।ओंहर ओंघाइल शुरु करें तौलग एहर आपस में खोदाखोदी आ चुहलबाजी शुरू।पंडी जी रिसिया के ऊठीं आ बीनु देखले कि केकर बदमासी रहल हऽ ,बधाई होखेलागे।पीठि आ हाथ पाँव सुहुरावत रटल चालू।फेरु थोर देर बाद उहे एक्शन।एहिलेखा पढ़ाई चले।

जब हमनी के बैच सात में चोंहपल त वोही साल स्कूल जिला परिषद ले लिहलस आ तीनि जने सरकारी मास्टर आ गइल लोग।टेकुआ के बाबू साहेब स्याम सुन्दर सिंह हेडमास्टर, भलुअनी के बाबू साहब अंग्रेजी के मास्टर आ तेनुआ के अदालत मास्टर।पहिलका तीनों जाना

मास्टर अपनी अपनी घरे चलि गइल लोग।

स्कूल के दखिन त पोखरी रहे बाकी सटले उत्तर एगो खूब छंहगर बरगद के पेड रहे जउना के छाया में क्लासो लागे। आगे करीब दस बारह कट्ठा के प्लाट खाली रहजवने में कोडि - खनिके तीनो क्लास के पढुआ कीर्षी के प्रेक्टिकल करे लोग। माटी के खूब नीमन मुलायम बना के सब लरिकन के कियारी बँटा गइल रहे जवना में फूलपत्तीआ साग सब्जी बोआय।मन परता कि वोही साल डिबलर(खूँटी वाला यंत्र)चलल रहे तऽ हमनीयो के अपने अपने कियारी में वोही से लाइन से गोहूँ बोअले रहलीं जा।

एक बेर जब दर्जा छह में रहनी जा त मोलबी इसहाक अली जी हमनी से प्रेक्टिकल की घंटा में सब्जी बोए के कियारी तैयार करावे लगलन।सब केहू अपनी अपनी घर से कुदारी ले आइल रहे हाली हाली कुदारी चलति रहे,अब छह में पढे वाला लइकन के कुदारी चलवला के अभ्यास त रहे ना।हमार कुदारी ना सम्हराइल आ एक जाने अपनिए सहपाठी गाँव के दुबे परिवार के लइका के कपार पर ठाँय से बाजि गइल,खून निकरे लागल।ऊ घासि चिखुरे खातिर मूडी नेववलें रहलन।

अब हमरा के काटे त खून नाहीं, हम चिल्ला के गश खा के गिरि गइनी आ डर के मारे दाँत लागि गइल। गनीमत रहे जे कुदरिया भोथराह रहे ओसे ढेर गहिर घाव नाईं लागल ।मास्टर साहब एक जाने बैदजी के बोला के उनुकर पट्टी करवलीं,आ दवाई दियवलीं आ फेरु होस अइला के बाद हमके आ दुबे दूनों जने की गार्जियन के बोलवा के आ समझा बुझा के घरे भेजवउलन।तबसे कान पकड़नी आ फेर फेर कब्बो स्कूल में कुदारी खुरुपा ले जाके प्रेक्टिकल ना कइनी।

◆ ◆ ◆

इन्द्र कुमार दीक्षित

देवरिया।

खेती किसानी के जिनगी

आह्नि में छान्हि उजार भइल,
कराइन से असमान देखाता।
झापटि में सब धान गिरल,
खटिया मचिया पर रोज छनाता।।
असों न खेत बोआई हेठार के
धरि माथ प हाथ सभे पछिताता।।
इहे कारन बाटे कि छोडि किसानी ,
जवान पराइ बिदेश में जाता।।

थर थर कांपत बा गुड्आ,
सिहिरावन खोंखी बोखार न जाता।
लुग्गा बिना फेंकनी फेफनाले
त फीसि बिना मुनुआ खदेराता ।।
खादि बिना न बोआइल खेत
महाजन सूदि के करे तगादा।
बूझीलें ना कवना अपराध
गरीब से काहें नराज बिधाता।।

हाल बेहाल हवे जिनिगी
निसिबासर जांगर पेरल जाता।
तब्बो न लाज ढके तन के
कबो खर्ची घटे, कबो दिया बुताता।।
लवनालेहना केजोगाड़ओराइल,
सांझे से माई के दाँत पिराता।

राति ठरे, दिनवो पियराइल,
चौबीस घंटा पहाड़ बुझाता,
फाटे बेवाई, मिले ना दवाई
त सूतल राति के हाड़ पिराता।।
काटे कटे नहिं पूस के राति ,
गद्दारजाई के आता न पाता,
फाटि के चादर तार भइल,
कउड़ा के न कउनो जोगाड़ देखाता।।

◆ ◆ ◆

इन्द्र कुमार दीक्षित
देवरिया।

एक फूँक बीड़ी

“ए बबुआ! एक फूँक बीड़ी द आ ई अठन्नी ल”।

रोज लेखा सुबहे-सुबह मइया घर बहारत रहे कि खटिया के पउआ के नीचे से अठन्नी मिललि।बूढ़-पुरनिया अचरजे में उठाके सकुचाते अपना लूगा के खूँट में बान्हत सोचे लागलि; “ई अठन्नी एहिजा आइलि कइसे? का बबुआ से गिर गइलि? बबुआ त बड़ा बेचैन होइहें। आछा; अबहीं त सूतल बाड़ें।जगिहें त उनुका के दे देम।हम रखियेके का करम? हमारा कवन कामे आई? उनुके नू घर चलावे के बा! बेचारा कहवाँ से ई पइसा जोगड़ले होइहें? एक-एक पइसा के मोहाल बाड़ें“।

लगभग सत्तर बरिस के मइया पातरे रही आ टाँठो रही।गोर-गोर।बारो उजराइल।झुर्री बुढ़इला के गवाही देत रहल।देह बतावत रहे जे पहिले बहुते सुन्दर होई।पतोह खटिये प परल रहसु। मनससु त कवनो काम क देसु।ना त ना।घर के झारल-बहारल, लिपल-पोतल, बर्तन धोअल-माँजल, कपड़ा फींचल-सुखावल, रसोई बनावल से लेके छोट-छोट नाती-नातिन के गूह-गँड़तर सभ उनुकरे जिम्मा।भोरे से रात तक हेने से होने, हई त हऊ।

बेचारी के आँखि के लकड़ी एकही बबुआ रहन।बाकिर; उनुका देही नौगो।कुछ जवान होत त कुछ किशोर होत।कुछ पौगंड त कुछ बाल आ शिशु।अउर सभ त आपन काम क लेसु, बाकिर छोटकन के नहवावल-धोआवल, खियावल-पियावल, पहिरावल-ओढ़ावल से लेके तेल-तासन सुतावल-उठावल तक ओकरे काम।गरीबी अइसन गरसले रहे जे दूनो बेर के के कहो एको बेर सुबहित अन्न-दाना मोहाल रहल।थरिया में कबो माँड़ो-भात लेके बइठल कि कवनो बच्चा आके बइठ गइल।अब खाउ कि खियावे! एक-दू कवर कइसहूँ भीतर गइल आ अउर नाती-नातिन के पेटे गइल।

घुरफेंकन पंडित के जनम बड़ घर में भइल रहे।बड़ मतलब सम्पन्न घर में।जमीनदारी रहलि, प्रताप रहल, इज्जत-प्रतिष्ठा रहल, नोकर-चाकर, हाथी-घोड़ा का ना रहल! सभ रहल।बाकिर; उनुका खातिर कुछुओ ना रहल।उनुकर बाबूजी घरभरन पंडित अपना बाबूजी लूटन पंडित के दहिने रहन।नाम के एकदमे उलुटा।घरभरन ना घरउजारन भा घरजारन रहन।खूब गोड़ हिला-हिला के खायेवाला।कवनो काम-धाम ना।कहाँ का होता, कवनो मतलब ना।खेत के मालगुजारी आइल, काम चलता।बाचल खेत में का बोआइल, कतना उपजल, कतना पहुँचल बस जतना आइल ओतने काफी बा।लूटेवाला लूटता त लूटो, चोरावेवाला चोरावता त चोरावो कवनो चिन्ता-फिकिर ना।खाये-पीये में कमी ना होखेके चाहीं।जब घटी त खेत बेचइबे करी।जीभ बड़ चटोर रहलि।का त छीलिके रसगुल्ला खात रहन।पूरा परिवारे मउज में रहे।एही में धीरे-धीरे सब खिसकत-खरकत गइल।सैकड़न बिगहा चलि गइलें।मुरखवा के भँइसि बियाइलि त सभे घूँचे लेले दउरल।बुरबक के धन होई त चालाक खइला बिना मरी! लूटेवाला के त मउका मिले के चाहीं।कमे दाम में बगइचो बेचा गइल।समय अइसन बाउर आइल कि ऊ साफ-साफ धोती-कुरुता त मइल आ पेवनदार होइये गइल, सतुओ दूलम हो गइल।

खैर; बुढ़ऊ के अनेति उनुका साथे चलि गइल।अचानके एक दिन सूतले-सूतल परलोक चलि गइलें।करजा लेके कइसहूँ काम-किरिया भइल।अब घुरफेंकन प परिवार के बोझ परल।बाप अइसन जे सब अछइत बढ़िया से अपना एकमात्र बेटा के पढ़ाइयो ना करवलें।सतवाँ-अठवाँ पढ़ल व्यक्ति कवन काम करो! जेने देखसु, अन्हारे लउके।बाकिर; पेट-परिवार त ना नू मानी! पंडिताइयो त ना सिखले रहन कि कतहूँ पूजो-पाठ कराके दू पइसा लियावसु भा सीधो-पताई ले आवसु।लेकिन; अब त कुछो त करही के रहल! अब ऊ एगो पंडित के साथे घूमे-सीखे शुरू कइलें।एही सीखे में कहीं ब्राह्मण-भोज में भोजन भेटा जाउ आ कहीं से छाना मिल जाउ त एक-एक टूकी परिवार के लइकन के साथे माई आ मेहरारुओ के कंठे जाउ।केहू-केहू दयनीय स्थिति जानिके दयावश काज-परोजन में दू-चारगो अधिके पड़ी दे देउ त केहू छूअल-छावल सीधा भा खेत-कोड़ार में उपजल नया फसल अँगउँग के रूप में दे देउ।बाकिर; ना प के हँ रहल।बड़ परिवार के कइसे पेट भरो!

एने कतने दिन से दलिदरा देवी एकदमे सवार हो गइल रही।बुझाउ जे पूरा परिवार के खा-चबा जइहें।कवनो सीधो-पताई ना आइल आ ना कहीं जेवनारो के नेवता।घर में मुसरी डंड करत रहे।बाल-बच्चा खइला बिना छछनत रहन।पंडित के कवनो उपाये सूझत ना रहे।ऊ एकोरा बइठिके सोचत रहन जे बाबूजी के सराध में लिहल मोतीबो सहुआइन से करजा के सूद बढ़त गइल त घर के एगो हिस्सा उनुका के बेचेके परल।कुछ पइसा बचबो कइल त खाये-पीये में अब एकदमे खतम हो गइल।ओह मंगर के मेहरारू के गहना बन्हकी रखलीं त अबले काम चलल।अब का करीं! सेयान त समझ-बुझिके कइसहूँ पानी पीके भा अँगना के फरल सहिजन उसीनि-उसीनि के खाके कइसहूँ पेट के पाटे के काम क लेता।बाकिर; ई छोट-छोट लइकन के का पता कि घर के परिस्थिति का बिया।दूध त दूर के बा, आजु एक टुकी रोटियो ना मिललि।डँहकत बाड़े सँ।चिन्ता से झँउसाइल पंडित पत्नी सुरेश्वरी से राय करत कहलें; “ना होखे त फुलहवा लोटवा दा।बेचिके आटा-चाउर, कुछो ले आईं”।

घर के सब बर्तनो त लगभग बेचाइये गइल रहलें।अब ओतने रहल, जेकरा बिना भोजन ना बन सके आ खाइल-पीअल ना जा सके।बस; तसला-तसली, तावा, कलछुल, छोलनी-

छनवटा, दूगो लोटा, दूगो गिलास आ दूगो थरिया।लोटो-गिलास में एक-एकगो फुलहा त एक-एकगो पितरिया।थरियो में एगो फुलहा त एगो पितरिये।कटोरियो बिचाइये गइल रही सँ।बाकिर; उपाय उहे रहे।ऊ दे देली।ठठेरा दू रुपया देलस।ओही से खरची आइलि।सभे खाइल।बाकिर; आमदनी कवनो ना आ खरचे-खरच त का होई!

आजु ना त गहने बेचे लायेक रहल आ ना बरतने।घुरफेंकन के ध्यान अपना ठकुरबारी में एगो पीतर के छोट सिंहासन प गइल।बहुते बिचारत अन्त में निर्णय कइलें जे एह सिंहासन प के मूर्तियन के इनार में डालि दीं आ सिंहासन बेचिके जवन मिली, ओही से कुछ खरची ले आ आईं।

ठठेरा बारह आना देलस।ऊ लेके चललें।तलक मन में आइलि जे बीड़ी पियला बिना मन लुबलुबाइल बा।काहें ना, बफाती किहाँ से एक आना के बीड़ी ले लीं! ऊ ले लेलें।ओहिजा से जसहीं चललें कि महँगू चउधरी चिचियात कहलें; “ए बाबा! हेने आईं”।

ऊ गइलें।महँगू के माई के अब-तब के स्थिति रहल।लोग अनाज, दाल, तकारी, पइसा छुआ-छुआ के रखले रहन।ऊ कहलें; “बाबा! ई सभ ले जाईं”।

पंडित के मन ओसही हरियराइल, जइसे सूखत तुलसी के बिरवा में पानी डलाइल होखे।ऊ बीनि-बीनिके पइसा बगली में रखत गइलें आ गमछी में दाल-तकारी गेंठियइलें।महँगू आ सुगन दूनो भाई मिलिके चाउर-पिसान के अलगा-अलगा मोटरी बान्हिके छोटका भाई भगेलुआ के माथा प रखिके बाबा किहाँ पहुँचावे के कहलें।भगेलू के साथे ले-ले पंड़ित घरे अइलें।सात-आठ दिन के खरची देखिके घर के हर बेकत अइसन प्रसन्न जे धनसुत मिलल होखे।सबके खुशी ई रहलि जे भर-भर पेट खाये के मिली।दालो आ तकारियो मिली।

ओह दिन दू-तीन बजे चुल्हा जोराइल।मइया बनावे लगली।दाल, भात आ आलू, भंटा, सेम, टमाटर, गादा के तकारी बनल।सभे ओड़ावन ले-लेके ठाट से खाइल।दू कलछुल भात, आधा कलछुल दाल आ नाँव करेके तकारी बँचल बूढ़ी के हिस्सा।उहो मनगरे खइली।

रात के रोटी आ लउकादाल बनल।सभे खाइल।आराम से सभे सूतल।

रोजे अस मइया अनगुताहे उठिके झार-बहार करे लगली।तले ऊ अठन्नी मिलल रहे।घुरफेंकन जगलें त अगराइल बूढ़ी गइली आ हाथ में अठन्नी थमावत कहली; ए बबुआ! एक फूँक बीड़ी द आ ई अठन्नी ल”।

पतोह काम करे में त खटपर रही, बाकिर जसही बूढ़ी के ई बात सुनली, खटिया से उतरिके तमतमाइल अइली आ आके उनुकर गर दबावे लगली।बुझाइल जे मुआइये दिहें।कइसहूँ बूढ़ी जान छोड़ाके दूर भगली आ एगो कोना में जाके फफकि-फफकिके रोए लगली।

पंडित जानत रहन जे उनुकर माई चोरिन ना हिय।उनुका आपन पँचवाँ लइके प मन गइल आ ओकराके पकड़िके पीटे लगलें।ऊ कहलें; " बताउ; तें पइसा चोरवले रहलेहा कि ना! साँच-साँच बतइबे त पटउरा खाएके पइसा देम।ना त अउर मारम"।डेराइल आ एने पइसा के लालच में लइका साँचे कहलस; "हमही काल्हु राते तहरा बगली से पइसा निकलनी आ खटिया के पउआ तरे रखि देनी"।

पंडित मेहरारू से त डेराते रहन।बाकिर; हलुके डाँटे नियन कहलें; "बताव; तू बूढ़ महतारिये के चोरिन मान गइलूहा आ ई तहार लइका के करतूत ह"।

अब ऊ का कहसु! अपराधबोध त भइबे कइल।

बूढ़ियो सुनली।

पंडित अपना माई के इनाम में एगो बीड़ी जराके देलें आ ओह बेटा के पटउरा खाये खातिर दू पाई।

◆◆◆

मार्कण्डेय शारदेय

पटना (बिहार)

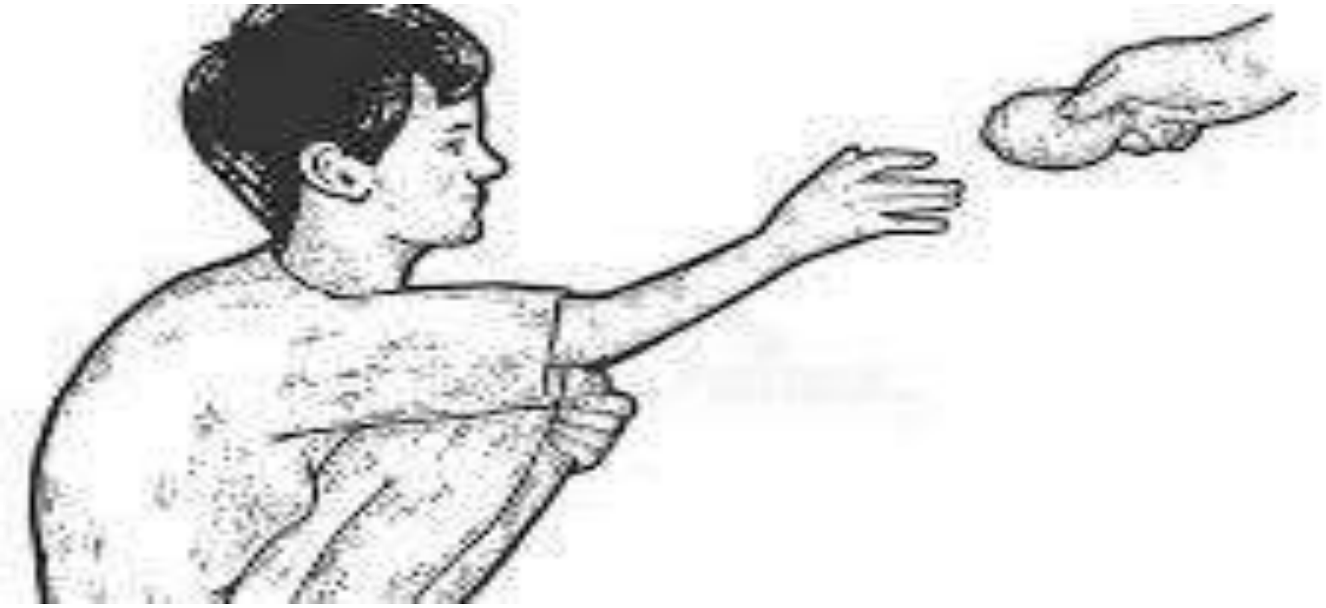

1-हमहूँ गीत लिखब

हमहूँ गीत लिखब !
टाँगल बा शूली पर जइसे -
आपन प्रीत लिखब ! !

भाई प्रेम के मोल न दिहलस ,
गोईंठे घीव सुखइलीं ।
आस - पड़ोस से धोखा मिलल ,
सोच - सोच पछतइलीं ।
सम्बंधन में मीठ न कुछुओ
सबकुछ तीत लिखब । हमहूँ गीत ....

उहे चिऊँटी कटलस ,
जे के पीढ़ा दे बइठवलीं ।
दुअरे - दुअरे असरा लिहले
धावल - धूपल गइलीं ।
जब मौका पर काम न आइल ,
बदलल मीत लिखब । हमहूँ गीत

बहुते चोट तू मरले भाई ,
अब धोखा ना खाइब ।
हमहूँ गिन के बदला लेहब ,
बदलब , रूप देखाइब ।
मजबूरन जब बैर बेसाहब ,
आपन जीत लिखब । हमहूँ गीत ......
◆ ◆ ◆

2-फँस गइल नाक बा

“ कहीं - कहीं ,
का हाल-चाल बा ?
” सब ठीक-ठाक बा !
बाकिर एह बाजारवाद में
फँस गइल नाक बा !!

बिना अरथ के बात न कवनो होखत बाटे
लमहर सूंढेवाला रस के सोखत बाटे
धन - पशुअन के जगही - जगही
जम गइल धाक बा ।।

राजनीति के हरम में देखीं सब बा नंगा
पहिरे कपड़ा , भद्र बनेला , मगर लफंगा
एँड़ी से गर्दन तक ओकर
धँसल पाँक बा

अब बाजार के फेरा में बा धन , यश , विद्या
संस्कार , सभ्यता , परम्परा , सबकर हत्या
दोसरा के घर टाट फाड़ के
ताक - झाँक बा ।। ◆ ◆ ◆

डॉ. ब्रजभूषण मिश्रा

लोर भरल बा

जेकरा बसेरवा रहल ना बिधना हो,
हिस्सवा में ओकरा अब लोर भरल बा,
केकरा जाई ऊ दुअरिया, कठोर भरल बा,,,,।

कपड़ा बा कमे, कमे बाटे ना खानवा
छतिया दरदिया, खुला बा असमानवा
सगरी अन्हरवा रहल ना बिधना हो,
हिस्सवा में ,,,,,।

पीपरा पर बकुला बकुलियो ना रहलें
चुपे चलि दिहलें ना केहुओ से कहलें
कुछ ना असरवा रहल ना बिधना हो
हिस्सवा में,,,,,,।

छतिया पर लहकल का तवा बन्हाई
बेटी के शादी टूटल रूठल शहनाई
सुन ना जिगरवा रहल ना बिधना हो,
हिस्सवा में,,,,,।

✍️ विद्या शंकर विद्यार्थी

◆ ◆ ◆

रात दिन घमसान भइल बा

रात दिन घमसान भइल बा
आदमी परसान भइल बा
टूट गइल साहस बा तर के
नफरत में दोकान गइल बा
काठ के करेजा बा उनकर
सूनसान बागान भइल बा
पांँख टूटल बाटे चिरइन के
लूट गइल उड़ान गइल बा
धूंध बा सन्नाटा बा अलगे
लूट गइल पहचान गइल बा।

2.

केकर हाय बटोरबऽ बाबू
धार में बीच धसोरबऽ बाबू
का मुस्काईं भय लागत बा
बढ़ल देख खंँखोरबऽ बाबू
कुकुर मास के करी रखवारी
कब तक घर अगोरबऽ बाबू
तूँ तऽ हवऽ दिन के मच्छड़
मच्छड़ नियन भभोरबऽ बाबू

✍️ विद्या शंकर विद्यार्थी

◆ ◆ ◆

पीर लिहले बानीं

बाढ़ में बिछुड़ला के पीर लिहले बानीं
अँखियाँ में माई हम नीर लिहले बानीं

गंगा जी के बाढ़ में बा सब कुछ हेराइल
आदमी सहारा नइखे जीव बा डेराइल
बानीं लाचार आ तकदीर लिहले बानीं।

मदद के केहू आगे आ पीछे ना बाटे
जेने ताकीं तेने बस दरस आवे काँटे
लइका नादान बानीं उमीर लिहले बानीं।

ए मइया तोहरी हो मुरूतियो ना बोलेले
निमिया के गछिया के सिंकियो ना डोलेला
भूख लेले बानीं आ फिकिर लिहले बानीं।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी
रामगढ़, झारखण्ड

पूष महीना बड़ा बेदर्दी

पूष महीना बड़ा बेदर्दी-
सुरुज गइल लुकाई-
थर-थर कांपें रात चनरमा-
बरसें ओस जुड़ाई-
चिरई चुरमुन घोसला बइठें-
कोहरा क अधिकाई-
लेवा गुदरी ओढ़ि के कइसों-
हमहूँ रात बिताईं-

गुजुर-गुजुर ना मोटका गद्दा-
पोरा-"पहल"बिछाईं-
बचवन संघे आवा देखा-
टिकुरल रात बिताईं-
ठेघुना डालि करेजा सुतलीं-
गोड़ कहाँ फइलाईं-
मड़ई करकट छाजन अभयीं-
आवा देश देखाईं-

करीं किसानी खेती-बारी-
पानी रात बराईं-
पूष जाड़ से काँपत देहियां-
तबहूँ करी सिंचाई-
जीव भले चलि जाये भइया-
जीविका कइसे जाई-
सुतले रात क बिजुरी आवे-
बड़हर ई सच्चाई-

सब दुःख से बड़हर बा भइया-
इहे गरीबी भाई-
केतनो मेहनत जतन बितवलीं-
नाहीं इहो ओराई-
करीं किसानी मजदूरी हम-
भट्ठा ईंट पथाई-
सगरो उमर ई दुःख में बीतल-
दिन नीके कब आई-

गेहूँ चाउर गरज में बेंची-
दाम कहाँ हम पाईं-
करजा खाद क ब्याज भरीं की-
लरिका फीस चुकाईं-
मेला-ठेला दावा-दारु-
सगरो नात हिताई-
केतना जतन आ हाथ सिकोरीं-
आखिर इहे कमाई-

पूष महीना साग-पात क-
कवन सवाद बताईं-
शहर छोड़ी आवा हे!भइया-

गँवई सभें खियाईं-
बथुआ चना केराय के खोटें-
दिन भर मोर लुगाई-
अँचरा भरल बा गँठरी सोहे-
लागल खेत खोंटाई-

साग भात संग लिट्टी गुड़ क-
जोड़ बा नइखे भाई-
गोरस संग बजरा क हथुई-
बिंजन का सुख पाई-
भले किसान गरीब क भोजन-
साग पात बा राई-
पर सवाद जे पउलस भइया-
कबहू नाहिं भुलाई-

छोटहर दिन छिछिआइल मनवां-
केतना काम गिनाईं-
लुत्ती जइसे बीतल दिनवाँ-
सांझे कउड़ धराईं-
दीया बारि के लरिका बईठे-
आपन करें पढ़ाईं-
पढ़ा-लिखा बचवा तूँ खाली-
दुखवा इहे भगाई-

◆ ◆ ◆

राकेश कुमार पांडेय
गाजीपुर,उत्तर प्रदेश

पूषवा क रतिया

पूषवा क रतिया परेला धनि कोहरा हो,
ओसिया क बूनवां चमकि उतिराइल बा।
सरसों क फूलवा पियरि पहिने धरती हो।
लचकत सांझ लाली घुंघुटा ललाइल बा।
चुप्पे-चुप चिरई न चेंचा लउके मैना कहीं,
जाड़ लगे खोंतवा में सबही लुकाइल बा।
करहा क रसवा जुठारें नाहीं कउवा हो।
कहां ढेर बचलन कि कउवो ओराइल बा।

चिरई आ चुरुमुन न हेरले-हेरालें कहीं,
बबुरा के पेड़वा से खोंतवा बिलाइल बा।
बर आ बगइचा न चर-चरवाही कहीं,
नदिया के तीरवां ले नरवो पटाइल बा।
बढ़त बाड़ें मनई अबादी क उफान देखा,
लील लिहलें धरती पर मनुवे देखाइल बा।
जर-जीव-जंगली सियार आ हुंड़ार कहाँ,
सगरो उजार खेत घरवे तनाइल बा।

जहर भइलें हावा-पानी धरती-अकाश चंहु,
चिमनी आ भट्ठा-भट्ठी सगरो झुंकाइल बा।
गाय-गोरु बरधा क अब ना रिवाज कंहु,
टट्टर मशीन कुल्ही करते देखाइल बा।

रहर बजरा उरदी न सांवा कोदो कुकुढ़ी क,
मोटिहा अनाज नाहीं जउवो बोआइल बा।
चाकी जांता ओखरी न मूसरो जुवाठ हर,
दुअरा न नाद कहीं कुक्कुरा बन्हाइल बा।

भर-भरसांय ना त दाना भड़-भूजा गोंड़,
सगरो त पाकिट में भरले किनाइल बा।
सोन्ह महके उखिया न महिया कोल्हाड़ी-गूर,
खाँड़ लिट्टी कहां साग बथुआ खोंटाइल बा।
जर-जाड़ बदलल न बर-बरसात ऊहो,
अति होय सगरो ई प्रकृत कोंहाइल बा।
बड़ बदलाव भये मनइयन क खान-पान,
खाद आ दवाई मांस दारू बढ़ूआइल बा।

भाय-भयबद्दी नाहीं गंवई जवांर कहीं,
अंगने में भीत गेट दुअरा देखाइल बा।
जतना बो भउजी त अंइठल बोले अब,
लमहर मोबाइल टिकटाक अन्झुराइल बा।
गांव बंटल जतिये में बड़ा बिखराव भइल,
सबही गुमाने मरजाद ही बिलाइल बा।
छेर-भेंड़ बकरी आ मुर्गी दोकान खुले,
सबही त खात बाड़े सभे लुलुआइल बा।

देखा-देखी पर-पूजा करहा आ माता माई,
नवमी जिउतिया क जोर अब थोराइल बा।
मेला-ठेला होली आ पचईंयां में भीर कहां,
पइसे के लालच हले लुइया कहाइल बा।
जागा हो सचेत होखा पढ़ल-लिखल करें धोखा,
धरम क सङ्कट अबे चिंता में लिखाइल बा।
जरिये के छोड़ि कहां सुख पइबा राउर सभें,
पुरखन लकीर कहां खन में मेंटाइल बा।

◆ ◆ ◆

राकेश कुमार पांडेय
गाजीपुर,उत्तर प्रदेश

दोहराव के दुःख

अमद के दूसर पहरिया
अचके से उपरिया जाला कुछ?
अब्बे-अब्बे त मन एतना इत्मिनान रहल
ई सोच के-
गहिर, सुन्नर, हाव-भाव, मन मोह-बतकही
ई रंग राग - जइसे कि सब आपन आमद ह
तब मन के कवनो कोना में उतरेला सोच के घोड़ा
जवना के काम ह- जिनिगी के खेल मे दउरे के
नीमन बेजाय , तीत - मीठ, तौर तरीका आ सलीका के
बुनियादी बात, सतही आ तरही बात के
हम अतना गम्हिराह से ना मानिले
ना पसन परेला, मनौती |
सबसे उपर आपन नजरिया त होला?
आपन सफर, आपन अनुभव आ ज्ञान में
हम नइखीं रखले ख़ालिश दुःख के
त ई का हमरा कहल -सुनल , राग अनुराग में भरल बा?
सुधि-सुमिरन से जीए आ वोहके सिरिजे के लकम?
तऽ का अपने मन के कोना में पड़ल बा, अपने आवाज़
अपने अगुआर सोच में बसल बा
तबे नू ई दुःख ना टभकेला ना पिराला
आँखिन आ दिल में बोझ उठवले
कुछ फरिछल त कुछ गहिर आ कुछ मइल जस
जिनिगी के हर आनंद में बस गइल बा
दोहराव के दुःख |

◆◆◆

दीपक सिंह

हमसे फरका रहिके

हमसे फरका रहिके खुद के ना भुलवाईं रउआ
कुछ कहीं, सुनीं, बोलीं आ बतिआईं रउआ।

रउआ हरदम काहे हमरा सपना में ही आवेनीं
कबो- कबो तऽ सोझा से नजर में आईं रउआ।

रउआ के हम आपन मानीं, कहवाँ कुछ माँगिला
हमके पल भर देखीं, इचिका सा मुसुकाईं रउआ।

दुनिया भर के मौसम में, राउर मौसम अलगे बा
बूनी, बादर, बयार बनिके हमरा पर छा जाईं रउआ।

मन के सोचल सपना, कब तकले सपना रहेला
आपन कुल्हि सपना ई तनिका समझाईं रउआ।

खुशबू-खुशबू बनि के, बनल रहीं सब अपनन में
जइसे तुलसी गमके आंगन में, गमक जाईं रउआ।

दुःख होला बस ना समझला के फेर, अउरी का
सोचीं समझीं, दुःख में अतना न अझुराईं रउआ।

प्रेम के आगे-पीछे दुनिया, प्रेम सभका बीच में बा
प्रेम के देखीं, प्रेम से सीखीं, प्रेम के पा जाईं रऊआ।

◆ ◆ ◆

दीपक सिंह

धरियऽ पाँव बीचार केऽ।

कुछ नय भैया साथे जाय,
करलऽ लाख कमाई।
करनी तोहर कामे आय,
जग गुण तोहर गाई।।
हाथ कब्बो नय लम्बा करीं,
करीं बुरा नय काम।
लालच के नय पाँव धरीं,
होयबऽ तू बदनाम।।
रूखा सूखा जवने मिली,
कर लीहऽ सबूरी।
सभे भाग में नय खे भेली,
नय ही हलवा - पूरी ।।
देखा देखी ढेर बा आज,
बिना कौउनो तोल।
हड़बड़ी में बिगड़ी काज,
समझऽ आपन मोल।।
समय बड़ा बुरा आइल बा,
बड़ाई के बा जोर।
भला बुरा सभेआपन हाथ बा,
थामऽ आपन डोर।।
एकहीं बात बा जहवाँ जयबऽ,
बुरा लत के बा भरमार।
कर बऽ भला-भला कहईबऽ,
पयबऽ सभे से दुलार।।
सोच समझ के पाँव जे धरलक,
कब्बो नय उदास भईल।
भोतर करनी जे करलक,
हरमेसा पाछे रहगईल।।

(गोवर्धन सिंह फ़ौदार 'सच्चिदानन्द' जी मारिशस के रहनिहार हईं। उहाँ के ई कविता जस के तस छापल बा।)

◆ ◆ ◆

गोवर्धनसिंह फ़ौदार 'सच्चिदानन्द'
मॉरीशस

भारी बरसात में..!

ना जेठ के दुपहरी ना पूस के रात में...
तू अइहऽ हमार चिल्हर भारी बरसात में।

दुआर पर कुर्सी लगा के बइठल जाईं साथ में,
खपरा के छावल दुआर बा हमार,
ऊ ठीक ओसहीं चुई जइसे हमार लोर निकलेला हर बात में,
ओ घरी तू लिहऽ हक से हमार हाथ अपना हाथ में
आ महसूस करिहऽ हमार अंदर के तूफान तू बहरी देख के बरसात में,
सबसे पहिले मिलिहऽ दुआर के ओ पेड़ से जे सब केहू के छाया देवेला चाहे अपने हो◌ेखे कउनो हालात में,
ना जेठ के दुपहरी ना पूस के रात में....
तू अइहऽ हमार चिल्हर भारी बरसात में।

लिहऽ भीनी भीनी खुशबू उठा छौ खेत के माटी आपन हाथ में,
तू देखिहऽ हमार बगइचा के, जे झूम रहल होई अइसे जइसे झूमेला पूरा परिवार एक बेटा के बारात में,
ना जेठ के दुपहरी ना पूस के रात में.....
तू अइहऽ हमार चिल्हर भारी बरसात में।

◆ ◆ ◆

सरिता सिंह राजपूत

कनक किशोर के चार गो कविता

आदमी
देश के अमृत काल में
खोजलो पर नइखे भेंटात
आदमी
दूर - दूर ले
विकास लउकत बा
बाकिर नइखे लउकत
आदमी
अन्न के अकाल देखल ह
बाकिर आदमी के भीड़ में
आदमी के अकाल
तब त नइखे लउकत
आदमी
चउगोड़वो से बेसी बिगड़ल
आजु के आदमी
अपनो पराया नइखे चिन्हत
आजु के आदमी
आदमिए नइखे त
आदमियत कहाँ से भाई
पड़ी दिखाई
आदमी के अभाव
पहिलहूँ रहे
तब त रेणु कहलें
कि 'सवाल शहर भा गाँव के नइखे,
आदमी के बा।'
अतने ना इहो कहलें
कि 'आदमी बनावे के बा,
आदमी अबहीं बनल नइखे।'
ई सवाल आजुवो खाढ़ बा
काहे कि अबहीं ले
आदमी बनल नइखे
साँच पूछीं त बिगड़िए गइल बा
कुछ बेसी
जब आदमिए नइखे त
आदमियत के आस रखल
बेकार बा
जेह दिन आदमी आदमी बन जाई
दुनिया से सब दुख - दरिदर
ओरिया जाई
राम राज आ जाई।

हाथ
पूँजीपति आ मशीन
दूनों गरीब के दुश्मन
दूनों हाथ के मोल
ना जाने
मेहनत के ना पहचाने
साँच त इहे ह
ई दूनों हाथे के सहारे
आगे बढ़ल बा
बाकिर मौका मिलते
काम निकलते
ई दूनों हाथ काटि के
श्रम योगी के
बेरोजगार कर देला।

भूख
बाजारवाद के आँत
कुछुओ पचा जला
पेटो बड़हन,
कबो ओकर भूख
खतम होखे के
नाँवे ना लेवे
कतने जंगल
कतने पहाड़
कतने गाँव
कतने खेत - बधार
नदी - नाला
समाहित हो गइल
ओकरा पेट में
बाकिर भूख ना भागल
पेट ना भरल
ओकरे देन ह
विस्थापन
बेरोजगारी
गरीबी
प्रदूषण
महामारी
आदमी आ स्त्री

ओकरा खातिर
एगो वस्तु
ऊ जानेला
एके मंत्र
मुनाफा मंत्र।

बंद लहरात मुट्ठी
झरिया, धनबाद
बोकारो, जमशेदपुर
हटिया के
कोलियरी, कारखाना में
भोजपुर - मगध
के बधार में
विरोध के प्रतीक
हवा में लहरात
बंद मुट्ठी नइखे लउकत
का ओकर आजु
जरूरत ना रहल?
भा मुट्ठी काट देवे के डरे
विरोध में खड़े नइखे होत?
बुझात बा कि
पूँजीवाद, सामंतवाद
विरोधी मानसिकता के
कुचल देलस
अपना पाँव से।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची, झारखंड

जिंदगी के पल

जिंदगी में कुछ अइसन पल
खास हो जाय
कि तोहर साँस भी
हमरे साँस हो जाय
लउके ना हमरा
तोहरा सिवा केहू
तोहर दिल हमरा दिलवा के
खासमखास हो जाय
जिंदगी ह सफर त
मौत रोकबे करी रस्ता
मुहब्बत में ही मौत के
एहसास हो जाय
ना जाने कब ले टूटी
दुनिया के मोह माया
कि इंसान पर इंसान के
विस्वास हो जाय
जिंदगी से शिकाइत अब
हो गइल निर्मल
मउअत से भी खूबे पंचाइत
हो गइल निर्मल
अब चिता पर प्यार के
तलास हो जाय
जिंदगी में कुछ अइसन पल
खास हो जाय।

◆ ◆ ◆

भाई भाई

सब कुछ लुटा के रउवा
भाव जोरऽतानीं
भाई हो भाई के
कपार फोरऽतानीं
बेसी खिसियाईं मत
बतिया बढ़ाईं मत
रातारातीं भाई
दुआर कोरऽतानीं
भाई हो भाई के
कपार फोरऽतानीं
दोसरा के बात पर
चढ़ गइनीं अकास पर
बिना कुछो देखले जनले
बड़का काम करऽतानीं
भाई हो भाई के
कपार फोरऽतानीं
बड़ा नीमन काम बा
दुनिया ले नाँव बा
पुरखन के इज्जत
नीलाम करऽतानीं
भाई हो के भाई के
कपार फोरऽतानीं
ना सभके राय दीं
जे जाता ओने
जाए दीं
आवत जात सबका के
काहे टोकऽतानीं
भाई हो के भाई के
कपार फोरऽतानीं
नेताजी के नाँव पर
इज्जत लागल दाँव पर
बाँह छोड़ि भाई के
अनकर गोर परऽतानीं
भाई हो भाई के
कपार फोरऽतानीं
तोहर बिगहटिया
रह गइल कोला
देख ना तू नेताजी
लिखात बाटे गोला
अबो रउवा सतुआ
पिसान जोहऽतानीं
भाई हो भाई के
कपार फोरऽतानीं

◆ ◆ ◆

सूर्येश प्रसाद निर्मल
तरैया शीतलपुर।

होइबे करी हिसाब हो

ढ़ेर दिन ले ना चली,लिखल तोहार रोआब हो,
एक दिन तोहरा करनी के,होइबे करी हिसाब हो।
अपराध कइले बाड़, पूरा करे में ख़्वाब हो,
एक दिन तोहरा करनी के,होइबे करी हिसाब हो।

जवन,जवन कइल,ओकर पइब फल तू,
खटिया पे छटपटइब,उठ पइब ना चल तू।
सूद सहित मिली,ओकर जरूर ज़वाब हो...
एक दिन तोहरा करनी के,होइबे करी हिसाब हो।

कइल अत्य तोहार,तोहरा सोझा हो आई,
एके दरी पे बइठल,करब तू माई, माई।
हमदर्द तोहार केहू,तब होई ना ज़नाब हो..
एक दिन तोहरा करनी के,होइबे करी हिसाब हो।

मुफ़लिस के लागी हाय,परी हो तोहरा कीड़ा,
चलती में देले बाड़,बहुतन के तू हो पीड़ा।
दीपक होई धूमिल,हरदम रही ना ताब हो..
एक दिन तोहरा करनी के,होइबे करी हिसाब हो।

◆ ◆ ◆

दीपक तिवारी
श्रीकरपुर,सिवान

देखनीं हम जिनिगी के

देखनीं हम जिनिगी के कुछ अतना करीब से,
चेहरा तमाम लागे आजु अजीब से।
देखनीं हम जिनिगी के कुछ अतना करीब से...

कहे के दिल के बात जेके खोजत रहीं हम,
एक रोज महफ़िल में मिलल अपना नसीब से,
हँसी में भी छुपल राज लागत जस तीर से,
देखनीं हम जिनिगी के कुछ अतना करीब से...

रस्ता में मिलल लोगन के अजीब–अजीब चाल,
कह के हँसे–रोवे, कह के देस–धोखा–जाल।
हर चेहरा बदल जाला दुनिया के तरकीब से,
देखनीं हम जिनिगी के कुछ अतना करीब से...

सपना में सँभरल बात, अँखिया में टूट जाता,
मन के भरोसा आजु पतझड़–दुआ में सूख जाता
हर जख्म मिलल पिया, खुदे के रकीब से,
देखनीं हम जिनगी के कुछ अतना करीब से...

नीलाम होत सुननीं कई दिल के प्यार इहाँ,
कीमत त रहे सच्चा, पर मिलल कवनो ना तहाँ।
प्यार के खेल हारल, किस्मत–ए–गरीब से,
देखनीं हम जिनिगी के कुछ अतना करीब से...

वफ़ा के लाश लेके, आजु मन तहमाइल बा,
साँसन में दर्द भरल, दुनिया मुसुकाइल बा।
धोखा मिलल सौरभ, रेशम जइसन सलीब से,
देखनीं हम जिनिगी के कुछ अतना करीब से...

रात–रात भर जागे, ख्वाबन के राख ढहे,
सवाल हजार उठे, जवाब एको ना रहे।
सचाई मिलल अभियंता, आँसू–भरी तहज़ीब से,
देखनीं हम जिनिगी के कुछ अतना करीब से...

अब त दुनिया समझनीं, खेला–ए–नसीब बा,
कहे के हँसी–आँसू, सब दर्द–ए–ख्वारिब बा।
हम त टूटि गइनीं दुनिया के रदीफ़ से,
देखनीं हम जिनिगी के कुछ अतना करीब से...

◆ ◆ ◆

अभियंता सौरभ कुमार

ई कइसन रीत ह

तू दूर हो जइबू ई सोच के मन घबरा जाला,
ई कइसन रीत ह दुनिया के ना बुझाला !

हमरो मालेम बा तहरो सरिता नीर बही जाई, 0
हो जइबू पराई एक दिन बेटी बस तहार याद रही जाई।
नया मंजिल फूल बिछवले बा तोहसे मिलन के आस में,
हजारों खुशी लिहले खड़ा बा चाँद सितारा तहरा पास में !
घर आँगन में शोर मचावे वाली सुन आँगन करी जाई,
हो जइबू पराई एक दिन बेटी बस तहार याद रही जाई।

भले आपन अंश के एक दिन सँउपि देम गैर के,
देम आशीष जीवन भर खुशी चूमे तहरा पैर के !
हमरा से बिछड़ला के गम के ई लाडो सह पाई,
हो जइबू पराई एक दिन बेटी बस तहार याद रही जाई।

छोटकी तोहर बदमासी ए घर आँगन के धरोहर रही,
हमरा मन के करीब तोर हर अदा बरोबर रही !
याद रखिहऽ तोहर याद हिया में टीस उठाई ,
हो जइबू पराई एक दिन बेटी बस तहार याद रही जाई।।

◆ ◆ ◆

अभियंता सौरभ कुमार
जिला -सिवान बिहार

नींक लागेला

गजल उनकी आँख के बाटे गजल ह गवाही के,
लिखल बे पेन के बाटे लिखल बा बिनु सियाही के,
बड़ी सोचनीं कि हम लिखीं बुताई का करीं हमहूँ
रोग लागल ह बढ़िया बा ओराला ना दवाई से ।
****
केहू की आँख में ताकल, तकावल नींक लागेला
झुके जेही समय पर तब झुकावल नींक लागेला,
मरीले हम पियासल अब समुंदर का किनारा पर
पिए से खूब पहिले सब बतावल नींक लागेला ।
जेकर बा आँख हिरनी जस ऊ सुंदर खूब लागेली
जे सूतल दिन भर होखे ऊ राती भर भी जागेली,
गवाही का करे पत्थल दी जब शीशा अदालत बा
समय पर कान्ह जे दिहल इयारिन नींक लागेली ।
ऊ अपनी आँख में हमके बसा के अब बिसारेली
चलेली मोरनी जइसन डगर केसियन बहारेली,
बसल जे आँख में होखे हटावल बा बड़ी मुश्किल
बसा के का दो अब काहें ऊ दुसरा के निहारेली ।
दिल दरपन नियन बाटे बचा के खूब हम रखनीं
टूटल बाटे ई उनका से तुरेली फिर सजावेली,
ई निर्णय प्रेम के दहलीज पर बइठल अदालत के
जुरूम खुद ही करेली ऊ सजा खुद ही सुनावेली ।
भरोसा मति करऽ "उमेश" ई जालिम जमाना बा
लगा के आग पानी में ऊ अब झुठहूँ बुतावेली,
करऽ त प्रेम में डूबऽ सुदामा आ कन्हैया खाँ
मिलन के देखि अब उनके खुदे लछिमी निहारेली।
उमेश चौबे "अश्क"
नगर पंचायत कन्हैया

अँखिया बुझेली

अँखिया अँखियन देखि के विकल भइल संसार,
हम जिनगी भर देखि के गइनी आँखिन से हार।
अँखिया बुझेली आँख के बे बोलल सब भाव,
हम देखनीं हँ आँखि से देत आँखि के घाव।
दरद आँखि से लोर बनि, टपके आँख निहार,
आँखि ना समझे भाव तब बाटे सब प्रेम बेकार।

तहरी अँखियाँ के का दो ना कइसन असर
मनवाँ अँखियाँ में हरदम समाइल रहे
ताकऽ अँखियाँ से कनखी त घाही करऽ
तबहूँ देखे के अँखिया धधाइल रहे ।

जाने केतना असर बाटे मन पर भइल
मनवा पागल बा अँखिया निहारल करे,
अँखिया जीतेले जिनगी देखत आँख में
देखि के जिनगी आपन ऊ हारल करें।

दाँव कवनो लगवनीं लहल दाँव ना
दाँव अँखिया के अपना लगावेली ऊ,
हम जिए चाहीं अँखिया निहारत रहीं
बाकी अँखिया से हमके मुआवेली ऊ।

बाटे बीतल उमिरिया निहारत सजी
सजनी हमहूँ कि सजनी निहारे तनी,
आँखि लागत बा हमरा के जख्मी करी
सोचनीं अँखिया से ऊ जान मारे तनी।

बानीं काजर नियन हम बसल कोर पर
"अश्क" से काहें कजरा दहाइल करे?
तू ना मनबऽ त मति मानऽ देखत रहऽ
अँखिया "उमेश" अँखियन समाइल करे।

तहरी अँखिया के का दो ना कइसन असर
मनवा अँखिया में हरदम समाइल रहे।

◆ ◆ ◆

उमेश चौबे "अश्क"
नगर पंचायत कटेया

बिकइबS भइया

अबकी वोट में तू दारू मुर्गा पर,
बिकइबS भइया
फेरु पाँच साल खूबे पछतइबऽ भइया।

होई ना विकास खाली मुरुगा खियइहें
आई जब चुनाव तब दारुवो पियइहें
वोट देके खाली तुहूँ कुलबुलइबS भइया
फेरु पाँच साल खूबे पछतइबऽ भइया

लाज शरम छोड़ि ऊ गाँवा गाँईं घुमिहें
सपना देखाइ के गरीबवन के चुमिहें
जाति पाति में पड़ि के भूलइबS भइया
फेरु पाँच साल खूबे पछतइबऽ भइया

तोहरा ला सतरह गो नियम कानून बा
उनुका खातिर बस कुरसिए जुनून बा
जीतते नेताजी लग कुहूकि दउरबS भइया
फेरु पाँच साल खूबे पछतइबऽ भइया

अबकी वोट में तू दारू मुर्गा पर
बिकइबS भइया
फेरु पाँच साल खूबे पछतइबऽ भइया

गणेश नाथ तिवारी"विनायक

◆ ◆ ◆

कुदेला भदहवा

भादो भदवरिया में कुदेला भदहवा
गिरेला गरीब के दुअरिया हो।

टर्र टर्र बोलेला ऊ गउवाँ गिराँव में
गलफड़ बजावेला ऊ अवते चुनाव में
गदहो के धरे अकवरिया हो
भादो भद.......

लाल पीयर दुनिया के सपना देखावेला
कुइयाँ से बहरी ऊ भादवे में आवेला
जीतला प भागेला भीतरिया हो
भादो भद.......

उजर बदरवा के देखि के लजइहS
आई जब करियवा तब लगे अइहS
जनता से करी कर जोरिया हो
भादो भद.......
भादो भदवरिया में कुदेला भदाहवा
गिरेला गरीब के दुअरिया हो।

गणेश नाथ तिवारी"विनायक

◆ ◆ ◆

गजबे प्रचार करेला

गाँव-गाँव गली गली, गाड़ी से गजबे प्रचार करेला।
चम-चम चमकेला, चोरवो चुनाव भरि चापत रहेला।

जब जब जनता जबाब मांगे, जीतला पर भरमावत रहेला
आजुवे अगोरऽ अब, आँखि अँजोरे अजमावत रहेला।।

जनता के जाप जपे, जब तक खलिहा चुनाव रहेला।
जाइ-जाइ घूमे गाँव-गाँव, काँव-काँव खाली वोट करेला।

धइले बा धन लूट-लूट, घूँट घूँट पीके ई नोट छिंटेला
जीतते चुनाव छोड़े पोआ, पाई पाई जोड़ि दिन रात लुटेला।।

गणेश नाथ तिवारी "विनायक"
श्रीकरपुर, सिवान

आगे केहू के चले ना

"का हो! अभिन चार दिन तोहरा अइले ना भइल, आ गोड़ बहरी निकले लागल। कवना घर के हऊ। एगो रहन नइखू सिखले।"

अभिन फुआ के बातो पूरा भइल ना रहे, तले खवासिन बीचे में बोल उठली-

"ए फुआ! जाए दीं। अभिन बहुरिया के बुधिए केतना बा।"

"का रे! तोर ई मजाल हो गइल, आ कि फुआ के बात काटे लगले।"

फुआ के त एड़ी से कपार ले जरल रहे। खीसे धनकत रहली।

"ए बहुरिया! अब केतना दिन बइठल खइबू। रोपनी होता..मजूर लोग के पनपियाव बनावे के बा। जा चूल्हानी!"

बहुरिया बेचारी सहरुआ लड़की.. ई सब कहाँ देखले रहली.. रोपनी-सोहनी, माटी- झेंटी। तबो बेचारी बइठल पनपियाव बनवली। मने-मने खिसियातो रहली- अपने त चल गइलें नोकरी करे। आ हमरा के फुआ के कपारे फँसा देहलें। अबकी हमहूँ संगे चल जाएम। ना आपन सास बाड़ी, ना आपन ससुर। इहांँ केकरा खातिर रहेम। बहुरिया के लोर रोकले ना रोकाए।

खवासिन सब बूझत रहे, मने फुआ से अझुराए के मतलब रहे जवनो दू कौर खा के जियत रहे, ओहू पर आफत हो जाइत।

बिहान भइले नवकी बहुरिया पेटी-बाकस बान्ह के तइयार-

"हम इहवाँ ना रहेम..माई किहाँ जातानीं। एतना कार धंंधा हमरा से ना होई।"

फुआ के त बकारे बन हो गइल। अब इहो देखइबऽ का हो दइब! घर के इजत बहरी जाव आ लोग बाग तमासा देखो एसे पहिले छन भर में फुआ नरम हो गइल रहली-

"देखऽ बहुरिया! भाई-भउजाई के जाल सँभारत भुला गइल रहनीं हँ कि ई हमार राजपाट ना ह। हम तोहार एगो खर जियान होखे नइखीं देहले, ना अपना जिनगी में जियान होखे देम। अब तू आ गइलू आपन जाल सँभारऽ! अब ए जिनगी के गदबेरा में हम का मलिकाव करीं! आपन कुल- कापड़ सँम्हारऽ! हम गंगासागर नहाए जाए के चाहतानीं।"

नवकी बहुरिया भी इज्जती घर के रहे। ओकरा बुझत देरी ना लागल कि ओकरा से बड़का भारी खसूर हो गइल बा। जुरते फुआ के गोड़ ध लेहलस-

"हमार बाबूजी रउरे के देख के बियहले बानीं। हमरा के छमा करीं। आपन कान ध के, किरिया खा के कहतानीं फेन अइसन खसूर ना होई। ए कुल- खनदान के पुरनिया रउरे बानीं। अपना सरन में ले लीं..कर जोरतानी।"

खवासिन आ बाकी दाई- लवड़िन के त ठकुआ मार देले रहे। फुआ के मन के कवनो दुख- तकलीफ बरदास्त से बहरी रहे। आज ले अइसन कहियो ना भइल रहे-

" जाए दीं फुआ! मतारी बरोबर बानीं। सब त रउरे कुल पलिवार ह। आज ले निबहनीं, आगहूँ निबाह दीं। रउरा से हमनी के जियऽतानीं। हमनीं के टुअर हो जाएम सन। छमा करीं छमा करीं! हमनीं के अरदास बा..दसो नोंह जोरऽतानीं"

तनी देर बाद फुआ अथिर भइली। घर के हँसी- खुसी फेन से लवट आइल। फुआ धीरे- धीरे बड़ी सानत से घर के जाल, पथार से अपना के अलगा क लेहली। अब घर के सारा जाल बहुरिया देखे लगली।

ए बीचे एगो अउरी नीमन बात भइल। दान-दहेज के लफड़ा से अंजलिया के बियाह कट गइल। अब अंजलिया फुआ के सेवा टहल में रहेले। उनके लगे सूतेले, उनकर कार सँभारेले। बहुरिया ओकर आगे पढ़े के इंतजाम बात क देले बाड़ी। जिनगी के गदबेरा में फुआ के अब कवनो चिन्ता फिकिर नइखे। बहुरिया फुआ के हर खातिर बात करे के एके गोड़ पर तइयार रहेली। फुआ भाई-भउजाई के करजा त ए जनम में ना उतार सकली, मने अगिला जनम में उतार सकस एकरा फिकिर में जरूर रहे लगली। बहुरिया के अपना गहना के पेटी के संघे जिनगी के सारा भार सउँप के फुआ निहचिन्त हो के भजन-किरतन में रम गइली।

◆ ◆ ◆

डॉ शिप्रा मिश्रा

प० चम्पारण, बिहार

बाढ़ से उजड़ गइल गाँव के जइसन

बाढ़ से उजड़ गइल गाँव के जइसन,

सुनसान बानीं हम बंजर जमीन पर धसत नींव के मकान हईं।

हमरा चौखट पर कवनो परिंदा भी ना झाँकेला,

अब मानऽ ना मानऽ, एतना वीरान बानीं हम।

मर गइल बा जज्बा अब,

ए जिंदा लाश में तू मनले बाड़ऽ कब्र,

उहो कब्र में हम श्मशान बन गइल बानीं।

हम पत्थर दिल हईं, आँसू जाया नाहीं करेला,

अब हम हालात से रोज लड़त बानीं,

जंग के मैदान हईं हम।

हम बेशकीमती हईं आईने के नजर में नाहीं,

गैरन के खातिर नफा, खुद के खातिर नुकसान हईं।

कौन कहेला कि हमरा में हौसला के कमी रहे?

हम तकदीर से चोट खाइल हईं,

एक इंसान हईं हम।

◆ ◆ ◆

याद तोहार आवत बा

नेत्र तोहार सुहावत बाड़ी खिलल धूप के जइसन,

याद तोहार आवत बा, गगन के खुशबू अद्वितीय महकावत बा।

जलपरी के जइसन रूप नजर में बस जात बा,

स्नेह मोती-प्यार अंतस किरण जगमगावत बा।

चाँद के जइसन चमकत नेत्र तोहार सुहावत बाड़ी,

मंद-मंद मन मुस्कान लहरावत बाड़ी।

रंग गुलाबी गुलशन प्रेम ढावत बा,

बिंब आँखिन के ज्योति मुस्कुरावत बा।

आभा के रौनक दर्पण खिल जात बा,

मोहब्बत बारिश के जइसन भीनी-भीनी भिगावत बा।

फलक पर नयन राग गुनगुनावत बाड़ी,

दिल मोहन तोहार पास बुलावत बाड़ी।

अंबर के किरण अंतस लहलहावत बाड़ी,

मधुर मिठास सौंदर्य झिलमिलावत बा।

याद दिलन के बार-बार बुलावत बा।

◆ ◆ ◆

कु.रेखा कवयित्री
बलिया

प्यार के मोल

मटकू नूनू, गांव भर के नूनू रहले। का बूढ़, का जवान का लइका, का सयान ! चिन्हइबे ना करे कि ऊ, के के का लागेले ? लइको के नूनू, बुढ़ओ के नूनू, बेटियों के नूनू अउरी पतोहियो नूनू। गाँव के प्रसिद्ध आदमी रहले, जवानी के खेलल खाइल। लेकिन थकले पर उढ़ुक भइल रहले। अब तऽ कौनो कामो धाम पार ना लागे, बस एगो झोलरी खटिया पर सूति के तुमड़ी पर तान तूरत रहसु। बारूदवा, बैलन की नाद में छांटी डारु। घुरहुआ, चार दिन खेत जोतइले भइल, ए बेरा ले कोन आरि ना कोड़ाइल। दउर सारे, कोड़ि के आउ। मजाल का, कि उनकी देखत भर में लड़िका लोग एको मिनट खातिर बइठि जाउ लोग, एकदम ना। बोली में दम एतना, कि डांटसु तऽ आसमान दलकि जाउ। बेटा लोग के हमेशा तरहा चटकले रहे, कि बाबूजी रिसिया जइहें। जहाँ भेजसु जल्दी जा के, काम कऽ के आके, देंहि देखा दिहल जरुरी रहे। ना तऽ कल्याण ना। बाप रहले, अदब एतना कि मजाल का कि उनकी मर्जी की खिलाफ केहू छिंकियों देउ। गारी से निखवाइन कऽ देसु। एकदम फोट पर खड़ा रहे के पड़े, ना तऽ कयामत।

तीन भाई में बारूद जेठ, घुरहू मझिल अउरी तक्कू छोट दुलरुआ बेटा रहले। बारूद दस ले पढ़ियो लिहले, लेकिन घुरहुआ का स्कूलो से भेंट ना भइल। घर में जेठ भइला की नाते बारूद के मोलो मर्याद ठीक रहे। लेकिन घुरहुआ जइसे खरिहान के उचिलावल लेंड़ूरी। ओके मोल मर्याद ओतना ना रहे। ना ओके निम्मन चिक्कन खाए के मिले, ना

सुबहित पहिरे के । नया कपड़ा सियाउ, तऽ बारूद पहिरसु। जब उनका छोट होखे लागे, चाहें पुरान हो जाउ तऽ घुरहुआ के दिया जाउ। उ ओके सधा के जबले चिगदी-चिगदी फारि ना देउ, तबले ओकरा दूसर ना मिले। तबो ओकरा मलाल ना। मेला करे के, जहाँ बारूद अउरी तक्कू के पांच रुपया मिले, उहें ओकरा के एक रुपया चाहें डेढ़ रुपया से बेसी ना मिले। यदि केहू टोकि देउ तऽ नूनू ओठ पर मुसुकिया छांटत कहसु, कि ई एतनो ना खर्चा करी। सगरी उबारि के लेले आई।

लेकिन घुरहुआ बड़ी कर्मठी रहे। पइसा खातिर हजार गो उधापन करे। बकरी पोसे, तरकारी बोवे, कहीं मजदूरी मिले तऽ उहो कऽ आवे। कमा-कमा के बचा के धरे, लेकिन जहिया नूनू जानि जासु कि ओकरी लगे पइसा बा, तऽ पोल्हा के चाहें धमका के मांगि लेसु। ऊ बेचारा देइयो देउ। एगारह बारह साल की लइका के औकातिये केतना। लेकिन तबो घर के सगरी काम उहे करो। रोज बिहाने बसिया ओसिया खा के, खांची खुरपी लेके बकरी चरावे चलि देउ। ओनहे बकरियो चरावे अउरी घासियो गढ़े।

ओनहे दूसरी गाँव के एगो लड़की रोज अकेले पढ़े आवे। आवत जात रोजे ओकरा घुरहुआ से भेंट होखे। ओके देखते घुरहुआ कामधाम छोड़ि के ओके निहारे लागे, लेकिन बतियावे के सुयोग ना बने। एकदिन देखते हिम्मत कऽ के सरकत ओकरी आगे गइल अउरी जाते पूछे लागल,

"तोहार नाम का हऽ?" लइकियों रुकि गइल अउरी मुसुकिया के कहलसि

"रासपरी |" सुनि के घुरहुओ हँसे लागल अउरी फेरु पूछलसि,

"चिरई दाना चुगी कहिया?" सुनि के रासपरी भी शायद आशय बुझि गइली अउरी हंसि के छछनत कहि के चलि देहली, कि

"अइहें राम वनन से तहिया |"

ऊ रूप अउरी हंसी घुरहुआ एकटक निहारत रहि गइल, लेकिन ऊ चलि गइली। जब जान पहिचान भइल तऽ ई परिचय धीरे धीरे ओ लोग के खेला बनि गइल। रासपरी की स्कूले आवे की बेरा घुरहुआ रोजे दुनू बेरा रास्ता पर पहुँच जाउ। रासपरी आवसु, तऽ बस एतने बाति रोजो पूछे,

" तोहार नाम का हऽ ?"

"रासपरी |"

" चिरई दाना चुगी कहिया ?"

"अइहें राम वनन से तहिया !"

कहि के रासपरी भी हँसत चलि देसु तऽ घुरहुआ भी आके अपनी काम में लागि जाउ। सालन ले ई खेला चलल। रासपरी भी कहियो ए के बाउर ना मनली, हमेशा हंसि के जवाब दिहली अउरी चलि दिहली। अउरी घुरहुआ का तऽ ई कुलि नीमने लागे। लेकिन कुछदिन की बाद रासपरी के आइल अकस्मात बन्द हो गइल। अब तऽ घुरहुआ पागल रूप हो उठल । अधीर एतना कि दिनभर उनकी राह में खाड़ रहि जाउ। खइलो से गरज ना। बहुत कामोधाम से गरज ना। घर के लोग परेशान कि एकरा हो का गइल? लेकिन महीना दिन की बाद एकदिन रासपरी जब स्कूले जात लउकली, तऽ ओकरी चेहरा पर फेरु से मुस्कान लौटि आइल अउरी जा के आगे खाड़ भइल।

"तोहार नाम का हऽ ?"

"रासपरी ! "

"चिरई दाना चुगी कहिया ?"

"धत, पगला,, अब का मेघ मचावे घहरा। गइल चिरइया दूसरी पहरा ।। हई मंगलसूत्र नइखे लउकत का ?"

कहि के रासपरी अपनी घर की ओर वापस लगली भागे। उनके भागल देखि के बगल की खेत में काम करत बोधन दउरल अइले। उनका बुझाइल कि घूरहुआ छेड़खानी कइलSसिहS। आवते लगले डांटे। अब तS घूरहुआ की देंहि में कटले खून ना, कि नूनू यदि जनिहें तS आफत हो जाई। चट ओकर दिमाग घूमि गइल अउरी उहो लागल भागे। भागत कहाँ चलि गइल, कौनो अता पता ना।

सांझि ले जब घरे ना लौटल, तS घर के लोग बेचैन, लागल खोजाए । नूनू रिसिया के एकदम भूत हो गइले अउरी लगले बारुदवा के ताव देबे। "बरुदवा, जहें ऊ भेंटाउ, तहें मारि के लाठी से देंहि सोझ कS दे।‘’ पनरहियन से एकर लापरवाही देखS तानी, काम तनिको अवगतते नइखे। दिनराति ना जाने कौनी नशा में बयाला भइल रहSता ।" लेकिन घूरहुआ भेंटाई, तब नू केहू मारी। राति भर सभे खोजल, लेकिन ओकर कौनो अता पता ना। दूसरा दिने खोजाईल, तीसरा दिने तS हितई नतई में भी खोजाए लागल। खोजत खोजत जब दू दिन ले ना मिलल, तS घर के लोग एकदम बेचैन हो उठल। घर में रोवन पीटन पड़ि गइल। कहीं नूनू बइठि के लगले रोवे, तS कतहूँ नूनू बो।

नूनू बो विलाप करत कहे लगली कि "ई कौनो हुंशियारो ना हS। जे जौन कहि दी तौने मानि जाला। मांगहूँ के ढंग ना हS, कि केहू से मांगि के खाई। का खात होई, का पियत होई? काम में अझुरा जाई, तS खइलो पियला के भीर ना। जे जौन दे दी तौने पर सबूर, ना दी तबो कौनो बाति ना।"

महीनवन ले राति राति भर विलाप कइली,

कहाँ बाड़े रे बऊका ?
तोरे माई रोवेली, तोरे बाप रोवेले।
तोर पोसुआ बकरिया सेहो रोवेले।
कहाँ बाड़े रे बऊका ?

नूनू बो जब रोवे लागसु तS घर रोवल तS का भइल जवार रोवे लागे। कहीं भोंकार पारि के नूनू रोवे लागसु, कहीं सुसुकि सुसुकि के बारूद रोवे लागसु। गांव के लोग जूटि के चुप करावे लागे। लेकिन रोवले गवले का होखे के रहे।ओकरा तS जहाँ जाए के रहे चलि गइल। छोड़ि गइल तS खाली बतियावे खातिर बतगूंजन कि "ना जाने कहां चलि गइल कि कहीं पता ना चलल। धरती खा घरलसि कि आसमान उड़ा ले गइल।

(02)

ओने घुरहुआ भागल तS ना जाने कवनेंगा भटकत, बंडड़ियात मणिपुर की एगो इलाका लोकपुर की जंगल में पहुंचि गइल। साँझ के बेरा रहे, पहाड़ी इलाका, घना जंगल, अउरी ओही जंगल में अनसोहात घूमत एगो तेरह चौदह साल के बालक, घुरहू। कइसे ऊ उहाँ पहुँचल, कहाँ बस पकड़लसि, कहाँ गाड़ी पकड़लसि, कौनो अता पता ना। कहाँ जाई, रात में कहाँ रही, का खाई, कहाँ सूती, कौनो अता पता ना। सागर की प्रचण्ड तूफान में फंसल एगो छोट नाव, जौना के तूफ़ान कहाँ ले जाई कौनो अता पता ना। ओही तरे समय की तूफ़ान में फंसल घुरहुआ ओ पहाड़ी पर भटकत रहे। नंग धड़ँग देंहि, भूखि मारत मारत देंहि

सूखि के कंकाल हो गइल रहे, पेट धसि के पीठि में चलि गइल रहे। के का कहSता कुछ बुझियो ना पावे, खाली सबके मुंह निहारे।

तले हथियारबंद उग्रवादी ओके देखि लिहले सन। ओकने का बुझाइल, कि ई पुलिस के कौनो जासूस हS, जौन भेष बना के हमने के जासूसी करे आइल बा। जब ऊ ओके बोलवले सन तS हाथे हाथ बंदूक देखि के ओके खून सूखि गइल अउरी लागल भागे। लेकिन भागि के जाई कहाँ? जब ना कौनो ठांव बा, ना कौनो रास्ता पता बा तS? आतंकी चोटिया के ओके धS लिहले सन अउरी मारत पीटत ले आके कमाण्डर की आगे पटकि दिहले सन। अब का करो? कमाण्डर तS देखे में अउरी भयंकर रहे। पूरा देंहि में गोली के बेल्ट लपेटले बीस पचीस आदमी की सामने एगो बड़हन पत्थर पर गोड़ लटका के बइठल कुछ बतियावत रहे।

जब सुनलसि, कि ई लड़िका पुलिस के जासूस हS तS रिसिया के भूत हो गइल अउरी बड़े बड़े आँखि गुंड़ेरले दउरि के आके एक लात मारत पूछे लागल, "बताउ, पुलिस के जासूस हवे ? अबले केतना जानकारी दे चुकल बाड़े तें?" लेकिन जब घूरहुआ का कौनो जानकारिये ना रहे, तS ऊ बताओ का? ओके तS वोईसे ही भूखि से टूटल देंहि, एके लात में ढीमला गइल। लेकिन तबो ऊ मारल ना छोड़लसि। ई बाप बाप चिल्लाऊ अउरी ऊ मुक्का पर मुक्का गिरावे। एतना मारि कि, मारि के इनके पटवा दिहलसि। ओकरी बाद अपनी एगो साथी के आदेश देत कहलसि, कि गँड़ासा ले आ के एके काटि दS।

लेकिन तले दूसर एगो आतंकी कहे लागल, हमनी की नियम की अनुसार कत्ल के अधिकार खाली सरदार की लगे बा। हमनी का पकड़ले बानी जा, हमनी के काम खतम। अब एके सरदार की लगे ले चलS, सरदारे सजा दी। घुरहुआ पकड़ि के सरदार की सामने हाजिर कS दिहल गइल, जिन्दगी के फैसला खातिर।

तीन ओर से पहाड़ से घिरल भूभाग। पहाड़ पर जंगली बृक्ष चीड़, देवदार से भरल हरियाली। ओही पहाड़ी जंगल की झुरमुट में लुका के बसल, एगो छोट मोट मुश्किल से बीस पच्चीस घर वाला गांव, लोकपुर। लेकिन सुंदरता एतना कि स्वर्ग के भी मात देउ। पहाड़ से घाटी में उतरला पर लगभग आधेआध अइला पर ऊ गांव रहे। गाँव में ढूकते हथियार से खेलत लइकन के देखि के घूरहुआ बुझि गइल, कि अब जान बची ना। ई जल्लादन के गांव हS, आदमी के मांस खाए वालन के बस्ती। अब मुअला की सिवाय दूसर कौनो रास्ता नइखे।

आतंकी ओके लेके एगो घर की सामने अइले सन। घर तS कौनो बड़हन ना रहे, लेकिन सुंदरता में शायद शीश महल के भी मात देबे वाला रहे। रंग पेंट मन के मोहे वाला, बड़े बड़े खिड़की पर शीशा मढ़ावल। लेकिन दुआरी की ठीक सामने बंदूक टांगल रहे। जौन शायद ओ घर में रहे वाला के चाल चरित्र देखावत रहे। घूरहुआ के सात आठ गो जवानन की देख-रेख में दुआरे खड़ा करा के कमाण्डर घर में भीतर गइल अउरी भीतर जाके ना जाने का कहलसि, कि भीतर से एगो मेहरारू शेर की तरे झपटत निकलल अउरी आवते घूरहुआ पर टूटि पड़ल। लात से हाथ से लागल मारे। मुंह से कुछ बोलबो करे, लेकिन ओकर बाति घूरहुआ कुछ बुझिए ना पावे कि ओके कुछु जवाब देउ। दू चार लात अउरी दू चार मुक्का मरला की बाद ऊ मेहरारू चुपचाप घर में

ढुकि गइल। ऊ मेहरारू ओ कबीला के सरदार रहे, हिररानी देवी। ओकर इज्जत एतना कि ओकरी एक इशारा पर लोग मरे मिटे के तैयार रहे।

ओ बेरा घुरहुआ लोकपुर की लोग खातिर तीसरी दुनिया से उतरल कौनो एस्ट्रोनाट से कम ना रहे। पुलिस की जासूस की प्रति गुस्सा एतना कि हाथ बान्हि के ऊ बीच में पटवावल रहे तS किनारे किनारे लोग ओके घेरि के खड़ा होके देखत रहे । जौने सुने कि पुलिस के जासूस पकड़ाईल बा, दउरल पहुंचि आवे अउरी आवते एक दू चटकन मारिए के रुके।

घुरहुआ की कतल खातिर बड़हन गंड़ासा आइल, जल्लाद पत्थल पर रगरि रगरि के ओइपर शान धरावे लागल। लकड़ी के ठेहा आइल, सामने धरा गइल। बस अब देरी रहे, तS हीररानी देवी की घर में से निकलला के। ऊ निकलिहें, फैसला सुनइहें अउरी जल्लाद जासूस के गर्दन उड़ा दी। गर्दन उड़ावल देखे खातिर तS भीड़ एतना कि तिल बराबर भी कहीं जगह ना। पूरा कवीला के लोग जुटल रहे। कुछ देर की बाद हीररानी देवी निकलली। उनकी निकलते जयकारा से आसमान गूंजि उठल। जल्लाद हथियार सन्धान कS के खड़ा हो गइल। बस सरदारनी की आदेश के देरी रहे। तले कबीला के एगो बुजुर्ग दउरल आइल अउरी हीररानी देवी की आगे खड़ा होके अपनी भाषा में कहे लागल,

"दुहाई हो सरदारनी के। लेकिन जबले राउर पति जिन्दा रहले, तबले केहू के सजा दिहला की पहिले ओकर पक्ष सुनल जात रहे। तेरह चौदह साल के लइका जासूसी ना करी। ई जरूर नासमझी के शिकार भइल बा।"

"लेकिन जब ई कुछ बतावते नइखे, तS एकर पक्ष कइसे जानल जाई?" कबीला के कमाण्डार बोलल।

"जब हमनी के भाषा बुझी तब न कुछ बताई ? जब बुझते नइखे तS बताई कइसे? सांग डी (नाम) बिहार रहेले। उनका उहाँ के भाषा जानकारी बा। ऊ आके बतियावसु।"

सांग डी बोला के अइले अउरी घूरहुआ से बतियवले। तब जानि के सभे सन्न रहि गइल। ओकरी बाद तS आतंकिन अउरी कमाण्डार के सभे लागल धिक्कारे। ओ लड़िका के सच्चाई सुनि के हीररानी देवी का भी बड़ी दुःख भइल अउरी ओकरा से माफी मांगत कहे लगली, कि "हमरी कबीला के लोग तहरी साथे बहुत बर्बरता कइले बा।ओकरा खातिर हम शर्मिंदा बानी। आजु से तूँ हमरी लगे रहS, हमार बेटा बनि के।" ओकरी बाद घुरहुआ के दिन पलटि गइल, उहें लागल रहे।

(03)

घूरहुआ, हीररानी देवी के बेटा बनि के रहे लागल। जब खुला आसमान मिलल तS गांव की सकिस्त झोंपड़ी में रहे वाला घूरहुआ का पांखिओ जामि गइल। जब खुला तालाब मिलल तS बाप की अनुशासन में दबल घूरहुआ जंगल की तालाब में क्रीड़ा करे लागल। जब बात कहे के आजादी मिलल तS जुबान से धरती हिलावे लागल। हीररानी देवी ओकरा में जहर अउरी बारूद एके साथ भरे में कौनो कोर कसर ना छोड़ली। कबीला की लोग के बलिदान, आपन जिन्दगी अउरी अपनी पति के पुलिस द्वारा कत्ल के सारा घटना के आगि बारि के ओकरी आगे परोसली। कबीला के दहकत

इतिहास बतवली। आपन संस्कृति, सभ्यता अउरी परंपरा के रक्षा चाहें जड़, जंगल अउरी जमीन के रक्षा के कबीलाई प्रतिबद्धता बतवली। धीरे धीरे घुरहुआ चलत फिरत बम बनि गइल। कबीलाई ट्रेनिंग लेके गुड़िल्ला लड़ाई लड़े वाला बहादुर योद्धा। पूरा मणिपुर में ओकरी नाम के डंका लागल बाजे। नामो बदलि गइल, घूरहुआ से 'वांग चुन' बनि गइल। सरदार हीररानी देवी के बेटा वांगचुन।

कुछुए दिन में ऊ आपन बिहारी पहिचान भी भुला गइल। रहन-सहन, खान-पान, आचार-व्यवहार सबमें मणिपुरिया हो गइल। अगर याद रहे तS बस रासपरी की साथे खेलल ऊ जुबानी खेला कि,

"तोहार नाम का हS?"

"रासपरी !"

"चिरई दाना चुगी कहिया?"

"अइहें राम वनन से तहिया!"

एकरी बाद कुछू ना। मने किशोर मन के बस प्यार जिन्दा रहे।

काबिलियत अउरी बर्बरता की दम पर तेरह चौदह बरिस बीतत-बीतत तS ऊ अपनी कबीला के कमांडर भी बनि गइल अउरी मणिपुर के सबसे खूंखार आतंकी भी। ओके कमाण्डर बनावे की दिने समूचा कबीला के लोग, बड़हन से लेके छोट ले सभे जुटल रहे। सबकी सामने कमाण्डर के ताज़ वाँगचुन (घुरहुआ) की माथे पर धS के हीररानी देवी शपथ दियावत कहली, "देख बेटा, पूरा कबीला के लोग जानSता, कि तें हमार आपन बेटा ना हवे। लेकिन तोरा के हम आपन बेटा बनवनी। अब पग पग पर तोरा साबित करे के पड़ी कि तें हमार बेटा हवे, हीररानी देवी के बेटा। आज कबीला की लोग की सामने हम ऐलान करि रहल बानी, कि जहिया तनिको कमी देखब, तनिको रहम ना, अपनी हाथ से तोर कतल करेब। जो बेटा, हीररानी देवी के नाम रोशन कS दे।"

कमाण्डार बनते ऊ एतना बर्बरता लागल करे कि केहू के बाति ना सुने। कबीलाई दुश्मन चाहें पुलिस के मिलाके सैकड़ो आदमी के हत्या कइलस। सरकार ले हिल गइल। अजीज आके पुलिस का ओकरा पर इनाम के घोषणा करे के पड़ल। मणिपुर के सबसे तेज तर्रार पुलिस अधिकारी हरिसिंह के ट्रांसफर कS के लोकपुर में बोलावल गइल। हरिसिंह आवते पुलिस के कई गो टीम बनवले अउरी जंगल में चप्पा चप्पा पर ओकर खोज लागल होखे। लेकिन लाख कोशिश की बादो ओके ट्रेस कइल संभव ना हो पावे। पुलिस परेशान कि का कइल जाउ? संयोग से पइसा की लालच में ओकरी टीम के एगो आतंकी पुलिस से मिल गइल अउरी लागल सूचना लिक करे।

लगभग महीना दिन बाद जासूस से खबर मिलल कि लोकपुर से पंद्रह किलोमीटर पुरुब में हिंगवान पहाड़ी पर ऊ लुकाईल बा। खबर पक्का रहे। आनन फानन में हरिसिंह की नेतृत्व में बीस गो तेज तर्रार पुलिसन के टीम बनल, अउरी वांगचुन के मारे पुलिस चलि दिहलस। राति के लगभग एग्यारह बजत रहे। अन्हरिया एतना कि अपने देंहि ना लउके तS दूसर केहू कवनेंगा लउकी? पुलिस हिंगवान पहाड़ी की लगे पहुंचि गइल। लेकिन पहरेदार देखि लिहलस। हड़बड़ात जाके वांगचुन के जगा के कहलसि कि रोड पर तीन चार गो गाड़ी के लाइट लउकल हS। लेकिन पहाड़ी की लगे आके सगरी लाइट बुता गइल बा। माने गाड़ी उहें रुकि गइल बाड़ी सन। अब रुकि

रुकि के टॉर्च बरत, हमनी की ओर आ रहल बा। बुझाता कि पुलिस हS।

सुनि के वांग चुन हरक्क़त में आ गइल अउरी गोल की सगरी साथी कुलिनी के जगा के कहलसि एकदम तैयार हो जा लोगें। अउरी अपने लाइट के तजवीज लागल करे। "सही में लाइट वाला हमनिए की ओर आवSताड़े सन। रिश्क लिहल ठीक नइखे। जल्दी भागS सन इहाँ से। बुझाता गद्दारी कौनो कS दिहले बा।" कहत आपन हथियार लेके अलर्ट मोड में आ गइल,

"लेकिन कमाण्डार, गद्दारी के करी?" पहरेदार पूछलस,

"ई सोचे के ए बेरा समय नइखे। ए बेरा जान बचावS सन।" ओकरे बाद संघतियन से बोलल, "जल्दी पेड़ की लोत में लुकात भागS सन। जबले ओने से गोली ना चले, तबले गोली चलावे के नइखे। लेकिन ध्यान रहे कि यदि ओने से एको गोली चलल तS फेरु केहू जिन्दा जाए के ना चाहीं। अलग अलग दिशा में जल्दी भागS लोगें।"

लेकिन अबे आतंकी एने ओने भगिते सन तले पुलिस चारु ओर से घेरि लिहलस अउरी मुनादी लागल होखे। "वांगचुन, तुम और तुम्हारी पूरी टीम चारो ओर से पुलिस से घिर गई है। भागने पर बेमौत मारे जाओगे। इसलिए बेहतर है कि हॉस्टाइल कर दो। तुम्हे बचा लिया जाएगा।"

लेकिन वांगचुन पुलिस की मुनादी के दर किनार करत अन्हरिया के लाभ उठा के लागल भागे। फेरु तS दुनू ओर से गोली चले लागल। घंटन ले गोली चलल। दू गो आतंकी पकड़ा गइले, दू गो मरा गइले। लेकिन एगो पुलिसो मराइल रहे। पुलिस अधिकारी हरिसिंह के भी कहीं अता पता ना। पुलिस उनके खोजे लागल, जंगल झाड़ी चारु ओर। सारा जंगल छानि मराइल लेकिन कहीं ना मिलले। दूसरा दिन लासो खोजाईल लेकिन लासो ना मिलल। अब तS मणिपुर पुलिस के हाथ पांव फूले लागल। लेकिन सबकी बादो वांगचुन बचि गइल।

हरिसिंह के खोजे खातिर पूरा मणिपुर में काम्बिंग होखे लागल, लेकिन ना हरिसिंह मिलले, ना वांगचुन। अधिकारी की अपहरण के मामला रहे, पुलिश बदनामी की डर से परेशान। पेपर पत्रिका में वांगचुन हीरो बनि गइल रहे। सारा पेपर ओकरी दुर्दान्त कारनामा से रंगे लागल। आलम ई कि बिहाने पेपर आवते हाथे हाथ लोग कीनि लेउ। हर जगह बाति खाली वांगचुन के होखे। दुकान, मकान चौक चौराहा हर जगह। एने हरिसिंह के परिवार परेशान। मेहरारू के रोवत रोवत हालत खराब रहे। रोज बेटा के लिहले पुलिश आफिस में पहुंचि जासु अउरी रोवे गावे लागस। एइसे अधिकारी अलग परेशान हो जासु।

सात आठ दिन की बाद पेपर में आइल, "हरिसिंह वांगचुन के कब्जे में। रिहाई के लिए वांगचुग ने रखी शर्त।" देखते लोग पेपर पर टूटि पड़ल। लेकिन शर्त पढ़ि के पुलिस हताश हो गइल। शर्त ई कि यदि हरिसिंह के रिहाई पुलिस चाहSता तS पहिले जेल में बन्द हमरी कबीला की सारा कैदी के रिहाई पांच दिन की अन्दर होखो। ना तS छठवां दिने हरिसिंह के लास पुलिस की लगे भेजवा देबि। खबर पढ़ि के पुलिस तS बेचैन होइए गइल, हरिसिंह के मेहरारू भी बेचैन हो गइली अउरी रोवत पुलिस आफिस में पहुंचि के बखेड़ा नाधि दिहली।

"तोहS लोगन चूड़ी पहिरले बाड़S, वांगचुन से बतियावे में डर लागSता। तS हमके बतावS लोगें ऊ कहाँ बा? हम जाके ओकरा से बतियाएब। अगर मारि दी तS हमहू अपनी पति की साथे मरि जाएब।"

पुलिस अधिकारी केतनो समझावसु कि "ओकर यदि पता रहित तS जाके छोड़ा ना ले अइतिंजा। तूँ घरे जा, उनके रिहा करावे के व्यवस्था में पुलिस बा।" लेकिन ऊ माने के एकदम तैयार ना। अउरी हल्ला लगली करे। बाद में उनका से एगो भावनात्मक अपील वाँगचुग की नाम से पेपर में प्रकाशित करावल गइल। कि हरिसिंह के मेहरारू अपनी पति के देखे के चाहSताड़ी।

दूसरा दिने पेपर में जवाब आइल कि "हमरी कबीला के लोग मेहरारू पर हाथ ना उठावेला। यदि उनका हमरा पर भरोसा होखे तS आवसु, देखि लेसु। लेकिन शर्त ई बा कि ना पुलिस के गाड़ी आई, अउरी ना साथ में पुलिस । हमार गाड़ी जाई, उनके बइठाई, ले आके भेंट कराई अउरी ले जा के छोड़ि दी।" पुलिस का शर्त पर आपत्ति रहे, लेकिन हरिसिंह की मेहरारू की जिद्द की चलते पुलिस का शर्त माने के पड़ल। तबो दूसरा दिने जब वांगचुन के गाड़ी आइल तS पुलिस ड्राइबर से पूछताछ करे लागल कि वांगचुन कहाँ बा? अउरी गाड़ी ले के तूँ कहाँ जाइबS?

लेकिन ड्राइवर हाथ जोड़ि के कहे लागल, "साहब, पूछताछ से रउरा सभन हमार अउरी हरि सिंह दुनू जने के जान मुश्किल में डालब सभे। ओकरा के रउरा जानत नइखीँ ऊ जल्लाद हS। कौनो उल्टा सीधा बाति सुनी, तS हरि सिंह के तS मुआइये दी, हमरो के गाँवे आके गोली मारि दी।" सुनि के पुलिस छोड़ि दिहलस अउरी ऊ हरिसिंह की बेटा अउरी मेहरारू के ले के चलि दिहलस।

दूसरा दिने सबेरे गाड़ी वांगचुन की लगे पहुँचल रहे। पहाड़ की ऊपर ओ घना जंगल में जहाँ दिन में भी अन्हार लागे। पेड़न पर ठेहुनिया ठेहुनिया के पसरल जंगली लतादार झाड़ी के देखि के डर लागे। उहाँ गइल सबकी वश के बाति कहाँ? दुर्गम एतना कि जेही जाई, जान जोखिम में डालिए के जाई। ओही झखाड़ में एगो छोट झोंपड़ी, जौन फरके से देखला पर झोंपड़ी भी ना लागे। बुझाऊ जैसे लतादार घास फूस से ढंकल कौनो विशाल पत्थर। लगभग तीन किलोमीटर पैदल पहाड़ पर चढ़ि के हरिसिंह की मेहरारू अउरी लइका के ले के ड्राइबर उहाँ पहुँचल रहे। चौबीस घंटा की यात्रा की थकान से सभे हारल रहे। लेकिन पति से मिलला की व्यग्रता में ऊ पहाड़ पर चढ़ि गइली अउरी जाके झोंपड़ी की सामने खाड़ भइली।

झोंपड़ी की आसपास झाड़ी में लुका लुका के कई गो हथियार बन्द पहरेदार बइठल रहले सन। लेकिन सब ड्राइबर के चिन्हत होइहे सन, एही से कौनो कुछ बोललस ना। लेकिन झोंपड़ी की सामने पहुँचते एगो पहरेदार आइल, कुछ पूछलसि अउरी भीतर जाके केहू से बतवलस। लेकिन भीतर से जब निकलल तS करिया ड्रेस पहिरले अउरी पूरा देंहि में गोली के पट्टा लपेटले एगो नौजवानों ओकरी साथे निकलल। ओ नौजवान के देखते हरिसिंह की मेहरारू के आँखि फइल गइल। "अइसने घुरहूओ रहले।" कहत ध्यान से चीन्हे लगली। ऊ नौजवान भी आश्चर्य से इनके देखे लागल। तले ई

खुदे कहली,

चिरई दाना चुगी कहिया,
अइहें राम वनन से तहिया ।।

सुनते ऊ नौजवान चकित होत इनसे पूछलस,

"तूँ के हऊ? रासपरी हउ का?" प्रश्न सुनि के रासपरी बुझि गइली कि सही में ई घुराहूए हवें। तुरंते बोलि उठली,

"हं! लेकिन तूँ इहाँ कइसे ?"

"हमही वाँगचुन हईं, तोहार घुरहुआ।" सुनि के रासपरी दंग रहि गइली।

"लेकिन तूँ एतना हिंसक अउरी बर्बर कइसे हो गइलS?"

"ई जनि पूछS! आपन बाति बतावS?"

"हमार सुहाग तहरी कब्जा में बा।"

"के? हरिसिंह ?"

"हं !" सुनते वांगचुग उनका से मुंह फेरि लिहलस। लेकिन रासपरी रोवाइन मुंह बनवले अबो ओके देखत रहली

"ठीक बा ! तहरी सुहाग के रक्षा होई।" कहत वाँगचुन जंगल की ओर लागल ताके। ई सबकुछ देखि के रासपरी अवाक रहली, निःशब्द। जेतना हल्ला ऊ वांगचुन की क्रूरता की बारे में सुनले रहली, उनका ई अनुमान ना रहे कि ऊ घुरहुआ होई। लेकिन आजु घुरहुआ की रूप में ओके सामने देखि के अचंभित रहली। थोड़े देर ले वांगचुग जंगल की ओर ताकत कुछ सोचलस अउरी फेरु रासपरी की ओर घूमि के कहलस, "अपनी पति से मिले आइल बाड़ू न?"

" हं !" रासपरी हं में सिर हिला देहली। "लेकिन खाली मिले ना उनके ले जाए आइल बानी।"

"ठीक बा, आवS ! चलS।" कहि के आगे-आगे वांगचुग अउरी पीछे पीछे रासपरी भीतर चलि देहल लोग।हरिसिंह एगो भूमिगत कोठरी में सूतल रहले। रासपरी के देखते ऊ रोवे लगले। रासपरी भी रोवे लगली। ओ लोग के रोवत देखि के वांगचुग बाहर चलि आइल।

थोड़े देर बाद हथियार बन्द दू गो आतंकी गइले सन अउरी दुनू जने के बोला के बाहर ले अइले सन। बाहर आइल लोग तबले तS बाहर पंचायत बइठि गइल रहे। एगो रोबदार महिला कुर्सी पर बइठल रिसिया के भूत भइल रहे। ओकरी दुनू बगल बन्दूक धइल रहे। वांगचुग अउरी दस बारह गो दूसर आतंकी सामने खड़ा हो के गरमा-गरम बहस होत रहे । एगो आतंकी कहत रहे,

"हरिसिंह के जिन्दा छोड़ले कबीला के नियम टूटी। हमरी कबीला के नियम रहल बा, कि एगो बंधक की रिहाई खातिर कम से कम तीन गो बंधक सरकार का छोड़े के पड़ेला से। ना तS ओके सिर काटि के भेजवा दिहल जाला। लेकिन इहाँ तS कुछू ना मिलल, एको शर्त पूरा ना भइल। बिना कौनो लाभ के बंधक के छोड़ला से विद्रोह होई, राउर सरदारी पर भी सवाल उठी।" अबे ओकर बाति पूरा ना भइल रहे, तले बीचे में वांगचुन डांट पड़ल।

"हम ओ नारी के विधवा ना देखि पाएब। कबीला के कमाण्डार हईं। छोड़े के हक हमरा बा।" तले सगरी आतंकी एक साथे चिल्ला उठले सन,

"चुप! कबीला के उसूल तुरे के तोरा हक नइखे।"हल्ला पर हीररानी देवी रिसिया के खड़ा हो गइली अउरी खा जाए वाली निगाह से वांगचुन के देखत दाँत पीसत कहली,

"तोरा हरिसिंह के छोड़े के हक बा, लेकिन दू गो सेनानी मरा गइले, अउरी दू गो पकड़ा गइले। ओकनी की परिवार के हम का जवाब देब। कबीला के लोग हमके का कही ?"

"कुछू कही, हमरा फिकिर नइखे। मरि के इनकी सुहाग के रक्षा करब।"

"ठीक बा, करS! लेकिन हमरा सिर की बदले सिर चाहीं!"

"तS हम बानी न! हमार सिर काटि लS! भेजवा दिहS ।"

"ठीक बा।" ओकरी बाद ड्राइबर से डांटत कहली "तें हरिसिंह अउरी उनकी औरत के ले के जो।" फेरु आतंकिन की ओर घूमि के कहली, "एकर सिर काटे के जल्दी व्यवस्था करS लोगें।" कहत झोंपड़ी में ढुकि गइली।

◆ ◆ ◆

सत्य प्रकाश शुक्ल "बाबा"
भठहीं बुजुर्ग कुशीनगर उ0प्र0

एही धरती पर

सुरेन्द्र प्रसाद गिरि
बारा, नेपाल।

मंत्रीजी के अपना शहर में आगमन भइल रहे। शहर के गणमान्य लोग, कार्यकर्ता आ परोपकारी संघ-संस्था से जुड़ल सभे खूब उनकर आगा-पीछा कइलस। मंत्रीजी के दीर्घकालिक योजना पर भाषण कइला के बाद सरकारी अस्पताल के निरीक्षणो करेके रहे।

अस्पताल के प्रशासनिक व्यवस्था, मेडिकल उपकरण, जीवन-रक्षक दवाई के स्टॉक आ रोगी के अवस्था आदि के निरीक्षण कइला के बाद असहाय पैशेंट्स खातिर फलो वितरण के समय आइल। मंत्रीजी के पीए अलगा-अलगा झोरा में रोगियन ला फल बाँटत रहलें।

बालकक्ष में बाल सुलभ शोरगुल के ठाँव पर अजब सूनापन रहे। मुरझाइल चेहरा, कुपोषण के शिकार आ बेड पर अस्त-व्यस्त सुतल, बइठल छोट - बड़ लइकन के दृश्य देश के भविष्य बतावत रहे। मंत्रीजी के पीए फल बाँटत लइकन लगे पहुँचलें। दू-तीन गो लरिका काँपत हाथ से झोरा ले लेलन स। बाकिर एगो लरिका साफ मनाही कर देहलस।

ओहीजा खड़ा रहल मंत्रीजी के बड़ अचरज भइल। ऊ लरिका के दुलार से मुड़ी पर हाथ राखत कारण पुछलन। लरिका डेराइले कहलस," अंकल जी, डाक्टर शाहेब समझावेलन--फल से पेट ना भरेला--आ खोखियो बिगड़ जाला - -कहेलन, बढ़िया भोजन चाहीं बेमारी ठीक करे खातिर "!

मंत्रीजी उत्सुकता से ढाढ़स देत कहलन, "ठीक बा, बोल लोगिन--तोहनी के का चाहीं"?

" भरपेट भोजन - -!"

लइकन के कारुणिक अनुनय सुनके उपस्थित सभे एक दोसर के मुँह ताके लागल। साँझिया के बेरा होई। दलिची के बहरा आकाश में चिरइयन के झुंड अपना-अपना वास-स्थान के ओरिया उड़ान भरत चलल जात रहे। ◆ ◆ ◆

अखिलेश्वर मिश्र के कुछ दोहा

केतनो बड़का पद मिले, राखीं नरम मिजाज।
करीं भलाई लोग के, मौका बाटे आज।।

कवनो काम करीं मगर, राखीं सही बिचार।
प्रभु के कृपा रही बनल, रही सुखी घरबार।।

दोसर के धन देख के, मन मत करीं मलीन।
बहुते माने में होई, ऊ रउआ से दीन।।

धन से मत जोखीं सबन, ये जीवन के रंग।
निर्धन भी खुशहाल बा, धनिको बाटे तंग।।

केतनो दुःख में मन रहे, करीं ना कबहूँ क्रोध।
मन में मत राखीं कबो, तुच्छ भाव प्रतिशोध।।

जिनगी भर सीखत रहीं, नइखे एकर अंत।
सीखे ले विद्वान जन, साधक पूजक संत।।

बिद्या जइसन धन कहाँ, ई धन बा अनमोल।
हिस्सा बखरा के इहाँ, नइखे कवनों झोल।।

जेतने बा कम बा कहाँ, राखीं अइसन भाव।
सही बात बा ना रही, मन में कुंठा घाव।।

जहाँ कहीं परिवार में, बाड़ें सुभहित पूत।
उहाँ सही में मान लीं, बा संपदा अकूत।। ◆ ◆ ◆

अखिलेश्वर मिश्र
ग्राम+ पोस्ट- रोआरी
जिला- पश्चिम चम्पारण

आपन लइकाई

टीवी के खबरिया चैनल पर जब हम अरनब गोस्वामी नियन एंकर के चिचियात देखींना आ कहत सुनींना "पूछता है भारत" त सोचींना ए भाई जनाता जेकरा से ई बाबू सवाल पूछत बाड़ऽ उनकरा इनकमिंग में कवनो दिक्कत बा। एहीसे तनी टाँठ बोले के परता। आजकाल समइयो त अइसने न चलत बा टावर टुवर के दिक्कत त बटले बा। एक अनार सौ बीमार रहिहन त दिक्कत होखे से के रोक पाई? अब फोन खाली हाल चाल बोले बतियावे खातिर थोरे न बा? जेकर जेतना बुद्धि बा ऊ ओतने तरह से एकर उपयोग करऽता, केहू पढ़त लिखत सीखऽता त केहू गीत संगीत फिलिम भिडियो देखऽता, केहू किसिम किसिम के मुँह बना के सेल्फी लेवे में बाझल बा। केहू सोशल मीडिया से देश दुनियाँ से बिचारन के आदान प्रदान कर रहल बा। दूर रहत सगा सम्बन्धी से वीडियो कॉल करि के जीवन्त बतिया रहल बा। जय हो बिज्ञान के। अरे हँ बात खबरिया चैनल के एंकर के होत रहल ह हम मोबाइल के गुण गावे लगनीं। त ऊ बाबू सवाल त पुछेलन लेकिन ओके बोलहूँ ना देलन जे उनकर मन माफिक नइखे उत्तर देत, कम बेसी कुल्हिए खबरिया चैनलन के इहे हाल बा, झूठो के नाटक देखे के ढेर मिलेला खबर मनोरंजन के नाँव पर।

ई कुल्हिए देखि के हमके हमार लइकाई इयाद आवऽता आ इयाद आवतान मरखहवा माटसाब । मरखहवा माटसाब भी अइसहीं आँख लाल कि के छड़ी के हाथे जवना लइका ओर ताक देस त हमनीं के हालत पातर हो जात रहे। ओइसे त माटसाब लोग लइकन के नाँव ध के गोहरावेलन जा, लेकिन लोकतंत्र के इहे त खूबसूरती ह टाट पट्टी पर बइठे वाला भी सरकार में ऊँचकी कुरसी पर बइठल बाबू लोग के गरियावे आ उनकर मनमाफिक नामकरण के छूट पा जाला। केहू चोरवा त केहू करियवा मटीलगना के उपाधि पा जाला अनायासे। हमनियो के गुरुजी के मरखहवा माटसाब के नाँव से ही गोहराईं जा।

पाँचवा किलास के डड़ारी जइसहीं फननीं जा छठवाँ में इस्कूल के झोरा में अंग्रेजी के किताब खातिर बेमन से जगहा बनावे के परल। एतने नाहीं परदादी संस्कृत के साथे साथ अंतराष्ट्रीय माई के चिन्हे जाने के अतिरिक्त भार सुकुवार कान्ही पर लदा गइल। इस्कूल जाए वाला झोरा में जइसहीं अंग्रेजी के घुसपैठ भइल, हमनीं के दिमाग टेंनसनिया गइल। ऊपर से घर वालन के दबाब कि ए बाबू अंग्रेजी मन लगा के पढ़े के बा एही से नींक नोकरी भेंटाई, धाक जमी गाँव समाज में, देखऽ त फलनवा पानी नियन अंग्रेजी बुकेला, कोशिश करऽ ओइसने बने के। बाप रे बाप अंग्रेजी से पाला पर त गइल, बाकी ना हमनीं के पल्ले पड़ल ना त हमनीं के माटसाब के। कुंजिए सहारा रहे माटसाब के नइया पार लगावे खातिर हमनीं के त नाय पर सवार रहबे कइनीं जा।

ओह समय "सब पढ़ें, सब बढ़ें" जइसन शिक्षा योजना ना रहे आ नाहीं "रुक जाना नहीं तू कहीं हार के" टाइप कवनो स्लोगन। अइसन कवनो बाध्यता भी ना रहे कि बिना पढले ही किलास डका दिहल जा। 100 में से 30 नम्बर लियावल जरूरी रहे पास होखे खातिर। बाकी बिषय में त काँख कुँख के आई

जाव, बाकी अंग्रेजी में 100 में से 30 नम्बर आवे त आवे कइसे? यक्ष प्रश्न सोझा खाड़ रहे पूरा किलास के सोझा। से माटसाब सब तजो एक भजो के तर्ज पर हमनीं के अंग्रेजी में माई हॉबी फुटबॉल अउरी दू दिन के छुट्टी खातिर आवेदन पत्र के कण्ठस्थ करे के फरमान जारी कई दिहलन।

मरता क्या ना करता माटसाब के दुखहरन के आतंक के मारे हमनीं के दुनो चीज अक्षरशः कंठस्थ क लिहनीं जा। पूरा किलास के हॉबी फुटबॉल हो गइल आ सभकरे बोखार के चलते दू दिन के छुट्टी चाहीं। कवनो एसे बा एप्लिकेशन आवे इम्तिहान में एही में जोर जार घटा बढ़ा के लिखे के जोगाड़ बतवलन माटसाब। कइसहूँ रटत सीखत ताकत देखत समाज के श्रमदान सहयोग से नइया पार लागल। डिग्री भेंटात चल गइल। हमनीं के भाग्य मेहनत करे के जज्बा हार ना माने वाली धुन आ ऊपर वाले के किरपा से जिए खाए आ परिवार के पाले खातिर नोकरी मिल गइल। जिनिगी के गाड़ी डगर रहल बा।

आजकाल के बालकन के नम्बर देखि के त अवाक रह जाए के परऽता। हेतना नम्बर लियावे के ह? एतनो नम्बर पवला के बादो ना लइका के, ना गार्जियन के संतोष बा। हमनीं के एह मामिला में बड़ा संतोषी रहनीं जा। पास होखे भर नम्बर के ही अभिलाषा रहे। हमनीं के दू तीन भाई मिलि के एह नम्बर के छू पइतीं जा। जाए दिहीं रात गइल बात गइल । ढँकल छुपल राज के राजे रहल दिहल जाव। फिरंगी के भाषा अंग्रेजी से भवह वाला नाता जिनिगी भर बनले रह गइल, आजुवो अपना गाँव देहात में ढेर लोग से भवह भसुर वाला नाता बनले बा। ढेर नइखे बदलल आपन गाँव रेणु जी के गाँव से अब तक, अंग्रेजी से दूरी कम नइखे होत आ हिन्दियो से नाता ढेर पोढ़ नइखे लउकत ढेर लोग के। भोजपुरी से त सौतिया डाह बटले बा कुछ लोग के। बोलते गँवार के पदवी भेटाए के डर सतावऽता। कुछलोग लागल बा एह धरोहर के बचावे में। खुशी के बात बा, बात त होखे लागल। ना जाने कहिया बिकास होइहन, सोहर गवाई आ थरिया पिटाई?

◆ ◆ ◆

तारकेश्वर राय "तारक"
गाज़ीपुर, उत्तरप्रदेश

रिटायरमेंट

"का हो बाबा काटऽतालऽ न खूब चानी, ढेला फोरला से पइसा ना भेंटाई?" बीरेन्द्र मास्टर क छोटका नतिया महंगुवा टिटकारी मार के हँसि देहलस। ई देखि के रामवतार काका खिसिन नाच गइलन।

"हँ ए हुँडार तू ना बोली बोलबे त के बोली, दू साल में तोरा से मैट्रिक ना न पास भइल? मुर्गा क कलंगी नियन बार क के बहेंगवा नियन घुमले तोरा जिम्मे काम बा।" काका कहलन।

ए बाबा ढेर जनि उफान में आवऽ पुरान शरीर भइल पार्ट पुरजा एहर ओहर हो गइल त बुढ़उती काटल दुलुम हो जाई.... महंगुवा कहलस।

देखऽतालऽ कि ना हउ बकूड़ी मारब न, त चउसठो दाँत झर जाई। खीसिया के काका कहलन।

चौसठ गो? ए बाबा हम त सुनले बानीं आदमी के बत्तीसे गो दाँत होला। ए बेर महंगुवा के इयार पिन्टुवा बोलल।

हम जानत रहनी हँ तू बीच मे जरूर कूदबे एहीसे तोरो बतीस गो गन लेनीं हँ।

हमरा के देखते बालमण्डली ओहिजे से धीरे से गोड़ दबा के सरक लिहलस।

हम अपनी आरी पँजरा बहुते लोग के देख चुकनीं जे अपना रिटायरमेंट ले पहिले ईहे कहत लउकल "जिनिगी भर नौकरी भइल अब त गँउएँ में रहे के बिचार बा, साले छव महीना में जब फंड के पइसा खरकल त घरी के सवांग लोग भी सलाह मशविरा लिहल बन क दिहल। कुछ आदमी त फिर से काम करे के मन बनावल लेकिन देश में बेरोजगारन के फौज खाड़ बा काम ना भेटाइल । भेटइबो कइल त ऊ मजा ना रहे।"

रिटायर आदमी के एकहीं समस्या टाइम कइसे कटी? जब नौकरी रहे त समय ना मिल पावे आ ओही के चलते हीत नात से भेंट मुलाकात ना हो पावे। अब आदमी खलिहा भइल त जे से मिले के बा ओकरो त खलिहा होखल जरूरी बा, ऊ त नइखे। शुरु शुरू में सभे हहा के मिले, धीरे धीरे कन्नी काटे लागल लोग। फोन पर बात कइला पर भी बुझाए लागल कि अगिला जल्दी राखे के बहाना खोजऽता। लोग रास्ता बदलि लिहल। ई कुल्हिए देखि के आदमी अकेल आ बेचारा होत चल गइल।

का हो का हाल चाल बा? रामवतार काका के आवाज जब काने में गइल त बर्तमान में लौट अइनीं।

ठीक बा ए काका। लइका खुरा के परेसान करऽतान सन न?

ना हो एहनिए के चलते त दू बात बोले के भेंटा जाता। ना त ए छूँछा तोके के पूछा? सभे ब्यस्त बा अपना दुःख धनधिया में। केकरा लगे टाइम बा बूढ़ पुरनिया से बात करे क। साँझी के चट्टी पर बइठ जानीं, ओहिजे किसिम किसिम के लोग भेंटाला, दू तीन घण्टा के समय कटि जाला। अपना के सामने दुखड़ा रोवला पर पीठ पीछे हँसबे न करी। गैर के सामने रो के आपन दिल हलुक क लिहले में भलाई बा ।

दुसरा के दुःख के सुन के तस्सली दिहल भी पुनिए क काम बा। रिटायर होखला के बादो त जीनिगी बाटे ना। काटे के त परबे करी। हँस के काटऽ चाहे रो के।

सुनि के लागल शहर के एकाकीपन गाँवों में आपन रहबार बनावऽता। जेतने जनसंख्या बढ़ल जाता ओतने आदमी अकेल होखत जाता। सभे अकेले ही जिए के मजबूर बा । बुजुर्ग के चेहरा पर पड़ल झुर्री अनुभव के खजाना मानल जात रहे। उगत चमकत सुरुज के भी साँझी के डूबहीं के परेला ई साँच हमनीं के लउकत नइखे भा आदमी देखल नइखे चाहत। ई समय सबका जीनिगी में आवे के बा । सब दिन होत न एक समाना। जवन बोवाई तवने न कटाई?

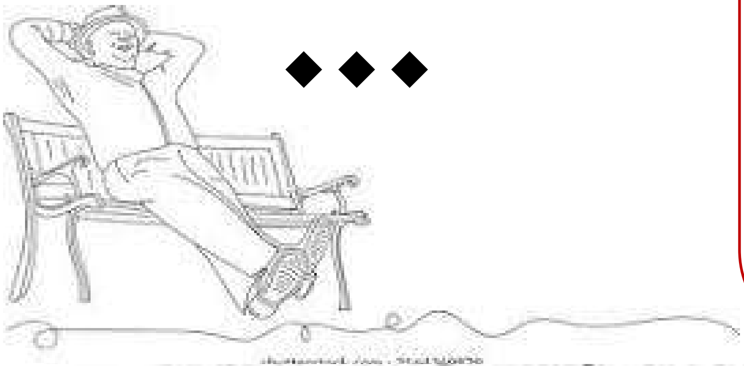

◆ ◆ ◆

तारकेश्वर राय "तारक"

गुरुग्राम, हरियाणा

बात कइसे होई?

बहुत उदास बा ई रात, बात कइसे होई?
अभी त पहिला मुलाकात, बात कइसे होई?

ना चमकल ह बिजुरी केनियो, ना बादर आइल।
भइल बेमौसम बरसात, बात कइसे होई?

भूल-बिसरि के उनसे नयना मिलवनीं हम
मिलल दुःख के भरमार, बात कइसे होई?

तनी तनी बात पर तानल जाता तलवार इहाँ
आदमी एतना वाहियात बात कइसे होई?

चन्द सिक्का खातिर, आजु उनका दुआर से
लवटि गइल बेटी के बरात बात कइसे होई?

सवाल उनकर जवन बनि के आवे 'अनुरागी'
भइनीं हम पहिलही बेबात, बात कइसे होई?

◆◆◆

चंद्रिका प्रसाद पाण्डेय"अनुरागी"

तू असहीं खड़ा रहिहऽ

तू असहीं खड़ा रहिहऽ
वट वृक्ष नियर
जुग जुग तक
काहें कि तोहरे छाँह में
फूटेले नया नया कोंपल
आ तोहरे करे के बा
उनकर भरन पोषण।

तू असहीं खात रहिहऽ गोली
करत रहिहऽ आत्महत्या
काहें कि तोहरे देबे के बा
निवाला हर पिता के
ताकि उनकर बाल बच्चा
उनके समझ सके सुपर हीरो।

तू सहत रहिहऽ
कब्बो बाढ़ कब्बो सूखा
कब्बो सरकार के थपेड़ा
काहे कि ई लोग
फादर्स डे त मना सकेलन
लेकिन फार्मर्स डे नाहीं
हेतना शैतानी
त लड़िका बच्चा ही करेलन
एगो बाप के संगे।

तू देत रहऽ अनगिनत कुर्बानी
आपन फर्ज समझके
काहें कि तू बच्चन के बाप के भी बाप हउव
तू किसान हउव हो
तू महान हुवा।

◆ ◆ ◆

नम्रता राय ठाकुर,
वाराणसी

औरत जात

औरत जात
सब जात
 से
नीच होखेली

समाज ओकरा के

दलित में भी गिनती
ना करेला
स्त्री चाहे ब्राह्मण होखे

चाहे होखे चमार

सब जात के स्त्रियन
 के
हालात उहे बा
औरत के बुझल जाला

कठपुतली अपना
हाथ के
 जे
सबकर हुकुम पर

हर क्षण टहल बजावे
औरत मशीन होखेली

बच्चा जनमावे के

बटन दबावते बेटी ना

बेटा जनमावे के
औरत चरित्रहीन हो जाले

दू शब्द केहू से बोलत-हँसत

ओकर इज्जत के
ढिंढोरा पिट जाला
 केहू के
आपन मित्र कहला पर
औरत कामदार होखेली

परिवार ना
तबो
 कमा-कमा के
खियावे पर
 ताना के
शिकार होखेली
औरत सब जात से नीच होखेली

◆ ◆ ◆

प्रिया मिश्र "मन्नु"
बीरगंज नेपाल

सुविधा शुल्क बढ़ावत जा

सुविधा शुल्क बढ़ावत जा।
बिगड़ल काम बनावत जा॥

काना-फूसी कइ-कइके,
भरम-जाल फइलावत जा।

लोगन के भरमावत जा,
निज के लाभ उठावत जा।

जरे-मरे सब आपस में,
अइसन आग लगावत जा।

स्वारथ साधल एऽक बिधा,
दुबिधा दूर हटावत जा।

◆◆◆

अशोक कुमार तिवारी
सूर्यभानपुर, बलिया

रउरा खूब इतराईं

अइसनो कबो अझुरा जाला आदमी..
नियति के मुट्ठी मे बन्हा जाला आदमी..।

मेला त झूठो के नू बदनाम भइल ..
अपने मे अपना के हेरा जाला आदमी।

रउरा खूब इतराईं अपना बरियारी पर..
कुसाइत सुखले भहरा जाला आदमी।

ऊ आपन गति पहिलहीं से जानत रहे..
तबो ना जाने काहें अगरा जाला आदमी।

केहू केहू के ना ह इहाँ सभे अकेला बा..
समय पर अपने से चिन्हा जाला आदमी।

जब तक आइल ना तब तक बुझाइल ना
मुसीबत में कइसे मुँह घुमा जाला आदमी।

समय ह एक जइसन कहाँ कबो रहेला..
झुठहूँ के नू मरदे अगुता जाला आदमी।

दिन पातर बा त मूड़ी झुका के सुन लीं ..
देखत रहीं कि का-का सुना जाला आदमी।

रहेदऽ 'अजय ' बेसी शोर ना मचावे के ..
जब सुनवाई ना होखे चुपा जाला आदमी।

तहार नेकी-बदी अंत तक तहरा साथ रही ..
बाकी सब धीरे-धीरे भुला जाला आदमी।

◆ ◆ ◆

अजय सिंह 'सिसोदिया'
सिसवन (सीवान)

बिना गलती के

कतहूँ घाटी में गहराई बहुते बा
कतहूँ शिखर के ऊँचाई बहुते बा

बिना गलती के हमहूँ कटनी सजा
हुनको जगवा में रुसवाई बहुते बा

हमरो सूरजऊ निकलिहें जरूरे
भले अपनन के बेवफाई बहुते बा

पछुवा पुरुवा हम बाँच रहल हईं
हुनको चौपाल में तन्हाई बहुते बा

जिनकर सपना खतिरा ही जियनीं
हुनकर नीलामी दुखदाई बहुते बा

पुछ लेईं चिरईन से ऊ सब जाने
ई गाछ गछिया फलदाई बहुते बा

हमरे भागे रेगिस्तान काहें आवे
हुनकर आगे अमराई बहुते बा

गरीबन के बुनियादे टिकल हवे
रजवाड़े के भले रजाई बहुते बा

झूठ सच के हिसाब होई एक दिन
याद रखीं उहवाँ सुनवाई बहुते बा

सोच बुझ के चढ़िहऽ पवदानी पे
देखिहऽ साजिसन में काई बहुते बा

ई सरदी जान लेई अंगारन के
धड़कनो पे बइठल छाई बहुते बा

पानी पे बाँधन के पहरा बावे सही
तइयो खेतन में कमाई बहुते बा

धाप सुनत जा रात लमहर आइल
ई ढलल साँझ परछाई बहुते बा

◆ ◆ ◆

शिवशंकर सिंह सुमित

सभई जुदा हो गइल

स्वार्थ से जे मिलल ऊ जुदा हो गइल,
समझे जेके अपन बेवफ़ा हो गइल।

वक्त बेवक्त हम जेकरे साथ रहीं,
जब बुरा दौर रहे सब हवा हो गइल।

गैर त गैर रहे का कहीं अपनन के,
देखिके हाल सभई जुदा हो गइल।

अंधा जे भी रहल स्वार्थ मे रात दिन,
ऊ सभे अपने सबके खुदा हो गइल।

कर्म जइसन रहल फल भी ओसहीं मिलल,
अपने ही सब जग से गुमशुदा हो गइल।

हम कहीं का जमाना के हालात के,
सब अधर्मी ही जब पारसा हो गइल।

आदमी केहू लउकत कहाँ बा इहाँ,
एह दुनिया से सब लापता हो गइल।

दोषी त सब जमाने के कहता "पुकार",
अब सभई ऐ सबब से फना हो गइल।

◆ ◆ ◆

राम पुकार सिंह "पुकार गाजीपुरी"

कोंहड़ा आ बकरी

" जइसन कोंहड़ा छान्हीं प तइसन भुइया " पुरान कहाउत हवे बाकिर बलेसर बाबूके कोंहड़वा क बतकही त कुछ फरके बा। एह कोंहड़वा लगे एगो बकरियो नू रहे। बकरबुद्धी त कुछऊ ना कुछऊ कमाले करी नू!

कोंहड़वा देखलख जे ओकरा लत्तीमें जहवाँ कवनो पत्ता टुसियाइल कि बकरिया चिबा घालऽतिया। छान्हींका बगलिए झमड़ा, जेपर चढ़िके लतिया पसरत-पसरत चहुँप जाइत छान्हीं काओर। कोंहड़ा एह समसेया क निदान खोजलख। बकरीसे दोस्ती के परसताव दिहलख- "रे बकरिया, जब हमनीं दुन्नूके एकट्ठे रहेके बा त दुसमनीमें कहाँ कवनो फैदा ? "

"आरे, कोंहड़ा भाई, हम कहाँ कौनो

दुसमनी करत बानीं ?"

"ह नू ! त रोज-रोज हमार नवचे पत्ता टुभुक लिहल कवनो दोसती भइल? "

"अब का करीं, हरियरी पर मियाजे लुसफुसा जाला "

"आरे, तें त' हमरा भइयो कहऽतारिस आ भट्ठो बइठावे लगलिस ?"

धीरे-धीरे बकरियो बात मान लिहलख मोटा-मोटी। लतिया पसरत-पसरत छान्हीं पर चढ़े लागल।फड़ो बतिया गइल, बतिया जुआ गइल। कोंहड़ा लमहर होए लागल। बहुत दिन बितला पर बकरिया के मोन फेर लुसफुसाइल। सोचलख, कोंहड़वा बिसर गइल होइ ओकर सैतानी। मवका निकाल बगलमें लकड़ीके बोटा पर दुन्नू अगिला टंगरी चढ़ा मूड़ी डोला लतिया पकड़

घिचिए देलख नू। फेर आफत नेओतिए लेलख ! कहलो गइल बा- "आपन करनी, पार उतरनी " । बकरिअऊके लिखंत पूरा भइल।

कोहड़वा कहलख- "आ , सब त कइली हइस तें..... !"

छान्हीं परके कोंहड़ा डगरत-डगरत गिरिए गइल लद्द दे ,ऊहो बकरिया के पीठिए पर।

बस , अब का ?

बकरिया कहलख - "में ••••!"

◆ ◆ ◆

नक्कू मझव्वी

कइसे खुस रहिहें

जदी भाई - भाई करिहें लड़ाई सखिया
कइसे खुस रहिहें हमनीं के माई सखिया

रही इहे हाल त आफत आई भारी
लूटि लिहें देसवा के दुष्ट दुराचारी
त बोलऽ कहाँ एहमें केकरो भलाई सखिया

बढ़ी तकरार जदी झूरे अझुराई
केहू तलवार केहू गोलिए चलाई
त रोजे खूनवे से अंगना लिपाई सखिया

◆ ◆ ◆

नेहा मिश्रा

काहे बचवा

घर में तनिको नइखे आटा काहे बचवा
मोबाइल में हिक भर डाटा काहे बचवा

कइले बाड़ऽ जी भर भोजन थोड़ा लेटऽ
दुपहरिया में सैर सपाटा काहे बचवा

बाहर से सब दाँत निपोरत बाटे इहवाँ
मन में पसरल बा सन्नाटा काहे बचवा

जेकर मरद ताड़ के जइसन लमहर बाटे
ओकर दुलहिन बहुते नाटा काहे बचवा

शहरी जिनगी के चाहत में पड़के इक दिन
कइलऽ अपने जड़ के टाटा काहे बचवा

अब थाती भी धीरे - धीरे डूबे लागल
कार-बार में हर दिन घाटा काहे बचवा

◆ ◆ ◆

राम नाथ बेख़बर

दू गो गजल

1-

तहसे कई सवाल बा जिनिगी जबाब दऽ।
काहें जियल मुहाल बा जिनिगी जबाब दऽ।

मांगी ना जोति चान के जुगनू से खुश रहीं,
तवनो प ई बवाल बा जिनिगी जबाब दऽ।

दिन भर करे जे' फोन अब मिसकाल ना करे,
ई का तहर कमाल बा जिनिगी जबाब दऽ।

रोशन करे जे' बइठकी आइल आ' चलि गइल,
अब का इहाँ धमाल बा जिनिगी जबाब दऽ।

जइसन निबाह हो गइल तवना के' शुक्रिया,
आगे के' का खयाल बा जिनिगी जबाब दऽ।

हमरे में' रहि के' हमसे' होखे लुकाछिपी,
एतना तहर मजाल बा जिनिगी जबाब दऽ।

शिकवा हजार बा तबो तहरे प हम फिदा,
अइसन कहाँ मिसाल बा जिनिगी जबाब दऽ।

2 -

खत लिखलके खता हो गइल
राज सबका पता हो गइल।

छिपि के चुपके जमावल रहे
सब दही रायता हो गइल।

साथ देबे के' जे जे कहल
वक्त पर लापता हो गइल।

साँच बोलल लिखल के कहो
सोचलो मूर्खता हो गइल।

ना मिली अब ऊ दिल्ली रहे
मानि लीं देवता हो गइल।

जे बुझल ऊ कहल जन्म के
मौत के नेवता हो गइल।

प्रेम में परि के' संगीत' के
पाठ पूजा अता हो गइल।

◆ ◆ ◆

संगीत सुभाष
प्रधान सम्पादक —
'सिरिजन'

भेष-भूषा

ढेर पहिले के ई बात हा। तब भारत गुलाम रहे। ओह घरी अंग्रेजन के राज रहे। रेलगाड़ी के एगो डिब्बा में अंग्रेजन के साथे एगो भारतीय भी बइठन रहन। अंग्रेज लोग उनकर पोशाक देखि के हँसत रहन। धोती - कुर्ता, कोट आ पगड़ी पहिरले ऊ भारतीय आदमी शांत भाव से अपना सीट प बइठन रहन। ओह घरी उनकर ध्यान कवनो दोसरा चीज प टीकल रहे।

अचानक ऊ उठलें आ चिलइलें - "रेलगाड़ी रोकऽ... ! रेलगाड़ी रोकऽ...! एकरा पहिले कि केहू जानि पावो, ऊ रेलगाड़ी के चेन खींच देलें। उनका एह हरकत से अंग्रेजन के बहुत गुस्सा आ गइल। तब ले रेलगाड़ी रूकि गइल। गार्ड दउरि के ओह डिब्बा में आ गइलें। गार्ड गुस्सा में डपटलें, "का तू पागल हो गइल बाड़ऽ...! बिना वजह के ट्रेन रोकल अपराध ह...! ई जानऽतारऽ कि ना...?"

ऊ भारतीय आदमी शांति से जवाब देलें ,"हँ ...! हमरा ई पता बा, बाकिर अगर हम रेलगाड़ी ना रोकतीं त रेलगाड़ी में सवार सैकड़ों लोगन के जान चल जाइत। एइजा से आगा कुछ दूरी प रेल के कुछ पटरी टूटि गइल बा। रउआ खुद जाके देखि आईं।

गार्ड अउर कुछ कहितें, ओकरा पहिले ऊ अंग्रेज उतर के ओह दिशा में जाँच करे चलि गइलें। ऊ लोग देखि के हरान हो गइलें। साँचो ओइजा से कुछ दूर आगे पटरी टूटि गइल रहे। ओइजा के नट-बोल्ट सब खुलल रहे। तब ऊ ओह भारतीय आदमी से पूछलें, "तोहरा ई कइसे पता चलल हऽ...?"

भारतीय सज्जन जबाब देलें "रेलगाड़ी के चाल धीमा होते हमार ध्यान ओकरा गति पर केंद्रित हो गइल हा। अचानक पटरी के कँपला के कारण एकरा गति में फेर-बदल आइल। आ ई तबे होला जब कुछ आगे के दूरी पर पटरी टूटि जाला...! ओह सज्जन के बतकही सुनि रेलगाड़ी के गार्ड, अंग्रेज लोग आ जात्री चिहा गइलें...।

तब गार्ड कहलें, "बहुत नीमन तकनीकी ज्ञान...! रउआ कवनो साधारण आदमी नइखीं लागत।किरिपा करि के आपन परिचय बताईं...!"

ऊ सज्जन आदमी विनम्रता से बतवनीं ,"हम एगो भारतीय इंजीनियर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया हईं।"

ओह विद्वान महापुरुष के जबाब सुनि अंग्रेज लोग के मुँह बवा गइल। करेजा पत्थल हो गइल...।

कवनो आदमी के भेष-भूषा आ रंग-रूप से ना, उनका ज्ञान से मूल्यांकन करे के चाहीं...।

◆ ◆ ◆

ऋषिदेव

आरा (बिहार)

बसेला परनवा

भाषा भोजपुरिए में बसेला परनवा,
हवे इहो देशवा के शान जी,
भाई लोग बोलेलें जे भाषा भोजपुरिए में,
हउएँ ऊ वीर जवान जी।
माटी के ई बोली हवे,
हिया से लगाईं ना
एकरा महानता के
मीठे मीठे गाईं ना,
हवे इ कबीर आ भिखारी जी
के भासा नींक
बसे भोजपुरी में परान जी।

एक पर एक भोजपुरिया में
लाल बाड़ें
वीर कुंवर जी के एही मे बखान बा
मिसरी से मीठ हवे भासा भोजपुरी मोर
भोजपुरी भाई के एही में आन बान बा।
भोजपुरी मटिया के मनई ईमानदार
होले मेहनतिया किसान जी।
बाबा महेन्द्र जी के तान हवे पुरबी के
एही में भिखारी के विदेशिया के गान बा
एही में बटोहिया सहाय रघुबीर के बा
एही में गोताइल बाटे देशवा के शान बा
पुरबी आ कजरी भा
फगुआ एही में बाटे
गावे लोग भरी के गुमान जी।
मैथिली भोजपुरी अकादमी के कमाल देखीं
साल में होला एकर हरदम जलसा,
मिली संविधान में जवन दिने मान्यता
पूरा तबे होई भोजपुरियन के सपना
बड़का लड़ाई भोजपुरी के बा भारी भाई
एही में बसल मोर जान जी

◆ ◆ ◆

भिखारी ठाकुर जी पर गीत

सबके अरमनवा हवें,
जनता के धड़कनवा हवें,
भोजपुरी के शनवा हवें,
बाबा हो भिखारी हमर बड़का रतनवा हवें।

सबके अरमनवा हवे,
भोजपुरी के खजनवा हवे,
शोषित, वंचित, पीड़ित, दमित, सबके अवजवा हवें,
बाबा हो भिखारी हमर बड़का रतनवा हवें।

लिख दिहलें बिदेशिया के,
भाई विरोध बेटी बेचवा के,
कलजुग में प्रेम कइसे गंगा असननवा से,
बाबा हो भिखारी हमर बड़का रतनवा हवें।

सामाजिक चेतना के,
जन में संचार कइलें,
देशज आधुनिकता के इहे अग्रदूत हवें,
बाबा हो भिखारी हमर बड़का रतनवा हवें।

नाही चाहीं सोना चानी,
नाही चाहीं हीरा मोती,
नाहीं हो खजनवा चाहीं भारत रतनवा चाहीं
बाबा हो भिखारी हमर बड़का रतनवा हवें।

इहे अभिलाषा बाटे,
भारत रतनवा दे दऽ,
इनके सम्मनवा दे दऽ,
बाबा हो भिखारी हमर बड़का रतनवा हवें।
बाबा हो भिखारी हमर भोजपुरी के शनवा हवें।

◆ ◆ ◆

डा.पुष्कर कुमार
हैदरपुर, दिल्ली।

नीमन बाउर मिलके

नीमन बाउर मिलके निबहते नू बा
आग ई दरद जियरा के सुलगते नू बा

सब चलो पर जब केहू कुछ ना बतावे
त जिनगी के हर पल दहकते नू बा।

गाँव नगरिया के हाल एके बाटे
दुनू ओरिया आदमी मुरझाइल बाटे
अब केकरा से के बतिआवत बाटे
भरम में परल जिंदगी बेहाल होखऽताटे
अइसन अकाल में मनवा सोचते नू बा
दूर बिछुरल केहू के मन परते नू बा।

पइसा बजार आउर पढ़ाई के का हाल भइल
सब कोई फरका भइल बगियो कटा गइल
खेत बधरिया बकरिया बेंचा गइल
तबहूँ ना मानल लोगवा मतरिओ बँटा गइल
सबकुछ गँवा के पीड़ा सहते नू बा
गंगाजी के पनिया रोज बहते नू बा।

अँखिया के लोर पोंछि कंठवा रुधा गइल
कइसन ई आँधी हवे सब कुछ बुता गइल
जेकरा के पलनीं पोसनीं उहो भुला गइल
अन्हरिया रात में भकजोन्हयो ना लउके
त अछइत ई धरती धनकते नू बा
पथराइल ई अँखिया पिघलते नू बा।

डेहरी के अन्न सब जाड़े में ओरा गइल
कुआरे में का कहीं गइयो बिसुक गइल
दही दूध कहाँ अब मट्ठो दुलम भइल
दुअरा आँगन के हाल बदलते नू बा
केहू के ख़ातिर मनवा छछनते नू बा
निमन बाउर मिलके निबहते नू बा ।

◆ ◆ ◆

जीवन सिंह।

सबकुछ भेजाल बा

भीतरी से सड़ल बा, बहरी से लाल बा
आज के ई जुगवा में सबकुछ भेजाल बा

चाऊर में प्लास्टिक बा
साबुन में कास्टिक बा
दुधवो बनल अब त बचवन के काल बा
आज के ई जुगवा में सबकुछ भेजाल बा

रंग डाल के आवता अब त तरबूजा
इंजेक्शन से मुर्गी नियर बन जाता चूजा
केहू ना बाची जी अइसन जंजाल बा
आज के ई जुगवा में सबकुछ भेजाल बा

का होई आखिर में अइसन कमाई
कतनो कमा के जी खनवे त खाई
आन्हर ई दौर के बड़का सवाल बा
आज के ई युगवा सबकुछ भेजाल बा

◆◆◆

नवीन कुमार सिंह

फेसबुक : स्थापित लेखक, फेसबुकिया लेखक बनाम पाठक

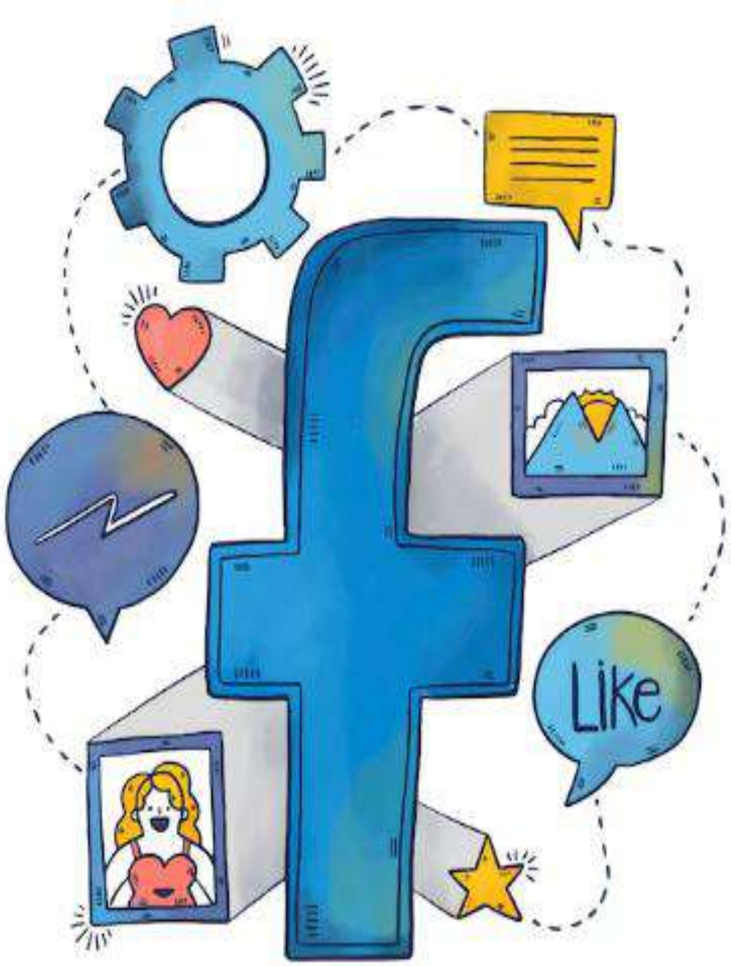

क्षेत्र चाहे जवन होखे, आदर्श स्थिति के कल्पने कइल जा सकता। आदर्श स्थिति कबो ना आवेला, एहसे आदर्श के क्लाइमेक्स हमेशा हमनीं के सभके ओकरा ओर आकर्षित करेला। लेकिन क्लाइमेक्स तक पहुँचल शायद असंभव बा। एगो बात आजुकाल्हु बहुते जोर से कहल जा रहल बा कि अब पाठक नइखे, सभे लेखक बन गइल बा. भले अइसन होखे कि पाठक लोग भी लेखक बने के चाहत होखे, भले फेसबुक होखे, हमरा नजर में एह में कवनो गलती नइखे, एह से साहित्य के विस्तार ही होई। कबो-कबो हमनीं के अपना गुण से अवगत ना होखेला। अइसन प्रयास से कुछ पाठक लोग के लेखक / लेखक बने के मौका मिलेला। फेसबुक एगो सोशल मीडिया ह। जहाँ हमनीं के आपन भावना आ मानसिक विचार के अपना दीवार पर व्यक्त करेनीं जा। तबे फेसबुक खुलेला आ पूछेला "तोहरा दिमाग में का बा?" फेसबुक खाली लेखक/लेखक खातिर बनावल गइल ऐप भा प्लेटफार्म ना ह. स्थापित लेखक, फेसबुक के लेखक भा हमरा जइसन कई गो तथाकथित लेखक फेसबुक के इस्तेमाल अपना फायदा खातिर करेलें. जहाँ तक वाह वाह भा आहह के सवाल बा त हमनीं के हर कहानी कविता भा दोसरा रचना पर आपन निजी राय दे सकेनीं जा आ फेसबुक दोस्त का रूप में रचना पर भी आपन सुझाव देत बानीं जा, रिजेक्ट करे के अधिकार खाली पाठक के ह. जागरूक रहीं! जब भी हम अपना से कम लेखक के रचना पर आपन विचार देत बानीं त कहत बानीं कि ई

कवनो पाठक के टिप्पणी ह. असल में अइसन ना होला, रउरा आ हमनीं का अपना लेखन का आधार पर उनुका रचना के परीक्षण करीं जा. एह से जवन कुछ लिखल गइल बा, चाहे ऊ कतनो कमजोर होखे, एगो लेखक / लेखक के रूप में ओकरा के कचरा कहल एकदम गलत बा. काहे कि कवनो रचनाकार के कलम से निकले वाला हर रचना बेजोड़ ना हो सके. लेकिन फेसबुक प जवन भी रचना के रूप में लिखल जाला, ऊ के तय करी कि ऊ केतना स्तर के बा?

फेसबुक पर मिले वाला लाइक? , टिप्पणी के संख्या बा ? भा देश के कुछ स्थापित पत्रिका उनकर रचना प्रकाशित करत बाड़ी सँ, भा अगर रचना के किताब के आकार दिहल गइल बा त बिक्री के संख्या भा कुछ स्थापित पुरस्कार? बिल्कुल ना, ई अधिकार खाली आ खाली समय के बा।

काहे कि आजु का केहू धमाका से कह सकेला कि प्रकाशक आ रचनाकार किताबन के बिक्री बढ़ावे खातिर कवनो बिक्री के रणनीति ना अपनावेलें, भा स्थापित पुरस्कार बेहद ईमानदारी से दिहल जाला कि स्थापित पत्रिका में लिखल रचना लिंक से ना छापल जाला बिल्कुल भी बा। बाकिर अगर ई सब जायज बा त अगर कुछ नवोदित लोग आपन रचना के साधारण अखबार आ पत्रिका में प्रकाशन खातिर भेज रहल बा आ साधारण अखबार के पत्रिका ओह लोग के नवोदित के तुलनात्मक रूप से कमजोर रचना प्रकाशित कर के प्रोत्साहित कर रहल बा भा कहल जाव कि ओह लोग के सीखला के मौका देत बा.. अगर भइल बा been, तब कवनो स्थापित लेखक के कवनो आपत्ति ना होखे के चाहीं, बलुक खुश होखे के चाहीं काहे कि साहित्य के नया पौधा एहिजा से तइयार हो जाई आ तब ई निश्चित रूप से समय तय करी कि केकर लेखन अतना सार्थक हो गइल. देश के बड़का पत्रिका में स्थापित साहित्यकारन के तलाश बा. फेसबुक पर लिखे वाला लेखकन के भी उहे सपना हो सकेला कि ऊ लोग भी मशहूर आ स्थापित पत्रिका में प्रकाशित हो जाला आ तब साहित्य एगो अइसन सफर ह जहाँ हमनी के धीरे-धीरे सीखत बानीं जा आ लिखे के आगे बढ़ेनीं जा, अइसन स्थिति में फेसबुक के लेखक आपन कलम खाली एही से ढँक लेला कि सो रोक नइखे पावत कि उनकर रचना बासी बा भा ओहमें कुछ वर्तनी के दोष बा. वर्तनी के दोष से ना त विचार मरेला ना भावना, हँ! लिखत घरी अपना के सुधारल निश्चित रूप से एगो सकारात्मक प्रक्रिया ह आ अइसन प्रक्रिया से गुजरला के बाद ही फेसबुक के लेखक लेखक बने के सपना पूरा कर सकेला आ काल्ह फेसबुक पर लिखे वाला लेखक / लेखक भी स्थापित लोग में से एगो बन जाला ना होई आश्चर्यचकित होखे के चाहीं. आजुओ अइसन कई गो उदाहरण बा जवन फेसबुक से शुरू भइल बाकिर आजु ऊ साहित्य के प्रतिष्ठित नाम पर शुभ बा.

◆ ◆ ◆

अमित कुमार अम्बष्ट "आमिली"

नाही सोना के पानी चले

हीरा मोती ना चानी चले
नाही सोना के पानी चले
देखीं आज गली-गली मे
टेंशन के प्रधानी चले
मोह -छोह उफर पड़ल
नफरत के आन्ही चले
हाथ मे आ'सेर खर्ची लेके
बड़का-बड़का दानी चले
केतना सहीं घाव उनकर
पीठ-पीछे रोज बानी चले
का कहल जाव जुग के
समय बड़ा उतानी चले
साँचो अपना बस मे कहाँ
जब बाउर हवा पानी चले
बताईं ना रउवा देख रेख मे
केतना राउर जनानी चले
देखीं ना अब अन्हरन मे
आगे- आगे कानी चले
चार दिन के उमिर लेके
आदमी सीना तानी चले

◆◆◆

शम्श जमील
दुबई से

साँचे बात लिखाइल बा

रोज लेखा हमारा कलम से
बुला साँचे बात लिखाइल बा
लिखले बानीं उहे बतिया
हमरा जवन बुझाइल बा
माफ करब एगो छोट मुँह से
कुछ बड़ बात कहाइल बा
असहीं भोजपुरी में नइखीं लिखले
खूब लासा कुटाइल बा
काल्हुवे भोजपुरिया के दाना खइनीं
तबे आज लिखाइल बा
केहू बजावे डंका आपन
केहू के ढढ़ पिटाइल बा
रील बनावे वाला जुग में
रियल लोग हेराइल बा
फर्जी लो के बोलबाला बा
असली लोग भुलाइल बा
एक दूसरा के पीठ ठोक के
नेता लोग कहाइल बा
कतहीं लागत फर्जी बैनर
फर्जी सम्मान बटाइल बा
योग्य लोग बा पीछे बइठल
भीड़ के बीच हेराईल बा
देखि के ई कुल हाल शिवम् के
अखियाँ आज लोराइल बा

◆ ◆ ◆

शिवम तिवारी

अलख जगावे भोजपुरी के

जे घर में बोले दूसर भाषा,
ऊ अलख जगावे भोजपुरी के।
लिखे-पढ़े में लाज लागे,
मांग करे भोजपुरी के।
बुझाते नइखे अइसे कइसे,
मान्यता मिली भोजपुरी के।
सुनीं ए आपन भोजपुरिया भाई,
शिवम् कहे ले माथ नवाई।
पहिले आपन भोजपुरिया के,
सुख-दुख में जा के साथ निभाईं।
आवे जो कवनो बिपत्ति त,
ओकरा साथे खड़ा हो जाईं।
मिलीं-जुलीं एक दूसरा से,
आपस में व्यवहार बनाईं।
घर में रहीं भा बाहर जाईं,
मिले जो कवनो भोजपुरिया त,
अपने भाखा में बतियाईं।
भोजपुरिया जब एक हो जइहें,
मन के आपन भेद मिटइहें।
तबे जाके भोजपुरी के,
दुनियाँ में झंडा लहराई।
निहोरा बाटे इहे शिवम् के,
कहस आपन माथ नवाई।

◆ ◆ ◆

राउर बाती पिया

रउवा दीया हम राउर बाती पिया

सातो जनम के हम संघाती पिया

हम चंदा रउवा हमरी चकोर पिया

चमकत रहीं बनके अँजोर पिया

हर जनम में साथ निभइहऽ पिया

हम रूठीं त हमके मनइहऽ पिया

रउवा फुल हम राउर पाती पिया

रउवा ऑंखिन के हम ज्योती पिया

ना छोड़िहऽ हमरी दामन पिया

बन के रहबि जीवन साथी पिया

रउवा माथे के हमरी बिंदिया पिया

हमरी अँखियाँ के रउवे निनिया पिया

असहीं बनल रहे हमरी जोड़ी पिया

रउवा दीया हम तोहरी बाती पिया

◆◆◆

किरन शर्मा

कलकता

शांति

शांति स्थापना बनावे खातिर,

अब साँचो युद्ध होखे चाहीं.....

आँच जदि आ जाव आन पर,

अंगुरी उठि जाव स्वाभिमान पर

अधमुवल लोगवो जदि,

चढ़ि आवे तोहरा दुआर पर

तोहरा सुनर व्यवहार के...

तोहरा सरल सुभाव के,

समझे केहू जब बुजदिली

तोहरा अधर के चुप्पी के

समझे केहू जदि कमजोरी!!

तब हिम से शीतल हिया के

क्रुद्ध होखे के चाहीं......

शांति स्थापना बनावे खातिर...

अब साँचो युद्ध होखे के चाहीं....।

◆ ◆ ◆

आरती भारती

नया साल

चइत नवमी में नया साल

सृष्टि के रचना बसंत बेयार

बइसाखे में पुण्य जलदान

गमागम गर्मी जेठ के शान

पंखा ,सतुआ करीं दान

पुरुआ के समझीं एहसान

आसमान के होखे तकनी

मास असाढ़े देव बरसनी

हरिहर हरिहर सावन मासे

फूल पतइया खुशी से नाचे

भादो में भक्ति के उत्सव

कृष्ण कन्हइया जन्म के उत्सव

अश्विन में नवरात के जोत

भक्ति भाव के होखे योग

कार्तिक मासे गोवर्धन के

छठ, दीपदान जल कुंजल में

अगहन हवे सुंदर मास

माहे पुष तप, दान, नहान

◆◆◆

गुड़िया शुक्ला

तोहरा से

नेहिया के डोरिया से बान्हि के रखनीं।

मन में बसऽवनीं हो तोहरा के।

अस लागल तोहसे प्रीत हो साजन।

बिसरे ना याद कबो तोहरा से।

सुख-दुख हर घड़ी साथ निभऽवनीं ।

काँच पाकल जवन भइल साथ मिल खइनीं।

जनम जनम के बान्हल नेहिया ।

हरदम पवनी हो तोहरा से।

अस लागल तोहसे प्रीत हो साजन।

बिसरे ना याद कबो तोहरा से।

मन जब उदास भइल मन के बढ़ऽवनीं।

लागे जब ठोकर त हमके बचऽवनीं।

पतझड़ जिनिगी में फूल खिलल,

देखनीं बहार मिलल तोहरा से।

अस लागल तोहसे प्रीत हो साजन।

बिसरे ना याद कबो तोहरा से।

◆ ◆ ◆

माया चौबे

तिनसुकिया असम

लोक देवी से लोक वाहिका : भोजपुरी लोक में नारी के सांस्कृतिक यात्रा

भारतीय लोकजीवन, खास क के भोजपुरी अंचल में नारी के उपस्थिति खाली सरधा के विषय ना, बलुक लोक-संस्कृति के जीवंत चेतना ह। इहवाँ नारी के पहचान देवी आ मानव, आस्था आ श्रम, पूजा आ परंपरा संस्कृति आ समाज सब के मध्य से होके जाला। लोक देवी से लोक वाहिका तक के ई जात्रा भोजपुरी लोक में नारी के सांस्कृतिक महत्ता के रेखांकित करेला।

भोजपुरी समाज में शीतल मइया, काली मइया, ग्राम देवी, बन देवी , सतबहिनी, सायर , बंदी, बिघिन, कुँवरदेबी, चमरदेबी, सती जइसन लोक देवु जन-आस्था के केंद्र रहल बाड़ी। ई देवी खाली धार्मिक प्रतीक ना, बलुक लोकजीवन के भय, रोग, प्राकृतिक आपदा आ सामाजिक संकटन से रक्षा करे वाली शक्ति मानल जाली । लोकमानस में देवी के स्वरूप ममता आ भय दुनो भाव से संयुक्त बा।

एह लोक देवियन के पूजा, व्रत आ अनुष्ठानन में नारी के भूमिका केंद्रीय बा। नारी इहवाँ देवी के आराधिका ही ना, बलुक समाज के सामूहिक चिंता आ कामना के अभिव्यक्तिकर्ता बन जाली। एह स्तर प स्त्री दैवीय शक्ति के मानवीय स्वरूप बनके सोझा आवेली।

लोक देवी के दैवीय स्वरूप से आगे बढ़ि के नारी लोक वाहिका के रूप में दिखाई देवेली। भोजपुरी लोक-संस्कृति में लोकगीत, लोककथा, व्रत-परंपरा आ संस्कारन के संरक्षण स्त्री के कंठ आ स्मृति के माध्यम से ही संभव बा।

सोहर, संस्कार गीत, कजरी, चइता, फगुआ, झूमर, हरफौरी, सोराठी, बिरहनी, बारहमासा, जतसार जइसन सभे गीत नारी के स्वर से निकल के लोक के सामूहिक चेतना के हिस्सा बनेला।

माई , ईया, नानी, काकी के माध्यम से लोक के इतिहास, जीवन-दर्शन आ संवेदना पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित होत रहल बिया। लिखित ग्रंथन से पूर्व स्त्री के वाणी ही लोक-संस्कृति के सबसे बड़हन अभिलेख रहे।

भोजपुरी समाज में नारी लोक-संस्कृति के खाली गावत भा सुनावत ना रहेली, बलुक ओकरा के जिएली। घर के आँगन, खेत-खरिहान, पर्व-त्योहार आ सामूहिक श्रम सभे स्थानन प लोक स्त्री के कर्म से आकार पावेला।

रोपनी, कटनी गीत आ पर्वीय अनुष्ठान लोक-संस्कृति के व्यवहारिक धरातल प्रदान करेले।

लोक वाहिका नारी परंपरा के जड़ ना बने देवेली। ऊ समय आ परिस्थिति के अनुसार लोक के ढालेली, ओहमें नया अर्थ जोड़ेली आ ओकरा के जीवंत बनवले राखेली।

भोजपुरी लोक में नारी के ई द्वैत- देवी आ वाहिका विरोध ना, बलुक संतुलन के प्रतीक बा। पूजा में ऊ आराध्य बाड़ी, त दैनिक जीवन में लोक-संस्कृति के धुरी। ईहे समन्वय भोजपुरी लोक-संस्कृति के विशिष्ट पहचान ह।

आधुनिकता आ तकनीकी परिवर्तन के बावजूद भोजपुरी लोक-संस्कृति आजो नारी के माध्यम से जीवित बा । लोक-पुनरुत्थान के प्रयास आ डिजिटल माध्यम प भी नारी लोक वाहिका के भूमिका निभा रहल बाड़ी । ऊ परंपरा आ आधुनिकता के बीच सेतु बनके लोक के नया संदर्भ में पुनर्स्थापित क रहल बाड़ी ।

भोजपुरी लोक में नारी के जात्रा लोक देवी से लोक वाहिका तक विस्तृत आ सार्थक बा। ऊ लोक के आराध्यो बाड़ी आ लोक के संवाहको बाड़ी। नारी के बिना लोक-संस्कृति के कल्पना अधूरा बा, काहे की लोक के स्मृति, स्वर आ संवेदना ओही के माध्यम से प्रवाहित होखेला।

◆◆◆

राज नंदिनी

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।

रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।

एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।

राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।

आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।

रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।

रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ फोटो ब्यक्तिगत ना होखे ।

◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

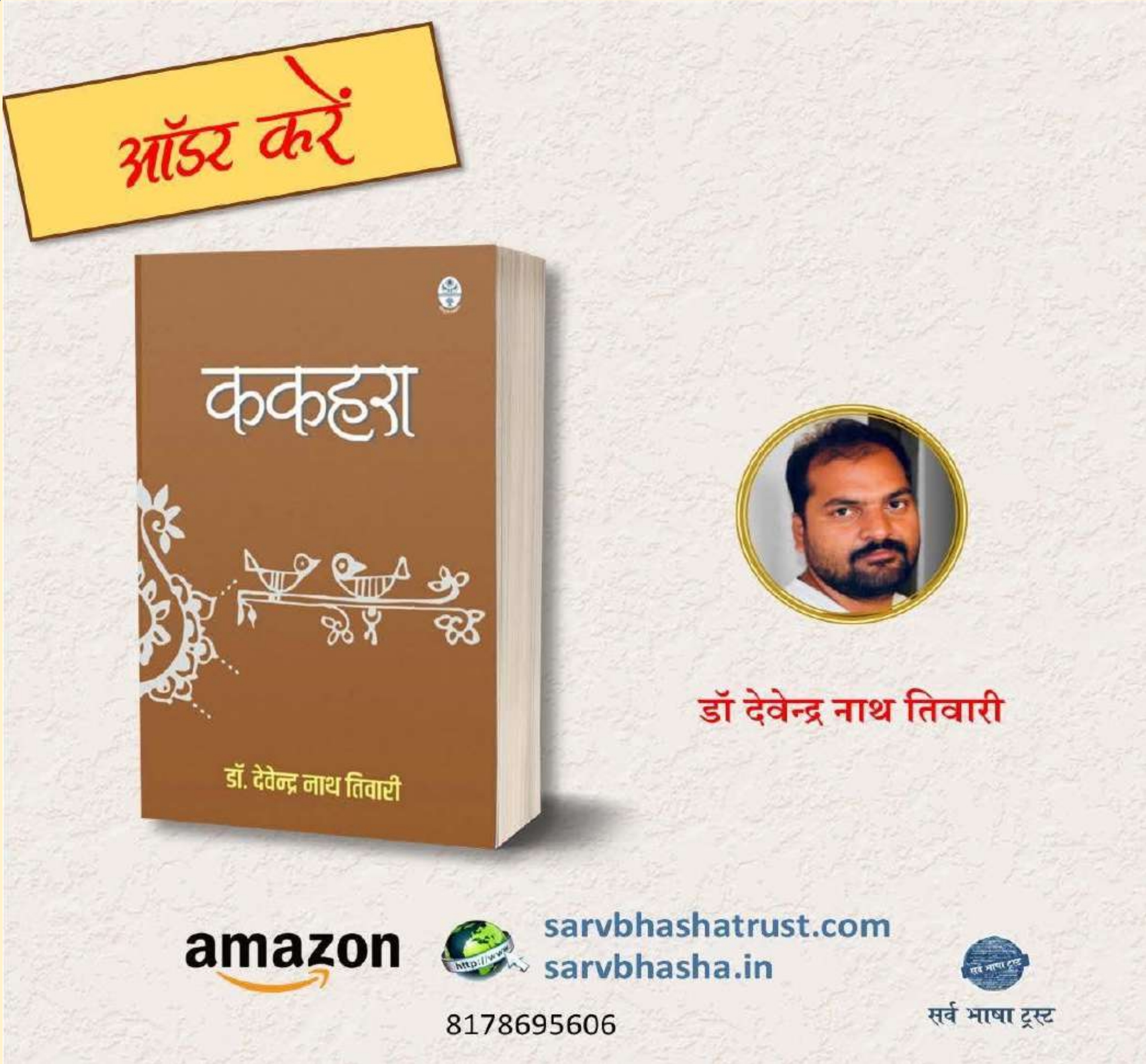

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, सरंक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण तारा डॉ देवेन्द्र नाथ तिवारी जी के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।